ISSN : 2231-0509
वर्ष 23/अंक 2/मार्च-अप्रैल, 2021

शिक्षा विमर्श

शैक्षिक चिंतन एवं संवाद की पत्रिका

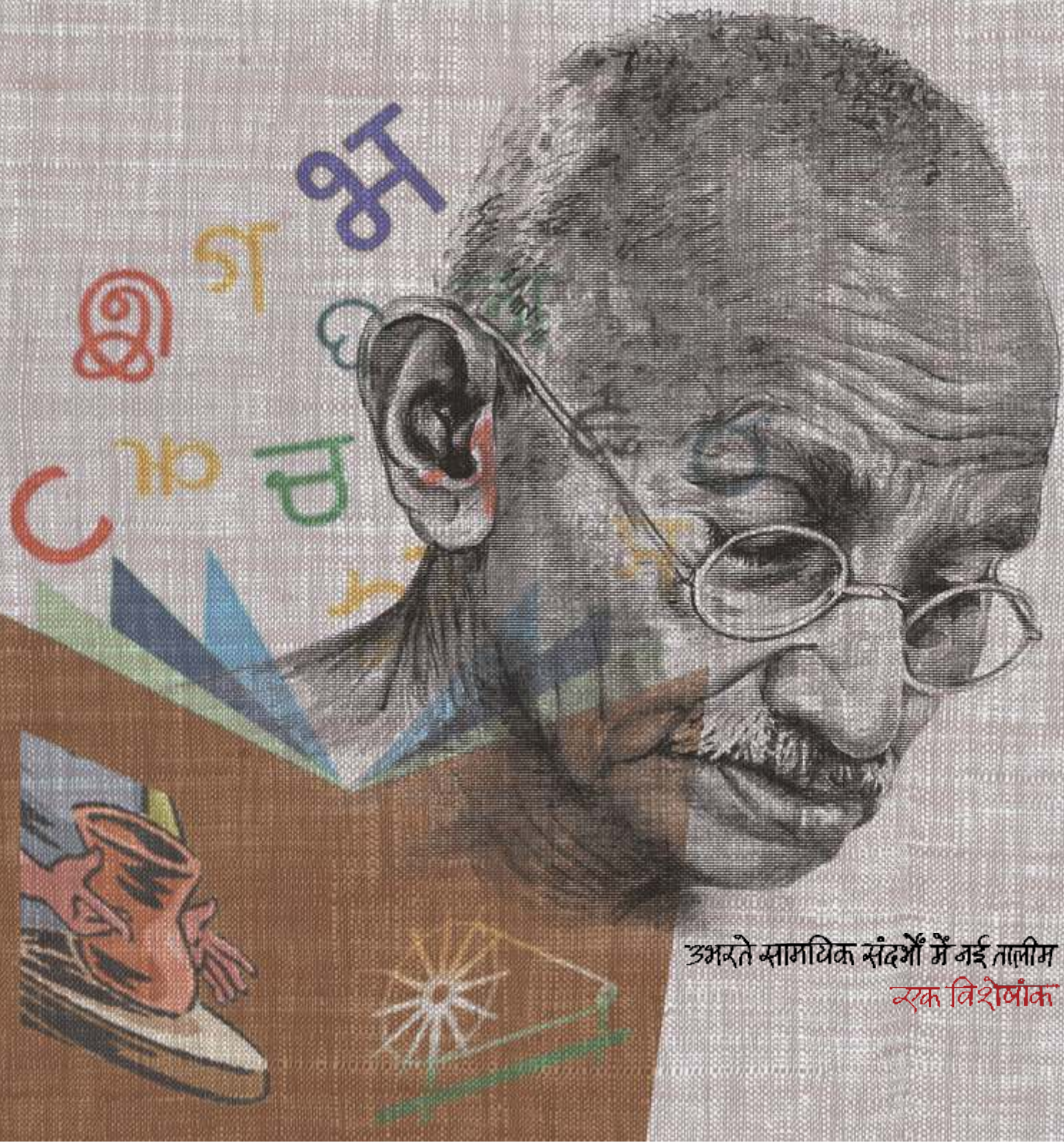

बदलते सामयिक संदर्भों में नई तालीम

एक विशेषांक

शिक्षा विमर्श

शैक्षिक चिंतन एवं संवाद की पत्रिका

वर्ष 23/अंक 2/मार्च-अप्रैल, 2021

प्रधान संपादक रोहित धनकर
संपादक कुलदीप गर्ग
अतिथि संपादक पल्लवी वर्मा पाटिल
प्रबंधक रीना दास
कला पक्ष रामकिशन अडिग
प्रसार व प्रकाशन प्रबंधन ख्यालीराम स्वामी

संपर्क
शिक्षा विमर्श
दिगन्तर, खो नागोरियान रोड,
जगतपुरा, जयपुर-302017 राजस्थान
फोन : (0141) 2750310
मोबाईल नं. 9214181380 (प्रसार प्रबंधक)
ई मेल: shikshavimarsh@digantar.org
वेबसाइट: www.digantar.org

इस अंक का मूल्य
₹ 80 (व्यक्तिगत) | ₹ 120 (संस्थागत)

सदस्यता राशि

	व्यक्तिगत	संस्थागत
एक प्रति	55	80
वार्षिक	**300**	**450**
द्वि-वर्षीय	550	850
तीन-वर्षीय	750	1200
आजीवन	3000	4500

(रजिस्टर्ड डाक से मंगवाने के लिए प्रतिवर्ष 100 रुपये अतिरिक्त भिजवाएं)

ऑनलाईन राशि भेजने के लिए www.digantar.org देखें

'शिक्षा विमर्श' के लिए सभी भुगतान 'दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति, जयपुर' (Digantar Shiksha Evam Khelkud Samiti, Jaipur) के नाम देय मनीऑर्डर, डिमांड ड्राफ्ट अथवा चैक द्वारा किया जाए।

इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के हैं।
दिगन्तर की इन विचारों से सहमति हो यह जरूरी नहीं है।

दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति, जयपुर के लिए सुश्री रीना दास द्वारा भालोटिया प्रिन्टर्स, 1/398 पारीक कॉलेज रोड, जयपुर-302006 से मुद्रित एवं दिगन्तर, खो नागोरियान रोड, जगतपुरा, जयपुर-302017 से प्रकाशित

अनुक्रम

संपादकीय 3

लेख

अब आ गए गाँधीजी के दिन 6
❑ डॉ. सुजीत सिन्हा

'नई तालीम' के सामयिक तथा विचारात्मक संदर्भ 10
❑ अनिल सेठी

स्कूल बागवानी : गाँधी के संदेश की संभाव्यता की तलाश 18
❑ लौरा कोलुसी-ग्रे, एलेना कैमिनो और डोनाल्ड ग्रे

ज़ापातिस्ता - एक अनोखे समाज की गाँधीवादी शिक्षा 24
❑ कृति गुप्ता और पल्लवी वर्मा पाटिल

चम्पारण में बुनियादी शिक्षा की पुनर्कल्पना 29
❑ अदिति ठाकुर और शंकर पूर्बे

जल की शिक्षा : कर्नाटक के सरकारी विद्यालयों में जल संरक्षण के प्रयासों का अनुभव 36
❑ अदिति हस्तक

मरुदम में प्रकृति से सीखना : एक शिक्षक का अनुभव 40
❑ ध्रुव देसाई

किशोरों के जीवन में संवैधानिक साक्षरता 43
❑ नवेंदु मिश्र, गौरव जायसवाल और शिरीष कुमार

स्वराज की दिशा में भविष्य के शिक्षक 50
❑ पल्लवी वर्मा पाटिल एवं रोशनी रवि

गोबर गैस संयंत्र से शिक्षा : आधारशिला लर्निंग सेंटर में नई तालीम के प्रयोग का एक अनुभव 59
❑ डॉ. क्रिसटियन कैसिलस

साक्षात्कार

आनन्द निकेतन : नई तालीम का एक प्रयोग 63
❑ सुषमा शर्मा से ऋषभ कुमार मिश्र की बातचीत

अनुभव

तालाबंदी के दौरान आनंद निकेतन के शैक्षिक प्रयास 67
❑ शरद एस. ताकसाडे और तृप्ति कोकाटे

मुख्य और अंतिम आवरण रेखांकन : रामकिशन अडिग

संपादकीय

नई तालीम पर शिक्षा विमर्श के इस विशेषांक को आपके सामने रखते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। यह विशेषांक स्वराज और उससे जुड़ी शिक्षा - नई तालीम - के बारे में पाठकों को, एक नए दृष्टिकोण से अवगत कराता है।

एक खास ढंग से, वर्तमान और पिछला वर्ष औद्योगिक सभ्यता की विफलता के विषादपूर्ण परिप्रेक्ष्य को हमारे सामने उजागर कर रहा है। 1945 में महात्मा गाँधी ने जवाहरलाल नेहरू को लिखा, ''... ये हो सकता है कि भारत भी; एक पतंगे की तरह, जो आग में गिरकर मरने के पहले, आग के चारों ओर और भी तेजी से घूमने लगता है, मर जाएगा; मेरा तो कर्तव्य है कि भारत की ऐसे ध्वंश से रक्षा करना और भारत के ज़रिये पूरी पृथ्वी को बचाना।''

आज की वर्तमान चुनौतियाँ गाँधी जी के उस लौकिक पतंगे की याद दिलाती हैं और ऐसा लगता है कि हम सब ध्वंश होने से पहले एक आख़िरी ख़तरनाक खेल खेल रहे हैं।

आज का अनवरत चल रहा जलवायु संकट; वायुमंडलीय कार्बनडाइऑक्साइड का लगातार बढ़ता स्तर, भारत और एशिया के अन्य भागों में हाल ही में आई बाढ़ें; ऑस्ट्रेलिया, कैलिफोर्निया और साइबेरिया के जंगलों में लगी आग; अफ्रीका और एशिया में टिड्डियों का प्रकोप; आर्कटिक और कनाडा में अत्यधिक गरम लपटों का चलना; और इन सबके साथ-साथ असमानता और ग़रीबी के संकट; बढ़ता हुआ शरणार्थी संकट, और बहुत सारे स्तरों पर बढ़ती हुई हिंसा और अन्याय को अपने सामने घटित होता हुआ देख रहे हैं।

कई स्तरों पर हो रहे इस विनाश ने गाँधीजी की अच्छे समाज की वैकल्पिक संकल्पना यानी स्वराज की ओर पुनः हमारा ध्यान खींचा है। कोविड-19 की महामारी के दौरान यदि कुछ भी अच्छा है, तो यह है कि- स्वराज को प्राप्त करने का जो लक्ष्य असंभव-सा प्रतीत होता था वह अब इतना कठिन भी नहीं जान पड़ता। उदाहरण के लिए, हम यह समझ रहे हैं कि हम सीमित संसाधनों के साथ भी अच्छे से गुज़ारा कर सकते हैं; स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं पर भरोसा कर सकते हैं; पारस्परिक सौहार्द और नए प्रकार के कौशल और मूल्यों पर विचार कर सकते हैं - जैसे अपनी ज़रूरत के कुछ खाद्य पदार्थों का उत्पादन स्वयं करने या जीवन की गुणवत्ता को पैसे कमाने की होड़ से ऊपर रखने पर ध्यान केंद्रित करना। इस महामारी के कारण हमारे जीवन में एक ठहराव आने के पहले से ही संसार में आ रही विपत्तियों से जूझने के लिए दुनिया भर में जिस तरह के कदम उठाए जा रहे थे, आंदोलन और अन्य तरीक़े काम में लिए जा रहे थे, उन्हें एक तरह से स्वराज की स्थापना के लिए आवश्यक संघर्ष की तरह से देखा जा सकता है।

इनमें डी-ग्रोथ[1], सर्कुलर इकोनॉमी[2], डीप इकोलॉजी[3] जैसी संकल्पनाएं और 'इंटेन्शनल इको कम्युनिटीज़', 'फूड सोविरनिटी मूवमेंट्स', 'पर्माकल्चर मूवमेंट्स', 'पार्टिसिपेटरी बजटिंग' जैसे प्रयास और युवा आंदोलन जैसे 'फ्राइडे फॉर फ्यूचर' और 'एक्सटिंक्शन रेबेलियन' कुछ प्रयास हैं।

20वीं शताब्दी के उद्योगवाद की पुरानी रीत - जिसमें भौतिक वस्तुओं के अत्यधिक उत्पादन और प्रकृति के दोहन के बीच गहन पारस्परिक संबंध है, को धरती की क्षमताओं को तहस-नहस किए बिना और लंबे समय तक बनाए रखना असंभव है। इस व्यवस्था को अभी तक आधुनिक राष्ट्र-राज्य, आधुनिक शिक्षा के माध्यम से, और विकसित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के द्वारा प्रोत्साहित करते रहे हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि न केवल उद्योगवाद बल्कि इससे उपजे संस्थानों का सामना किया जाए। इसी संदर्भ में सुजीत सिन्हा का आलेख हम पाठकों को इस बिखराव के आपस में गहराई से जुड़े परिदृश्यों और उनके गाँधीवादी विकल्पों की कल्पना करने के लिए प्रेरित करता है। उदाहरण के लिए, जीवाश्म ईंधन की पर्याप्त आपूर्ति के बिना महानगरों को सुचारू रूप से चलाना संभव नहीं होगा। काम करने के तरीकों में निश्चित तौर पर बदलाव आएगा। और यह परिवर्तन स्वाभाविक रूप से वर्तमान स्थिति और शिक्षा की प्रकृति के साथ ही इससे जुड़ी प्रणालियों में बदलाव की माँग करेगा।

यहाँ तक कि गाँधीजी ने जब पहली बार नई तालीम की रूपरेखा दी, तो उन्होंने उसे मौन क्रांति के वाहक; युवाओं को समाज को बदलने के दृष्टिकोण के अनुरूप ढालने के एक साधन के तौर पर देखा था।

कनकमल गाँधी, इस भाव को उकेरते हुए लिखते हैं कि, ''महात्मा गाँधी ने जिस नई तालीम की परिकल्पना की थी वह उनके सपनों के भारत और एक अच्छे समाज की कल्पना का एक अभिन्न अंग है... यदि हम समाज के बारे में अपने मौजूदा विचारों और धारणाओं के हिसाब से नई तालीम को व्याख्यायित करने का प्रयास करते हैं, तो यह तय है कि हमें कठिनाई होगी।[4]''

अनिल सेठी के आलेख को इसी संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिए। वे गाँधीजी के क्रांतिकारी विचारों की व्यापक परिकल्पना में नई तालीम को रखते हैं और हम पाठकों के सामने एक समृद्ध वैचारिक टूलकिट रखते हैं जिसमें चार विचारोत्तेजक मुद्दे : अभयदान; 'प्रबुद्ध अराजकता (enlightened anarchy)'; 'साम्प्रदायिक धर्म' और 'आधारभूत नैतिकता' के बीच का अंतर; और शिक्षा और स्कूली शिक्षा के बीच का अंतर शामिल हैं।

लॉरा कॉलुक्की-ग्रे, ऐलेना कैमिनो और डोनाल्ड-ग्रे का आलेख स्कॉटलैंड के एबरडीन शहर के एक विद्यालय की बागवानी परियोजना की जाँच-पड़ताल के दौरान अहिंसा, सत्याग्रह और सर्वोदय जैसे गाँधीवादी विचारों के अनुभवों का जीवंत चित्रण है। कृति गुप्ता और मेरा आलेख मेक्सिको के ज़ापतिस्ता आदिवासियों द्वारा काम में ली जाने वाली शिक्षा की प्रकृति पर एक संक्षिप्त समीक्षा है, जो आज की दुनिया में शायद शिक्षा का एकमात्र ऐसा ढाँचा है जो गाँधीजी की

---

1. डीग्रोथ की अवधारणा वैश्विक खपत और उत्पादन (सोश्ल मेटाबोलिस्म) को कम करने की आवश्यकता पर ज़ोर देती है और लोककल्याण, सामाजिक न्याय/समता पर आधारित और पारिस्थितिक रूप से सतत विकास करने वाले समाज का समर्थन करती है, जिसमें समृद्धि का मानक जीडीपी नहीं बल्कि लोगों की खुशहाली होती है।

2. 'दोहन-उत्पादन-अवशेष' (टेक-मेक-वेस्ट) के रेखीय मॉडल के विपरीत, सर्कुलर अर्थव्यवस्था की रूपरेखा पुनरुत्पादन पर बल देती है। इसका मानना है कि विकास का अर्थ केवल सीमित संसाधनों की लगातार खपत करना नहीं है, बल्कि यह अपशिष्टों और प्रदूषण को कम करने, उत्पादों और संसाधनों के समझदारीपूर्ण उपयोग और प्राकृतिक तंत्रों को पुनर्जीवित करने पर बल देती है।

3. डीप इकोलॉजी का दर्शन सभी जीवों को समान रूप से महत्व देने की बात कहता है। यह अन्य जीवों को मनुष्य के हित को केंद्र में रखकर देखने के बजाय उन्हें उनके अपने वजूद और अपनी अहमियत को केंद्र में रखकर देखने की बात करता है।

4. साइक्स, एम. (1988) : ''द स्टोरी ऑफ नई तालीमः फिफ्टी ईयर्स ऑफ एडुकेशन'' इन सेवाग्राम, 1937-1987 : ए रिकॉर्ड ऑफ रिफलेक्शन, सेवाग्राम, वर्धा : नई तालीम समिति।

नई तालीम की मौलिक योजना के सबसे क़रीब है। अदिति ठाकुर और शंकर पूर्बे ने बिहार के पश्चिम चामरा में 13 स्कूलों के समूह में नई तालीम को पुनर्जीवित करने के प्रयोग के दौरान अपने अनुभवों को लेख में समेटा है।

इस अंक में जहाँ एक ओर हम दुनिया भर में नई तालीम को लेकर हो रहे वर्तमान प्रयासों और ऐसा करने की ज़रूरत के सैद्धान्तिक पक्ष के बारे में वैचारिक विमर्श करते हैं, वहीं यह ऐसे प्रयासों में भागीदार 'कर्मियों' को भी समर्पित है। यह ऐसे सभी शिक्षकों और सुगमकर्ताओं के नाम है जो वर्तमान की जटिल चुनौतियों का सामना करने के लिए गाँधीवादी विचारों पर काम करते हैं और उन्हें अमल में लाते हैं और जिन्होंने भविष्य के एक स्वाभाविक पुनरुत्थान के उद्देश्य से नई तालीम के परिवर्तनकारी पहलू को जीवित रखा है।

इसलिए, हमारे इस अंक में ग्रामीण कर्नाटक के सरकारी स्कूलों में जल संरक्षण के प्रयासों के माध्यम से शिक्षा देने के बारे में अदिति हस्तक की लिखी रचना है; साथ ही ध्रुव देसाई द्वारा मरुदम विद्यालय, तमिलनाडु में खेती, बागवानी और वनरोपण के प्रयासों के माध्यम से सीखने-सिखाने के अनुभव से उपजा एक लेख है।

नवेंदु मिश्रा, गौरव जायसवाल, और शिरीष कुमार का आलेख बच्चों द्वारा अपने गाँव के नरेगा खातों के विश्लेषण के ज़रिये प्रशासन में स्थानीय भागीदारी के बारे में सीखने को विस्तार से बताता है; इसके अलावा, रोशनी रवि और मैं कुछ शिक्षकों के अनुभवों को आप तक पहुँचा रहे हैं जब वे शिक्षक बैंगलोर के शहरी स्कूल में खेती के माध्यम से पढ़ने के अपने अनुभवों के माध्यम से बताते हैं कि आज के समय में नई तालीम का शिक्षक होने के क्या मायने हैं। आधारशिला लर्निंग सेंटर, मध्य प्रदेश में बायोगैस संयंत्र की स्थापना के माध्यम से सीखने के बारे में क्रिसटियन कैसिलस द्वारा लिखा एक रोमांचक और प्रेरणादायक वृत्तान्त उपलब्ध कराता है। आगे ऋषभ मिश्रा द्वारा लिया गया सुषमा शर्मा का साक्षात्कार शामिल है, जिन्होंने वास्तविक नई तालीम विद्यालय- आनंद निकेतन को सेवाग्राम में फिर से शुरू किया और आज के समय में उस विचार को जीवित रखा है। साथ ही शरद ताकसांडे लिखते हैं कि आनंद निकेतन, सेवाग्राम के शिक्षकों ने लॉकडाउन के दौरान भी आनुभाविक और प्रासंगिक शिक्षण को कैसे जीवंत बनाए रखा।

इसलिए यह विशेषांक उन सभी महत्वपूर्ण शिक्षकों का अभिनंदन करता है, जो सीखने-सिखाने की अपनी रोज़मर्रा की कार्यप्रणाली में भविष्य की कल्पना को ध्यान में रखते हैं, क्योंकि सीखने-सिखाने के दौरान वे नन्हें युवा छात्रों को न केवल वर्तमान के परिवर्तनों के प्रति उदार होने या आने वाले समय के प्रति अनुकूल होने के लिए तैयार करते हैं बल्कि वास्तव में नई और बेहतर दुनिया को आकार दे रहे होते हैं।

निश्चित रूप से यह शिक्षा विमर्श के साथ जुड़े हम सभी लोगों के लिए गाँधी के स्वराज के विचार पर चिंतन-मनन करने का एक अवसर है और इसमें केन्द्रीय बिन्दु के तौर पर कैसे 'कर्म' पर ज़ोर दिया गया है यह समझना है।

यही कारण है कि उनके जीवनी लेखक लुई फिशर ने एक बार टिप्पणी की थी 'गाँधी के व्यक्तित्व में कुछ भी निष्क्रिय नहीं था और उन्हें निष्क्रिय प्रतिरोध जैसे शब्द बिलकुल नापसंद थे!' ◆

पल्लवी वर्मा पाटिल
अतिथि संपादक

भाषान्तर : मधुलिका झा

अब आ गए गाँधीजी के दिन

डॉ. सुजीत सिन्हा

एक सौ ग्यारह साल पहले, सन 1909 में ''हिन्द स्वराज'' के छटे अध्याय ''सभ्यता'' में गाँधीजी ने लिखा था *''ये आधुनिक सभ्यता तो ऐसी है कि जरा धीरज धरो तो खुद ही इसका विनाश हो जाएगा''।*

आज से पचहत्तर साल पहले 5 अक्टूबर, 1945 को गाँधीजी ने नेहरू को चिट्ठी में लिखा ''मुझे इस बात से डरना नहीं चाहिए कि दुनिया आज उल्टी तरफ जा रही है। ये हो सकता है कि भारत भी उसी तरफ जाएगा और उस पतंगे की तरह मर जाएगा जो आग में जलकर राख होने के पहले आग के चारों ओर तेज़ी से नाचने लगता है।''

उद्योगवाद का अंत

आज सन 2021 में उद्योगवाद का पतंगा पागल की तरह झूमते हुए आग में गिरने ही वाला है। जलवायु परिवर्तन पर निगरानी रखने वाला अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक पैनल (IPCC) कह रहा है कि बस दस ही साल बाकी हैं।[1] क्योंकि पृथ्वी की विशेष प्राकृतिक सीमाओं (Planetary boundaries) को लाँघा जा चुका है। प्राकृतिक विनाश और जलवायु के आपातकाल (साइक्लोन, बाढ़, सूखा, अत्यधिक गर्मी और ठंड की लहर) तेज़ी से बढ़ रहे हैं। कोरोना (COVID 19) ने पूरी दुनिया को नचा दिया है। इनके पीछे जल्दी ही आ रही है परमाणु अघटन (अस्त्र, और भी कई चर्नोबिल, फुकुशिमा), रासायनिक अघटन (हजारों भोपाल गैस काण्ड जैसे हादसे), जैविक दुर्घटनाएं (जैविक हथियार, जेनेटिक रूपांतरित जीव, कोरोना जैसे और भी महामारी, पशु पालन कारखानों से अघटन), मनुष्य जनित भूकम्प, गिरते हुए बड़े बाँध, आर्थिक निपात, बढ़ती असमानता, बेकारी, प्रवास, शरणार्थी, हर स्तर पर संसाधनों के लिए भयानक संघर्ष, हथियारों की दौड़, बढ़ती असहनशीलता (धर्म, वर्ण, जाति, भाषा), राष्ट्र और कंपनी स्तर पर बढ़ती फ़ासीवाद और अधिनायकवाद।

चलिये अब जरा कल्पना करते हैं कि यदि हमें CO_2 का उत्सर्जन तेज़ी से घटाना है[2] तो किन-किन चीजों का बहुत ज़ल्द ही पर्याय ढूँढ़ना होगा। क्या-क्या उद्योगवाद के साथ-साथ ख़त्म हो जाएगा और इस उद्योगवाद के पतन के साथ या उसके बाद हमारा जीवन कैसा रहेगा? कल्पना करते-करते आप स्वयं ही देखेंगे कि जो छवि उभर कर आती है, वह एकदम गाँधीवादी छवि है! और ऐसा लगता है कि मानो आज के युग में एक बार फिर से गाँधीजी ने एक सादगी, समता और सद्भावना का जीवन जीने के लिए एक घोषणा पत्र लिखा है!

---

1 https://www.ipcc.ch/2018/10/08/summary-for-policymakers-of-ipcc-special-report-on-global-warming-of-1-5c-approved-by-governments/

2 https://www.weforum.org/agenda/2020/07/climate-change-increased-carbon-dioxide-emissions-scientists/

आइये, कल्पना करते हैं कि :

1. जीवाश्म ईंधन - कोयला, पेट्रोलियम का उपयोग बहुत कम करना होगा। ऐसा नहीं कि ये ख़त्म हो जाएँगे; और भी आविष्कार हो सकते हैं। परन्तु यदि हमें अगले दस सालों में पृथ्वी को नष्ट होने से बचाना है तो आज की तुलना में इन साधनों का बहुत कम इस्तेमाल करना होगा।

2. पृथ्वी का कुल औद्योगिक उत्पादन बड़ी मात्रा में घटेगा। कच्चे माल का निष्कर्षण और उसका विश्वव्यापी वितरण - ये सब पूरी तरह ईंधन पर निर्भरशील हैं। इसी कारण बड़े पैमाने पर इस्पात, एल्यूमिनियम, तांबा जैसे 30-40 धातु, प्लास्टिक, सिलिका, सीमेंट, काँच इन सबका उत्पादन घट जाएगा।

3. कृषि में रसायनों का प्रयोग करना संभव नहीं होगा क्योंकि नाइट्रोजन की जो प्राकृतिक चक्र की सीमा है, उसका उल्लंघन हो चुका है।

4. विश्व भर में बाज़ारीकरण जल्दी से घट जाएगा; यहाँ तक कि एक देश के भीतर भी बहुत मात्रा में सामान दूर नहीं जा पाएगा।

5. प्राइवेट मोटर गाड़ी एक तरीके से उद्योगवाद की प्रतीक हैं - यह सबसे अधिक मात्रा में दिखाई देने वाली वस्तु है - जो बंद हो जाएंगे, वह चाहे पेट्रोलियम या बैटरी (वो भी ईंधन से ही आती हैं) चालित हों।

6. विशाल यातायात व्यवस्था अर्थनीति के संकुचित होने के कारण आदमी और वस्तुओं ले लिए - रास्ता, रेल, समुंद्र, हवाई जहाज से इतने आने-जाने की ज़रूरत ही नहीं रहेगी। यहाँ तक कि काम के लिए दैनंदिन 10-15 किलोमीटर से अधिक जाना भी बंद हो जाएगा।

7. पृथ्वी की सबसे बड़ी लगभग एक लाख प्राइवेट या सरकारी कंपनियाँ 99 प्रतिशत गायब हो जाएंगी क्योंकि अब एक अलग अर्थनीति में उनकी कोई ज़रूरत ही नहीं रहेगी।

8. राष्ट्र का आधुनिक रूप में जन्म उद्योगवाद के साथ-साथ ही हुआ है। आधुनिक राष्ट्र का मुख्य कार्य है उद्योगवाद की अर्थनीति और टेक्नोलॉजी का समन्वय करना। अगर उद्योगवाद नहीं, तो राष्ट्र की भी कोई ज़रूरत नहीं। पर्यावरण में यदि कार्बन का स्तर घटाने के लिए हम बड़े यातायात को सीमित करें तो बड़े स्तर की भूमंडलीकृत अर्थनीति की आवश्यकता कम होगी। इस अर्थनीति को चलाने के लिए जो राजनीति अभी हमारे सामने है उसकी भी ज़रूरत कम हो जाएगी।

रोटी-कपड़ा-मकान-बिजली, सड़क, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, राशन, बालवाड़ी, नरेगा- छोटे स्तर पर विभिन्न समुदाय अपनी-अपनी ज़रूरत समझते हुए अपने अनुसार नीति बनाएंगे। अगर ऐसा करने लगेंगे तो राष्ट्रवादी केंद्रीयकृत नीति की आवश्यकता नहीं रहेगी और इन नीतियों को बनाने और संभालने के लिए जो भारी भरकम राष्ट्र सरकार चाहिए- उसकी ज़रूरत ही नहीं रहेगी। ''राष्ट्र और नीति'' ये दो शब्द ही गायब हो जाएंगे, उदाहरण के लिए ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति''!!!

9. पार्लियामेंट और चुनाव प्रतिनिधि वाला गणतंत्र भी अपना स्वरूप बदल देगा। यदि राष्ट्र शक्तिहीन होते जाएंगे तो इस तरह के चुनावों के स्थान पर हम डायरेक्ट डेमोक्रेसी की ओर अग्रसर होंगे।

10. उद्योगवाद से जुड़ा हुआ उत्पादन, **उससे जुड़े हुए सेवामूलक काम,** उद्योगवाद के विशाल राष्ट्र सरकार की नोकरियाँ- ये सब उद्योगवाद के पतन के साथ ख़त्म हो जाएंगे।

11. बड़े शहर संकुचित हो जाएंगे। क्योंकि बड़े शहरों में उद्योगवाद से जुड़ा कोई काम ही नहीं रहेगा। करोड़ों की जनसंख्या के शहर को खाद्य पदार्थ पहुँचाने के लिए जिस व्यवस्था की ज़रूरत होती है वह अब उद्योगवाद के पतन के साथ संभव नहीं होगी।

12. राष्ट्र और दुनिया भर की मुद्रा व बैंक व्यवस्था बहुत संकुचित हो जाएगी और विश्व की मुद्रा की भी ज़रूरत घट जाएगी क्योंकि ज़्यादातर सामग्री इनके माध्यम से क्रय-विक्रय नहीं की जाएगी।

13. उद्योगवाद यदि ख़त्म तो स्कूल नामक संस्था की भी और ज़रूरत नहीं रहेगी। पूरे देश में एक समान करिकुलम, सर्टिफिकेट वाले शिक्षक, ''बोर्ड'' परीक्षा, सरकारी प्रमाणपत्र - ये सब कोई काम के नहीं रहेंगे।

14. पृथ्वी की 99 प्रतिशत उच्च शिक्षण संस्थाएं (सरकारी या प्राइवेट) बंद हो जाएंगी। नए तरीके के समाज के लिए आज की उच्च शिक्षा की संस्थाओं की कोई ज़रूरत नहीं रहेगी।

आज के लिए गाँधीजी का विकल्प

अगर इस तरीके से उद्योगवाद के विनाश या पतन के बाद की दुनिया की उपरोक्त कल्पना की जाए तो इसकी कुछ ऐसी तस्वीर उभरती है :

ज़्यादातर लोगों के रहने और काम करने की जगह होगा छोटा गाँव और छोटा शहर। खेती, पशुपालन, जंगल, हस्तशिल्प, स्थानीय सेवाएं, व्यापार, सभी में समवाय प्रक्रिया से काम होगा। ज़्यादा से ज़्यादा इकोलॉजी की नीतियों को अपनाने की सतत चेष्टा रहेगी। जीवाश्म ईंधन, धातुओं और प्रकृतिनाशक वस्तुओं के प्रयोग को कम करते हुए, स्थानीय वस्तुओं का उचित प्रयोग होगा। सभी संपत्ति और संसाधन पूरे समुदाय के होंगे, किसी एक-दो परिवार के नहीं। स्वदेशी नीति को मानते हुए 90 प्रतिशत उत्पादन का भोग 10-12 किलोमीटर के अंदर होगा। दूर के बाजार में बहुत कम चीजें जाएंगी और आएंगी। गाँव और मोहल्ले की आम सभा में आमने-सामने लोकतंत्र के द्वारा सब निर्णय होगा। इसमें 12 साल के ऊपर के बच्चे भी भाग लेंगे। समुदाय के लगातार सत्याग्रह के माध्यम से सभी प्रकार की विषमताएं- नारी, पुरुष, धर्म, जाति, वर्ण, भाषा कम होती रहेंगी। लोग सामुदायिक रसोई घर में एक साथ ख़ाना बनाएंगे और खाएंगे। बच्चों की ज़िम्मेदारी पूरे समुदाय की होगी, किसी एक परिवार की नहीं। 5-10-20-100-200 समुदाय लेकर शासन स्तर बनेंगे; पर ये सभी स्तरों में कोई क्षमता की ऊँचाईं नहीं होगी। सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी तो समुदाय स्तर की ही होंगी। राष्ट्र, राष्ट्रीय सरकार, राष्ट्रवाद ऊब जाएंगे।

संक्षेप में राष्ट्रीय उद्योगवाद का विकल्प होगा- न्याय और समतापूर्ण, मितव्ययी और समृद्ध, स्वस्थ और खुशहाल, शान्तिपूर्ण और सृजनशील, प्रेम भाईचारा से भरा, स्वयं संपूर्ण, स्वयं शासित, प्रकृति बंधु, छोटे ग्रमीण और शहरी समुदाय।

शिक्षा की चुनौती

ऐसे आदर्श समाज के लिए चाहिए आज की नई - 'नई तालीम'। पहले तो, गाँधीजी के अनुसार, ऐसी शिक्षा हर एक को स्वराज दिलाने में सक्षम होगी। स्वराज यानि अपने पर राज के जितने भी कौशल हैं वो बचपन से ही सिखाये जाएंगे और जिसे यह स्वराज प्राप्त होगा वो दूसरों के साथ मिलकर उद्योगवाद से संघर्ष करेगा; और साथ ही हरेक दिशा में- आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक, राजनैतिक विकल्प के निर्माण का काम करेगा।

इसके साथ ऐसी शिक्षा स्थानीय भाषा में स्थानीय शिक्षक को लेकर होगी। आध्यात्मिक बोध, पूरी मानव जाति, पूरी पृथ्वी और प्रकृति के साथ एकात्म बोध- ये शिक्षा का अभिन्न अंग होगा। कोई राज्य या राष्ट्रीय शिक्षा मंत्रालय या विभाग नहीं रहेगा जो शिक्षक नियुक्त करना, उनको तंख़्वाह देना, पाठ्यक्रम बनाना, किताबे लिख कर छापना, बोर्ड की परीक्षा लेना, सर्टिफिकेट देना इत्यादि ये सब काम करेगा। समुदाय की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक कार्यक्षेत्र, उसका प्राकृतिक वातावरण- ये ही होंगी शिक्षित होने की जगह। केवल कोई अलग से बना स्कूल या कक्षा-कक्ष नहीं। समुदाय का जीवन चक्र और वहाँ की जलवायु से शिक्षा का समय काल निर्धारित होगा। अपने समुदाय और स्थानीय समस्याओं का हल करना शिक्षा का पाठ्यक्रम होगा। पाठ्यक्रम हर एक स्थान के लिए अलग-अलग होगा। अपनी और स्थानीय इतिहास से बात शुरू होगी। परन्तु पूरी दुनिया के इतिहास से संपर्क के बारे में सीखेंगे।

और क्या नहीं होगा? ये बच्चे और उसके परिवार के आर्थिक सीढ़ी में उठने की आकांक्षा पूरी करने की शिक्षा नहीं होगी, क्योंकि ऐसी कोई सीढ़ी ही नहीं रहेगी। हर काम की समान मर्यादा और समान वेतन वाला समाज होगा। यह गाँव और छोटा शहर छोड़कर बड़े शहर में जाने की भी शिक्षा नहीं होगी, क्योंकि बड़े शहर ही नहीं रहेंगे।

इस दिशा में जो विभिन्न प्रयोग किये जा रहे हैं उनका इस अंक में विवरण है। उससे यही आशा है कि वह हम सभी लोगों को प्रेरित करें। यही है आज की हमारी चुनौती। क्योंकि उद्योगवाद का सूरज ढल चुका है। समय कम है और गाँधीजी के स्वराज की ओर जाने का रास्ता हमारे सामने है। ◆

लेखक परिचय : देहरादून और असम से स्कूली शिक्षा, कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से रसायन में बी.एस.सी., आई.आई.टी.कानपुर से एम.एस.सी., अमरीका की प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी से पी.एच.डी.। एक साल अरुणाचल प्रदेश के स्कूल में शिक्षण, दो साल अमरीका में बेल लैब्स में रिसर्च, 20 साल बंगाल के गाँव में विकास का काम और दस साल अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटि में शिक्षण। आजकल उद्योगवाद के विकल्प की कहानियाँ सुनाते हैं।

संपर्क : sujit.sinha@apu.edu.in

'नई तालीम' के सामयिक तथा विचारात्मक संदर्भ[1]

अनिल सेठी

भाषान्तर : कुसुम बाँठिया

हर राष्ट्र के इतिहास में ऐसे क्षण आते हैं जब अपनी विरासत के किसी अंश के विशेष महत्व को पहचानकर लोग उसकी पुनर्व्याख्या तथा पुनर्गठन करके, उसे वर्तमान के साथ ही भविष्य के लिए भी एक नया रूप देते हैं। गाँधीजी की 'नई तालीम' की संकल्पना को लेकर सुजित सिन्हा और पल्लवी वर्मा पाटिल लगभग दस वर्षों से ठीक यही काम कर रहे हैं।[2] जब पल्लवी ने मुझसे इस विशेषांक के लिए कुछ लिखने का आग्रह किया तो मुझे लगा कि मुझे 'नई तालीम' को उसके सामयिक तथा विचारात्मक संदर्भों में अवस्थित करने का प्रयास करना चाहिए। विचारात्मक संदर्भ से मेरा आशय है- गाँधी के अन्य विचारों से, बल्कि उनकी संपूर्ण विचारणा से, उनके शिक्षा पद्धति संबंधी प्रारूप का संबंध। नई तालीम के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है और इसमें से कुछ लेखों में गहन अंतर्दृष्टि का भी परिचय मिलता है।[3] फिर भी ऐसा लेखन बहुत ज़्यादा नहीं है जिसमें 'बुनियादी तालीम' (गाँधी के ही शब्द) को उनकी दृष्टि (vision) के वृहत्तर संदर्भ में रखकर देखा गया हो या उसे 'अभयदानम', 'प्रबुद्ध अराजकता', सत्य (या फिर ज़िन्दगी) के क्रांतिकारी प्रयोग, या फिर डी-स्कूलिंग जैसे बीजरूप विचारों से जोड़ा गया हो। गाँधी ने अद्‌भुत और सूक्ष्म कारीगरी से अपने जीवन और सोच की जो चादर बुनी थी, 'नई तालीम' को हमें उसी के ताने-बाने के एक हिस्से के रूप में देखना चाहिए। इस लेख का आरंभ सामयिक संदर्भ से हो रहा है, पर जल्दी ही यह 'नई तालीम' और गाँधी की आदर्श जीवनाचार संबंधी बुनियादी अवधारणाओं के आपसी रिश्तों पर आ जाएगा।

---

1. इस लेख के अनुवाद के लिए मैं डॉ. कुसुम बाँठिया का आभारी हूँ। इनके सटीक अनुवाद और दोनों भाषाओं की लय पर इनकी पकड़ का मैं हमेशा से प्रशंसक रहा हूँ। मेरी पत्नी शिखा सेठी की बाज़ जैसी नजरों से लेख के प्रूफ़ गुज़रे। उनके साथ इस लेख के विचारों का विमर्श मैं लंबे अर्से से करता आया हूँ। लेख के लिखे जाने के दौरान पल्लवी वर्मा पाटिल, प्रोफेसर फ़राह फ़ारूक़ी और डॉ. उमेश झा से हुई विचार-चर्चाओं के लिए मैं इन सभी का आभारी हूँ।

2. सुजित सिन्हा बेंगलुरू की अज़ीम प्रेमजी युनिवर्सिटी में विज़िटिंग प्रोफ़ेसर हैं और पल्लवी वर्मा पाटिल भी उसी युनिवर्सिटी में पढ़ाती हैं। इन दोनों के कार्य के लिए 'पढ़ाने' का पारंपरिक अर्थ बिल्कुल नाकाफ़ी है। ये वकीलों और डॉक्टरों की तरह अपने पेशे की प्रैक्टिस - धुंआधार प्रैक्टिस - करते हैं। इन दोनों का 'पढ़ाना' केवल अपने संस्थान की कक्षाओं में जाकर अध्यापन तथा उससे सम्बद्ध कार्यों तक सीमित नहीं है। ये इससे अतिरिक्त भी शिक्षा-सुधार, ज़मीनी गतिविधियों, ग्रामीण पाठशालाओं, नई तालीम की नवीन पाठशालाओं आदि को लेकर अत्यंत सक्रिय हैं।

3. उदाहरण के लिए देखिए, मार्जरि साईक्स, द *स्टोरी ऑफ़ नई तालीमः* फिफ्टी यीरज ऑफ़ एडुकेशन ऐट सेवाग्राम, इन्डिया (दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी, 2009); कृष्ण कुमार, 'लिस्निंग टू गाँधी', रजनी कुमार, अनिल सेठी एवं शालिनी सिक्का (संपादक), स्कूल, सोसायटी, नेशन : पॉप्युलर एसेज़ इन एडुकेशन (दिल्ली, ओरिएन्ट लोंगमेन, 2005); हेनरी फ़ैग, बैक टू द सोर्सेज़ः ए स्टडी ऑफ़ गाँधीज बेसिक एडुकेशन (दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2002)

सामयिक संदर्भ

ब्रिटिश शासन के अंतर्गत 1937 में भारत के कई राज्यों में कांग्रेस की सरकारें बनीं। अब देश की शैक्षणिक व्यवस्था के विस्तार और पुनरुज्जीवन की ज़िम्मेदारी उन पर आ गई थी। पर सभी प्रांतों में आर्थिक संसाधनों की कमी थी और मंत्रिमंडलों के लिए शिक्षा पर ख़र्च होने वाली राशि को बढ़ाना संभव नहीं था। चूँकि आबकारी का महकमा भी प्रांतीय मंत्रिमंडलों के अधिकार क्षेत्र में आता था, कांग्रेस के सामने एक विकल्प यह था कि आबकारी से हुई आय को विद्यालयों के संचालन की बेहतरी के लिए उपयोग में लाए। मगर कांग्रेस मद्य निषेध को राष्ट्रीय नीति बनाने के लिए प्रतिबद्ध थी। पार्टी के मंत्रियों की दुविधा का बयान जी रामनाथन ने इस प्रकार किया हैः

> यदि मद्य निषेध लागू किया जाता तो एक ओर तो राजस्व की हानि होती और दूसरी ओर इसे लागू करने की व्यवस्था के लिए अतिरिक्त ख़र्च भी करना पड़ता। संसाधनों पर इस दोहरी मार के बाद मंत्रिमंडल के हाथों में शिक्षा जैसे राष्ट्र निर्माणकारी उद्देश्यों के लिए बहुत ही अपर्याप्त राशि रह जाती। इस प्रकार कांग्रेस के आगे दो ही रास्ते थे - या तो शिक्षा के विकास से जुड़े कार्यों को स्थगित करके मद्य निषेध को आगे बढ़ाए या मद्य निषेध को मुल्तवी करके आबकारी से होने वाली आय का नए विद्यालयों के निर्माण और अध्यापकों के वेतन में उपयोग करे। ज़रूरत कोई ऐसा समाधान खोजने की थी जिसके तहत एक ही समय में दोनों ही आदर्शों पर चला जा सके। दूसरे शब्दों में एक ऐसी शिक्षा नीति का विकास ज़रूरी था, जिसके अंतर्गत वित्तीय साधनों की बहुतायत के बिना भी विद्यालयों का विकास हो सके।[4]

जैसे पहले भी प्रायः होता आया था, गाँधी ने इस चुनौती का जो समाधान सुझाया, वह रचनात्मक तो था पर साथ ही विवादास्पद भी। उनका समाधान आमूल परिवर्तनकारी थाः

1. प्रारंभिक (प्राइमरी) शिक्षा 7 से 14 वर्ष या अधिक आयु के बच्चों के लिए हो। आज के मैट्रिक्युलेशन के समकक्ष इस पाठ्यक्रम से अंग्रेज़ी को बाहर रखा जाए और हस्तशिल्प को जोड़ा जाए।
2. लोगों के मुख्य-मुख्य पेशों में से ही हस्तशिल्पों का चुनाव हो।
3. समस्त शिक्षण हस्तशिल्पों से ही सहसंबद्ध हो।
4. इस प्रकार की शिक्षा उत्पादक तथा स्वनिर्भर हो।[5]

इसमें से अंतिम प्रस्ताव में विद्यार्थियों की दस्तकारी के उत्पादों (की बिक्री) के माध्यम से स्कूलों को आत्मनिर्भर बनाने की सिफ़ारिश की गई थी। इन सभी प्रस्तावों का विरोध हुआ, विशेषकर अंतिम प्रस्ताव का। यहाँ तक कि 1937 में वर्धा में स्वयं गाँधी की अध्यक्षता में हुए एक सम्मेलन में भी इस योजना को संपूर्ण समर्थन नहीं मिल पाया। वहाँ गाँधी के सुझावों को नरम करते हुए केवल यही प्रस्ताव पारित हो सका 'कि सम्मेलन को आशा है कि शिक्षण की यह पद्धति आगे चलकर शिक्षकों के वेतन की व्यवस्था कर पाएगी'। शिक्षाशास्त्रियों को आशंका थी कि गाँधीवादी विद्यालयों में पेशा-केंद्रित शिक्षा विद्यार्थियों को कहीं बाल मज़दूर न बना छोड़े। मगर फिर भी 'बुनियादी तालीम' को कुछ हद तक स्वीकृति भी मिली। उदाहरण के लिए उस समय की एक गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया रिपोर्ट में (जिसका मसविदा उस समय के शिक्षा आयुक्त जॉन सार्जन्ट ने तैयार किया था) इसकी तर्कसंगति को स्वीकार किया गया।

---

4. जी. रामनाथन, *एडुकेशन फ़्रॉम डूई टू गाँधी* : द थ्योरी ऑफ बेसिक एडुकेशन (बम्बई 1962) पृ. 3-4। मौजूदा लेख में 'नई तालीम' के सामयिक संदर्भ के बारे में हुई चर्चा का काफ़ी हिस्सा अनिल सेठी, 'एडुकेशन फ़ॉर लाईफ, थ्रू लाईफः ए गाँधियन पेराडाईम'- क्रिस्टोफ़र विन्च, फ़र्स्ट महात्मा गाँधी मेमोरियल लेक्चर - 2007 (दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी. 2007) में भी मिलेगा।

5. जी. रामनाथन, *एडुकेशन फ़्रॉम डूई टू गांधी* : द थ्योरी ऑफ़ बेसिक एडुकेशन (बम्बई 1962) पृ. 5।

संपूर्ण देश के स्तर पर 'बुनियादी तालीम' की योजना को रूप देने के लिए वर्धा सम्मेलन में एक कमिटी का गठन हुआ जिसका अध्यक्ष ज़ाकिर हुसैन को बनाया गया। और गाँधी तो हमेशा अपने समय के ज्वलंत प्रश्नों पर जनता से विचार-विमर्श करने को उद्यत रहते ही थे। उन्होंने जुलाई 1937 से ही *हरिजन* में अपने शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण को लेखबद्ध करना शुरू कर दिया था। जनवरी 1948 में उनकी मृत्यु तक उनका यह क्रम ज़ारी रहा।

यह बात हम सभी जानते हैं कि शिक्षा से गाँधी का नाता नया नहीं था। 1937 और उसके बाद वे जो तर्क, जो सुझाव रखते रहे, उनका मंथन उनके दिल और दिमाग में - गाँधी की ज़बान में उनके 'सीने' में - लगभग चालीस वर्ष से चलता आ रहा था। उन्होंने डरबन के फ़ीनिक्स आश्रम (1897-1904) और जोहान्सबर्ग के टॉल्सटाय फार्म (1911-1913) में शिक्षा संबंधी प्रयोग किए थे और शिक्षा के बारे में 1909 में *हिंद स्वराज* में लिखा था।[6] इस प्रकार अपनी उम्र के आख़िरी दशक में उन्होंने जिन विचारों को अभिव्यक्ति दी उनमें न केवल उनके प्रारंभिक अनुभवों का निचोड़ था, बल्कि शांति निकेतन, चेन्नई के बेंटिक गर्ल्स हाईस्कूल, और सेवाग्राम तथा वर्धा के ग्रामीण पाठशाला एवं अध्यापकों के प्रशिक्षण केंद्रों की जानकारी का भी सार था।[7]

1938 में ज़ाकिर हुसैन कमिटी ने पाया कि 'बच्चों और बड़ों के तन, मन और चेतना[8] में जो कुछ श्रेष्ठ है, उसे समग्र रूप से बाहर लाने के लिए' यह 'नई तालीम' बुनियाद का काम करेगी। कमिटी का निष्कर्ष था कि इस लक्ष्य का संधान दस्तकारी केंद्रित शिक्षा के माध्यम से होना चाहिए। किसी भी शिल्प के सीखने में कई प्रकार के ज्ञान की संभावनाएं सामने आती हैं। इस शिक्षा का उद्देश्य होगा, उन संभावनाओं को - सहज, स्वाभाविक रूप से - यथासंभव अधिक से अधिक अनुशासनों या फिर विषयों से जोड़ना। ऐसी शिक्षा से ऐसे 'सहकारी समुदायों' के गठन में मदद मिलेगी जिनमें 'बचपन और किशोरावस्था के लचीले वर्षों में बच्चों की संपूर्ण गतिविधियों में समाज-सेवा का उद्देश्य ही प्रमुख होगा'।[9] यहाँ मैं 'नई तालीम' की प्रमुख विशिष्टताओं की चर्चा इससे ज़्यादा नहीं करूंगा।[10]

विचारात्मक संदर्भ

विचारात्मक संदर्भ के बारे में मेरा यही निवेदन है कि गाँधी ने 'नई तालीम' की रूपरेखा में अपने कुछ क्रांतिकारी विचारों को हालांकि व्यवस्थित रूप से स्थान नहीं दिया, पर उनकी शिक्षा संबंधी दृष्टि (vision) के केंद्र में वे विचार उपस्थित हैं। उनके बिना 'नई तालीम' क्रियमाण हो ही नहीं सकती। 'बुनियादी तालीम' के बारे में भरपूर सामग्री उपलब्ध होने के बावजूद मुझे एक भी प्रबंध ऐसा नहीं मिला जिसमें गाँधी के शैक्षणिक सिद्धांतों का उनके बाकी दर्शन से, शिक्षा के क्षेत्र से भिन्न प्रतीत होने वाले उनके जीवनादर्शों से समाकलन किया गया हो। यह बात तो तब है जबकि विद्वान

---

6. देखिए मो.क.गाँधी 'एडुकेशन', एन्टनी जे. परेल (संपादक), गाँधी : 'हिन्द स्वराज' एण्ड अदर राईटिंग्ज़ (केम्ब्रिज, केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997), पृ. 100-106 में: मार्जरि साइक्स, 'द सोइंग ऑफ द सीड', द स्टोरी ऑफ नई तालीमः फ़िफ्टी यीरज़ ऑफ़ एडुकेशन ऐट सेवाग्राम, इन्डिया (दिल्ली), एन.सी.ई.आर.टी., 2009), पृ. 7-13।

7. इन संस्थाओं में हुए कार्यों में विचारों का बड़े पैमाने पर परस्पर आदान-प्रदान हुआ। देखिए मार्जरि साइक्स, 'द सोइंग ऑफ द सीड', द स्टोरी ऑफ़ नई तालीम : फ़िफ्टी यीरज़ ऑफ़ एडुकेशन ऐट सेवाग्राम, इन्डिया (दिल्ली), एन.सी.ई.आर.टी, 2009); एवं हेनरी फ़ैग, बैक टू द सोर्सेज़ : ए स्टडी ऑफ़ गाँधीज़ बेसिक एडुकेशन (दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट 2002)।

8. मो.क.गाँधी, *हरिजन*, 31 जुलाई 1937।

9. बेसिक नेशनल एडुकेशन : रिपोर्ट ऑफ़ द ज़ाकिर हुसैन कमिटी एण्ड द डिटेल्ड सिलेबस (सेगांव) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, 1938, पृ0 38।

10. अनिल सेठी, 'एडुकेशन फ़ॉर लाईफ़, थ्रू लाईफ : ए गांधियन पेराडाईम' - क्रिस्टोफ़र विन्च, फर्स्ट महात्मा गाँधी मेमोरियल लेक्चर-2007 (दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी. 2007), पृ. 1-11 में मैंने इस विषय में विवेचन किया है।

मानते आए हैं कि गाँधी के विचार अत्यंत सुसंबद्ध हैं।[11] इस तरह की संबद्धताओं के अन्वेषण की भूमिका के तौर पर मैं आपके आगे चार अवधारणाएं रखता हूँः '(अहिंसक) निर्भयता', 'प्रबुद्ध अराजकता', वह निर्णायक अंतर जो गाँधी 'संप्रदायबद्ध धर्म' और 'बुनियादी नैतिकता' के बीच देखते थे, और एडुकेशन तथा स्कूलिंग[12] के बीच का अंतर मैं दिखला रहा हूँ कि विचारों के ये अवधारणात्मक औज़ार ही किस तरह 'नई तालीम' के संचालन की धुरी हैं।

अभयदानमः

'अभयदान' की अवधारणा गाँधी को बहुत प्रिय थी। शायद गाँधी को लगता था कि यह सर्वश्रेष्ठ उपहार है जो किसी को दिया जा सकता है - ऐसा उपहार जो व्यक्ति भी और समाज भी एक दूसरे को दे सकते हैं। एक उक्ति याद आ रही है जो 18वीं सदी के महान दार्शनिक वॉल्टेयर के नाम से प्रायः (शायद ग़लती से) उद्धृत की जाती हैः 'आपकी बात से मैं पूरी तरह असहमत हूँ, पर आपके अपनी बात कहने के अधिकार की रक्षा के लिए मैं अपनी जान भी दे दूँगा'।[13] गाँधी की 'अभयदान' की अवधारणा और वॉल्टेयर के कथन की अर्थध्वनि में कुछ अंतर है और दोनों के संदर्भ-क्षेत्र भिन्न हैं। मगर दोनों अर्थछायाओं के परस्पर मेल से एक श्रेष्ठ संवादपरक, उदार शासन व्यवस्था का परकोटा अवश्य खड़ा किया जा सकता है। शिक्षा संस्थाओं जैसे रचनात्मक संस्थानों के फूलने-फलने के लिए भी यह सुरक्षा घेरा बहुत जरूरी है। गाँधी निर्भयता को दैवीय गुणों में सर्वोच्च मानते थे - 'अन्य श्रेष्ठ गुणों के विकास के लिए अपरिहार्य'।[14] उनका सवाल था, 'निर्भयता के बगैर कोई सत्य की खोज या प्रेम का पोषण कैसे कर सकता है?'[15] अगर शिक्षा का कार्य सत्य की तलाश और प्रेम का पोषण है तो किसी भी विद्यालय के संचालन या किसी भी तालीम की व्यवस्था के लिए 'अभयदान' एक अनिवार्य शर्त बन ही जाता है।

---

11. उदाहरण के लिए, देखिए अकील बिलग्रामी, 'गाँधी, द फ़िलॉस्फर, सेक्युलरिज़्म, आयडेंटिटी, एण्ड एन्चॉटमेंट (रानीखेत, परमानेंट ब्लैक, 2014), पृ. 101-102।

12. अनुवादक की टिप्पणी: मार्जरि साइक्स ने शिक्षण पद्धति के दो प्रकारों का उल्लेख किया हैः एडुकेशन (Education) के अंतर्गत सीखने की प्रक्रिया शिक्षार्थी की प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि और क्षमता से निर्धारित होती है। उस पर सीखने या सफल होने का कोई ऊपरी दबाव नहीं होता और वह अपनी मनोनुकूल दिशा में विकास के लिए स्वतंत्र होता है। स्कूलिंग (Schooling) के अंतर्गत शिक्षण संबंधी गतिविधियाँ एक निर्धारित ढाँचे के अंदर एक बने-बनाए पाठ्यक्रम के ज़रिए तमाम भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति और क्षमता वाले शिक्षार्थियों पर समान रूप से ऊपर से आरोपित होती हैं। अनुवाद करते समय Education का स्वाभाविक शब्दानुवाद 'शिक्षा' ही प्रतीत हुआ किंतु हिंदी में इस शब्द के अनेक भाषागत, सांस्कृतिक और वैचारिक आसंग हैं, जो साइक्स की संकल्पना के अंतर्गत नहीं आते। समस्या यह थी कि Education का अनुवाद यदि 'शिक्षा' किया जाए तो वे तमाम आसंग साइक्स की संकल्पना को समझने में ख़लल डाल सकते हैं। अतः लेखक-अनुवादक के आपसी मशविरे में यह तय हुआ इस लेख में साइक्स के दिए हुए अंग्रेज़ी नामों को ही तकनीकी शब्दावली के तौर पर ले लिया जाए। इनके अतिरिक्त आगे चलकर इसी संदर्भ में साइक्स की 'de-schooling' (de-schooling : जिसका आशय है, पारंपरिक विद्यालय-व्यवस्था के प्रचलित दोषों से मुक्त स्थिति) की संकल्पना के लिए भी अव्याप्ति और अतिव्याप्ति दोष से बचने के लिए, उन्हीं के द्वारा प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द नागरी लिपि में अपना लिया गया है। लेख में आगे इन संकल्पनाओं, तथा इनके द्वारा शिक्षण की प्रकृति और प्रभाव के निर्धारण पर विस्तार से विचार किया जा रहा है।

13. यह कथन प्रायः वॉल्टेयर (फ्रांसवा-मारी आगुए, 1694-1778) के नाम से उद्धृत किया जाता है। यहाँ यह जिस रूप में प्रस्तुत हुआ है, वह शायद ईवलिन बिएट्रिस एलिस हॉल (1868-1956) की एस.जी. टेलेनटायर के छद्मनाम से छपी पुस्तक *द फ़्रेंड्स ऑफ़ वॉल्टेयर* (1906) से लिया गया है। इस पुस्तक में इस कथन का श्रेय वॉल्टेयर को दिया गया है।

14. मो.क.गाँधी, *यंग इंडिया*, 11 सितंबर 1930, पृ. 1-2। गीता में निर्भयता को सर्वोच्च दैवी गुण मानने वाले श्लोक पर गाँधीजी का ध्यान बहुत जल्दी चला गया था। 'मेरी राय में... निर्भयता पूरी तरह से प्रथम स्थान पाने योग्य है।' इसी तरह सिख परम्परा में भी इसे देवत्व का गुण माना गया है और जपजी साहब के मूल मंत्र में इसी रूप में इसका उल्लेख हुआ है।

15. मो.क. गाँधी, *यंग इंडिया*, 11 सितंबर 1930, पृ. 1-2

विद्यालय या तालीम अभय - निर्भयता के स्थान होने चाहिए। वहाँ न हिंसा हो, न शारीरिक दंड - हरगिज़ नहीं। वहाँ उम्र और हैसियत पर आधारित पदानुक्रम - ऊँची-नीची श्रेणियाँ भी नहीं होनी चाहिए, न बौद्धिक या सांस्कृतिक आधार पर बनी श्रेणियाँ। बच्चों के मन में न तो संस्थान और उसके तंत्र के प्रति कोई भय हो, न अध्यापकों और अन्य बच्चों के प्रति। संवाद की प्रक्रिया निरंतर चलती रहे - खुले और मुक्त संवाद की। जिस प्रकार शिक्षार्थियों को अपने लिए निजी स्पेस, आज़ादी, लचीलेपन और सम्मान की ज़रूरत होती है, ठीक उसी प्रकार अध्यापकों तथा अन्य सभी हितधारकों को भी। 'अभयदान' की अवधारणा इस व्यवस्था के केंद्र में होगी - इसके आचार और संस्कृति का आधार, और इसका सृजन इस उद्यम में लगे सभी जन मिलजुलकर करेंगे।

जीवन के हर क्षेत्र में हमें समझदार निर्भयता की आवश्यकता होती है पर किसी आम भारतीय स्कूल के परिवेश में इसके महत्व की बात सोचकर देखिए जहाँ शिक्षक और शिक्षार्थी, दोनों के ही लिए निरंतर आतंक रचा जाता रहता है। शारीरिक दंड की बात तो छोड़ ही दीजिए, भय पैदा करने के और भी सैकड़ों तरीक़े हैं। संवाद की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं होती। एकालाप, ज्ञान की जड़ता, रट्टामार पढ़ाई और (समय पड़ने पर बिना जाने-समझे) उसे उगल देना - ये सब हमारे स्कूलों को उद्विग्नता का खौलता कड़ाह बनाते रहते हैं। कोई छात्र हल्का-सा सुझाव भर दे कि किसी जटिल संख्यात्मक सवाल को बोलकर लिखवाने के स्थान पर बोर्ड पर लिख दिया जाए तो उसे गुर्राहट सुनने को मिलती है, 'अब तुम मुझे सिखाओगे कि कैसे पढ़ाना है? अध्यापक कौन है यहाँ?' जहाँ तक गाँधी का सवाल है, वे तो 'नई तालीम' ही नहीं, राजनीतिक विरोधिता में भी संवाद का सहारा लेने के पक्ष में थे। इसलिए शिक्षा में भी परस्पर आदरपूर्ण वार्तालाप का तरीक़ा वापस लाना ज़रूरी है, और भय को दूर भगाना भी। बात यहीं खत्म नहीं हो जाती। दरअसल एडुकेशन और स्कूलिंग के अंतर को समझा जाना चाहिए। यही बात 'नई तालीम' के केन्द्र में है और आगे इसी की चर्चा की जा रही है।

प्रबुद्ध अराजकता- स्व-राजः

'अभयदान' से ही काफी गहरे में 'प्रबुद्ध अराजकता' या 'स्व-राज' की अवधारणा जुड़ी है। गाँधी के अनुसार

> ...राजनीतिक सत्ता लक्ष्य नहीं है बल्कि लोगों को जीवन के हर क्षेत्र में अपनी दशा सुधारने में सक्षम बनाने का माध्यम है। राजनीतिक सत्ता का अर्थ है, राष्ट्र के प्रतिनिधियों के जरिये राष्ट्र के जीवन के नियमन की क्षमता। *यदि राष्ट्र का जीवन इस सीमा तक आदर्श बन जाता है कि अपना नियमन स्वयं कर सके, तो प्रतिनिधियों की आवश्यकता रहेगी ही नहीं। वह स्थिति होगी प्रबुद्ध अराजकता की। ऐसे राज्य में हर व्यक्ति स्वयं अपना शासक होगा। वह अपने को इस प्रकार नियंत्रित करेगा कि उससे अन्य लोगों को कभी भी किसी प्रकार की अड़चन न हो।* (बल मेरी ओर से)। ऐसी आदर्श स्थिति में राजनीतिक सत्ता नहीं होगी क्योंकि राज्य होगा ही नहीं। लेकिन इस आदर्श का यथार्थ जीवन में कभी भी पूर्ण कार्यन्वय नहीं होता। इसीलिए थोरो की प्रसिद्ध उक्ति है कि शासक वही सर्वश्रेष्ठ है जो कम से कम शासन करे।[16]

यहाँ गाँधी राष्ट्र तथा इसके राजकीय उपकरणों के बारे में बात कर रहे हैं। पर यह केंद्रीय विचार भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्थाओं के संचालन पर भी भली-भांति लागू हो सकता है। 'नई तालीम' आचार का ऐसा ही रूप गढ़ने की कोशिश कर रही है 'जहाँ हर व्यक्ति अपना (या अपनी) शासक हो'। इसकी आस्था ऐसे स्व-शासी तंत्र में है जो स्वयं अपने शासन (स्व-राज) पर बल देता है। सभी व्यक्तियों से, चाहे वे शिक्षक हों या नहीं, यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने कार्य की, अपनी संस्था की, और अपने पेशेगत विकास की ज़िम्मेदारी उठाएं। गाँधीवादी संस्थाएं, सार रूप में, जिस संस्कृति पर आधारित हैं, उसमें हितधारक अपने कार्य को लेकर इस हद तक उत्साही होते हैं कि हर कार्य में उच्चतम मानक तक पहुँचने की लगन में वे जी-जान से जुटे रहते हैं। 'नई तालीम' के लिए 'बाहरी' पद्धतियों और उनसे जुड़े नियम-विनियमों की अपेक्षा शायद प्रबुद्ध स्व-नियमन का आचार कहीं अधिक सार्थक है। 'नई तालीम' को अपने लिए

16. मो.क.गाँधी, *यंग इंडिया,* 2 जुलाई 1931, पृ0 162।

एक कठिन रास्ता चुनना होगा जिसमें अध्यापकों पर नियत कार्य ऊपर से न थोपे जाएं बल्कि वे स्वयं सोच-समझकर, सचेत भाव से, और स्वेच्छा से काम करें। ऊपरी दबाव भय को जन्म देता है और व्यक्ति को वह कार्य बेगार या मशीनी हरकत जैसा लगने लगता है, जबकि स्वयं चुना हुआ रास्ता उसे स्वामित्व का बोध देता है।

पर क्या हमारे अधिकतर सरकारी या निजी स्कूलों में ऐसा होता है? हम सभी जानते हैं कि हमारे विद्यालय और शिक्षा व्यवस्था, दोनों में ही किस हद तक नौकरशाही की श्रेणीबद्धता और केंद्रीकरण का राज है। अध्यापकों का स्थान तानाशाह प्रबंधकों और उदासीन बाबुओं के नीचे होता है, अध्यापकों की न कोई अपनी आवाज़ होती है न कोई नियत हैसियत। क्या पढ़ाना है, किस शिक्षण सामग्री का उपयोग करना है, बल्कि, किस तरह के टेस्ट लेने हैं - यह सब तय करने में भी आमतौर पर उनकी कोई भूमिका नहीं होती। जिस प्रकार अधिकतर शिक्षार्थियों को पढ़ाई में सोच-विचार और स्वायत्तता का अधिकार नहीं मिलता, ठीक उसी प्रकार अध्यापकों को भी पढ़ाने की प्रक्रिया में इन अधिकारों से वंचित रखा जाता है। क्या ये तमाम हालात *'अध्यापक के जीवंत परिवेश'*[17] (बल मेरी ओर से) के सृजन में कभी सहायक हो सकते हैं? क्या ये ऐसे शिक्षाशास्त्रियों को पैदा कर सकते हैं?

> जिनमें मौलिकता हो, जो सच्ची लगन से प्रेरित हों, जो हर रोज़ यह सोचें और तय करें कि विद्यार्थियों को आज क्या पढ़ाना है। अध्यापक को यह ज्ञान फफूंद से सीले ग्रंथों से नहीं मिल सकता। उन्हें स्वयं अपनी ही अवलोकन तथा सोच-विचार की क्षमता का इस्तेमाल करना होगा और अपने ज्ञान को, किसी शिल्प की मदद से, अपनी ही जुबान से बच्चों तक पहुंचाना होगा।[18]

गाँधी की मान्यता थी कि पाठ्यपुस्तकों पर मशीनी ढंग की निर्भरता 'अध्यापक के जीवंत परिवेश' का नाश कर देती है। वे मानते थे कि 'जो अध्यापक पाठ्यपुस्तकों के सहारे पढ़ाता है, वह विद्यार्थियों में मौलिकता का आधान नहीं कर सकता। वह स्वयं भी पाठ्यपुस्तकों का गुलाम बनकर रह जाता है और उसे मौलिकता का न संयोग मिलता है न सुयोग'।[19] ऐसा नहीं कि वे पाठ्यपुस्तकों को बिल्कुल ही ख़ारिज़ कर रहे थे। बल्कि वे दृढ़ता से इस बात पर बल दे रहे थे कि अध्यापक स्वयं जो ज्ञान अर्जित करें उसे विद्यार्थियों तक तभी पहुँचाएं जब पहले समुचित विचार-विश्लेषण द्वारा उसे वे अपने व्यक्तित्व में ही समाहित कर चुकें। इसके लिए आवश्यक है कि वे अपने जीवन का स्वयं नियमन करें, अपने पर स्वयं शासन करें और व्यवस्था इसके लिए उन्हें यथेष्ट स्वायत्तता दे अर्थात् 'नई तालीम' में (या अन्य भी किसी भी प्रकार की तालीम में) मुख्याध्यापकों और प्रशासकों के लिए लाज़िमी है कि वे अध्यापकों की आवाजों और शिक्षक वाणी का सम्मान करें; उन्हें अध्यापकों में अध्यापकों की अस्मिता का, उनकी क्षमता का, उनके कल्याण का और अध्यापक-नेतृत्व का बोध जगाने के लिए प्रयासरत होना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों की पेशागत उन्नति उनके लिए जवाबदारी या प्रोन्नति का माध्यम नहीं होगी। वह माध्यम होगी उस मदद की जो अध्यापकों के अपने पेशे, अपनी जीवनवृत्ति में शिखर तक पहुँचा सकती है।

संप्रदायगत शिक्षा? ना; 'बुनियादी नैतिकता'? हाँः

'नई तालीम' की एक और महत्वपूर्ण विशेषता पर प्रायः ध्यान नहीं दिया जाता, जो दिया जाना चाहिए। इस परियोजना में धार्मिक शिक्षा के लिए कहीं भी कोई भी प्रावधान नहीं था हालाँकि विभिन्न प्रांतों में 'नई तालीम' लागू करने वालों में से कुछ के सांप्रदायिक झुकाव का प्रभाव कहीं-कहीं शायद झलक रहा हो। 1947 के प्रारंभ में ज़ाकिर हुसैन कमिटी

---

17. मो.क.गाँधी, 'टेक्स्ट बुक्स' *हरिजन*, 9 दिसम्बर 1939; कृष्ण कुमार, 'लिस्निंग टू गाँधी', रजनी कुमार, अगिल सेठी एवं शालिनी सिक्का (संपादक), स्कूल, सोसायटी, नेशनः पॉप्युलर एसेज़ इन एजुकेशन (दिल्ली, ओरियन्ट लोंगमेंन, 2005) में भी।

18. भारतन कुमारप्पा (संपादक), मो.क. गाँधी, *बेसिक एडुकेशन* (अहमदाबाद, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊज़, 1956), पृ.75।

19. मो.क.गाँधी, टेक्स्ट बुक्स' *हरिजन*, 9 दिसम्बर 1939; कृष्ण कुमार, 'लिस्निंग टू गाँधी', रजनी कुमार, अनिल सेठी एवं शालिनी सिक्का (संपादक), स्कूल, सोसायटी, नेशनः *पॉप्युलर एसेज़ इन एडुकेशन* (दिल्ली, ओरियन्ट लोंगमेंन, 2005) में भी।

ऑन बेसिक नेशनल एडुकेशन के संयोजक डबल्यू. आर्यनायकम को लिखे पत्र में गाँधी ने राज्य के धार्मिक शिक्षा से संलग्न होने के सुझाव की आलोचना की थीः

> मैं नहीं मानता कि राज्य को धार्मिक शिक्षा के मामलों से जुड़ना या उन्हें संभालना चाहिए। मेरा मानना है कि धार्मिक शिक्षा केवल धार्मिक संस्थाओं की ही चिंता का विषय होना चाहिए। धर्म और नैतिकता का घालमेल मत कीजिए। मैं मानता हूँ कि बुनियादी नैतिकता (का तत्व) सभी धर्मों में समान है। बुनियादी नैतिकता की शिक्षा देना राज्य का प्रकार्य है। धर्म कहने से मेरे दिमाग में बुनियादी नैतिकता नहीं, बल्कि सांप्रदायिकता (Denominationalism) कहलाने वाली प्रवृत्ति की बात आती है। राज्याश्रित धर्म और राज्य से जुड़े चर्च के कारण हम काफ़ी कष्ट झेल चुके हैं। जो भी समाज या समूह धर्म की रक्षा के लिए पूर्णतः या अंशतः राजकीय सहायता पर निर्भर होते हैं, वे 'धर्म' के लायक ही नहीं होते, बल्कि कहना चाहिए कि उनका कोई धर्म होता ही नहीं।[20]

इस कथन पर ध्यान देना ज़रूरी है क्योंकि बड़ी आसानी से यह मान लिया जाता है कि गाँधी धर्म को राजनीति से अलग रखने के सिद्धांत के हामी नहीं थे। जीवन भर वे हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए प्रतिबद्ध रहे और सांप्रदायिकता विरोधी गतिविधियों में भी वे जी-जान से जुटे रहते थे इन बातों को 'पश्चिमी शैली के' धर्म निरपेक्षता के सिद्धांतों की अपेक्षा सर्व-धर्म सम्भाव की प्रवृत्ति से जोड़ा जाता है। गाँधी की प्रार्थना सभाएं और बार-बार उनका यह उल्लेख करना कि उनकी राजनीति धार्मिक चेतना से प्रेरित विवेक से अनुप्राणित रहती है, इस तरह के निष्कर्ष को और पुष्ट करता है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि उनकी समानुभूति और समावेश की भावना दार्शनिक जॉन लॉक के इस सिद्धांत से और सुदृढ़ हुई थी कि राज्य को निजी आस्थाओं के क्षेत्र में दख़लंदाजी नहीं करनी चाहिए - यह विशुद्ध व्यक्तिगत मामला है। धार्मिक विचार-विमर्श की बात गाँधी सार्वजनिक मंच पर लाए - लेकिन इसलिए कि उसके माध्यम से 'बुनियादी नैतिकता', मैत्री भाव, सामंजस्य और सहयोगिता का प्रसार किया जा सके। जब भी और जहाँ भी उन्हें महसूस हुआ कि जनता के बीच धर्म के उल्लेख से संकीर्ण भावनाएँ, झगड़े या हिंसा भड़क सकते हैं तो उन्होंने उसके ऐसे उपयोग की निंदा की और राज-कार्य तथा धर्म के क्षेत्रों को पूरी तरह अलग-अलग रखने के पक्ष में तर्क दिए।[21]

एडुकेशन और स्कूलिंगः

भारत के प्रमुख शिक्षाविदों में से एक, मार्जरि साइक्स, गाँधी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर, दोनों की ही शिष्या रह चुकी थीं। वे 'एडुकेशन' और 'स्कूलिंग' को भिन्न मानती हैं दोनों शब्दों की अर्थछाया में उन्हें इतना अंतर नज़र आता है कि उनके अनुसार शिक्षा का अर्थ डी-स्कूलिंग भी हो सकता है। उनकी व्याख्या है कि शिक्षा का शाब्दिक अर्थ ही है, 'बाहर को ले चलना':

> मेरी आँखों में छवि उभरती है कि कोई बड़ी नरमी से बच्चे का हाथ थामे उसी की रफ़्तार से उसके साथ-साथ चलता है, उसकी अपनी प्रकृति से उपजी अंतःप्रेरणाओं के अनुकूल उसके नूतन विकास को नए क्षेत्रों में उसके अभियानों को प्रोत्साहित करते हुए। इसके विपरीत जब हम 'स्कूलिंग' का ज़िक्र करते हैं तो यह अहसास होता है कि उसे कुछ ऐसा करने के लिए अनुकूलित किया गया है जो वह अपनी सामान्य प्रकृति के अंतर्गत नहीं करेगा - उदाहरण के लिए, बैले नृत्य की कुछ मुद्राएं और गतियां। मेरा कहना यह नहीं है कि 'एजुकेशन' और

---

20. इ.डबल्यू आर्यनायकम का गाँधी को खत, 21 फरवरी 1947, *कलेक्टेड वर्कस ऑफ महात्मा गाँधी*, (दिल्ली, 1999), जिल्द 94, पृ. 19।

21. यह चर्चा पहले पहल अनिल सेठी, 'एडुकेशन फॉर लाईफ थ्रू लाईफ : ए गाँधियन पेराडाईम' - *क्रिस्टोफ़र विन्च, फ़र्स्ट गहात्मा गाँधी मेगोरियल लेक्चर-2007* (दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी. 2007), पृ. 9-10, में छपी थी।

'स्कूलिंग' परस्पर विरोधी हैं, न मैं यह कह रही हूँ कि आप इन दोनों को एक साथ नहीं अपना सकते। पर यह मैं कह रही हूँ कि उनमें अंतर है और इस अंतर की पहचान हमें होनी चाहिए।[22]

साइक्स का दृढ़ विश्वास था कि अध्यापकों की पहली चिंता एडुकेशन होनी चाहिए, स्कूलिंग नहीं। वे अध्यापक की उपमा माली (किंडरगार्टन का शब्दार्थ ही है बच्चों का बगीचा या बालवाड़ी) या नर्स (स्कूल नर्सरी ही होते हैं) से देती थीं। अपने पौधों की देखभाल में कुशल माली और रोगियों की देखभाल में समझदार नर्स की ही तरह बुद्धिमान अध्यापक को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कब बच्चों को अपने मन के अनुसार चलने को छोड़ दें ताकि वे अपने तरीके से पनप सकें, 'जो चाहें कर सकें', जबकि अध्यापक परे हटकर उनका ख़्याल रख सकें। 'उन्हें बच्चों को समझ पाने का ख़्याल हो, दख़लंदाजी का नहीं'[23] अध्यापक बच्चों को अपने आप बढ़ने की गुंजाइश देने के लिए पीछे ज़रूर हटें, लेकिन उनमें मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति - प्रश्न पूछने की आदत को संवारने में मदद करने के लिए उन्हें तत्पर भी रहना चाहिए। उन्हें ही बच्चों में जिज्ञासा की प्रवृत्ति जगानी चाहिए। बच्चों को सवाल खड़े करके उनके हल ढूंढ़ने में मजा आता है और अध्यापकों को उनसे यह बात सीखनी चाहिए। इसलिए 'नई तालीम' वाले स्कूलों को आरंभ से ही पर्याप्त स्कूल-मुक्त यानि कि डी-स्कूल वाली स्थिति में रहना चाहिए। यह तनी हुई रस्सी पर संतुलन साधने जैसा ही कठिन - बल्कि दुष्कर कार्य है। लेकिन इस विशेषांक की संपादक के स्वप्नदर्शी, परिवर्तनकामी परामर्शदाता सुजित सिन्हा तो शायद स्कूलों को पूरी तरह विसर्जित करके भविष्य में विद्यालय विहीन 'नई तालीम' के आयोजन पर विचार करना चाहते हैं। उनका यह प्रतिमान शायद गाँधी के शिक्षा संबंधी विचारों को समस्त संभावनाओं के साथ फलीभूत कर सके।

निष्कर्ष

इस निबंध में 'नई तालीम' के सामयिक तथा विचारात्मक संदर्भों के अन्वेषण की कोशिश की गई है। इसमें गाँधी की विश्वदृष्टि में निहित विचारों को 'नई तालीम' की चर्चा में शामिल किया गया है। उनमें कई बड़ी महत्वपूर्ण संकल्पनाएं हैं जिन्हें 'नई तालीम' की व्याख्या करते समय या तो भुला ही दिया जाता है या मामूली उल्लेख करके छोड़ दिया जाता है। मार्टिन ग्रीन तथा हेनरी फ़ैग 'निर्बंध संभावना' (Absolute Possibility) की बात करते हैं। इसके अनुसार कोई एक अकेला इंसान या छोटा-सा समूह भी जीवन में बड़ा भारी बदलाव ला सकता है। कभी-कभी तो यह बदलाव जीवन को बिल्कुल ही नए, अब तक अछूते ऐसे परिप्रेक्ष्यों तक ले जाता है जिनकी कल्पना तक लोगों की सोच से परे थी।[24] जब महात्मा जी सत्य तथा जीवन के साथ प्रयोगों की बात करते थे तो उनका आशय यही था। यह विशेषांक 'नई तालीम' से जुड़े ऐसे प्रयोगों की एक झलक देने का प्रयास है। ◆

लेखक परिचय : कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज से इतिहास विषय में डॉक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त की, वर्षों तक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में इतिहास के प्राध्यापक रहे हैं। यहाँ रहते हुए आपने एन.सी.एफ. 2005 के आलोक में इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में महती भूमिका निभाई। वर्तमान में पोख़रामा फ़ाउडेशन, हैदराबाद में सीईओ के पद पर कार्यरत हैं।

संपर्क : anil@pokhramafoundation.org

---

22. मार्जरि साइक्स, 'कीनोट एड्रैस', कृष्ण कुमार (संपादक), *डिमॉक्रेसी एण्ड एडुकेशन इन इन्डिया* (दिल्ली, साउथ एशिया बुक्स 1993), पृ. xxiv।

23. मार्जरि साइक्स, 'कीनोट एड्रैस', कृष्ण कुमार (संपादक), *डेमॉक्रेसी एंड एडुकेशन इन इन्डिया* (दिल्ली, साउथ एशिया बुक्स 1993), पृ. xxiv।

24. मार्टिन ग्रीन, गाँधीः *वॉयस ऑफ़ ए न्यू-एज रेवोल्यूशन* (न्यू यॉर्क, कॅन्टीन्यूअम, 1993), पृ. 15-20; एवं हेनरी फ़ैग, *बैक टू द सोर्सेजः ए स्टडी ऑफ़ गाँधीज़ बेसिक एडुकेशन* (दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट 2002), पृ. xx। Absolute Possiblity (निर्बन्ध संभावना) वाला मुहावरा फ़ैग का गढ़ा हुआ है।

स्कूल बागवानी

गाँधी के संदेश की संभाव्यता की तलाश

लौरा कोलुसी-ग्रे, एलेना कैमिनो और डोनाल्ड ग्रे

भाषान्तर : मधुलिका झा

परिचय

पर्यावरण संकट के कई पहलू जैसे 'जलवायु संकट', 'स्वास्थ्य संकट', 'आर्थिक संकट' आदि से हम सभी परिचित हैं। लेकिन इसका एक अप्रत्याशित परिणाम यह भी है कि बहुत से लोग अपने अंदर बेबसी, अपराध बोध और निराशा की भावना को लगातार बढ़ते हुए महसूस कर रहे हैं। कुछ लेखक बच्चों द्वारा अनुभव की गई 'पर्यावरण-अवसाद' (eco-anxiety) का विशेष तौर पर जिक्र करते हैं (होगेट एट अल., 2019), जो पर्यावरणीय आपदाओं से जीवित बच जाने या ऐसी आपदा के साक्षी होने, या दुनिया के वापस बेहतर हो पाने की उम्मीद के बहुत कम या खत्म हो जाने जैसी खबरों के संपर्क में आने के कारण बच्चों में देखी जा रही है।

मानव इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर, जब यह अनुमान लगाया गया कि 2020[1] के अंत तक चालीस से साठ मिलियन लोग अत्यधिक ग़रीबी ($1.90 प्रतिदिन से भी कम) के दायरे में शामिल हो चुके होंगे, हम इस सवाल से जूझ रहे हैं कि आज गाँधी के विचारों से जुड़ने का क्या मतलब है? 70 साल पहले उनकी मृत्यु के बाद से, दुनिया काफी बदल चुकी है; तकनीकी नवाचार की बढ़ती दर और समाज के हर स्तर पर होने वाले परिवर्तन- और शहरीकरण का विस्तार- यह परिदृश्य ग्रामीण विकास और कारीगर समाज की पुरानी संकल्पना से संगत नहीं दिखाई पड़ता। तब भी, गाँधी ने लोगों और पर्यावरण दोनों का शोषण करने वाली आर्थिक पद्धतियों के विनाशकारी प्रभावों के बारे में पूर्व चेतावनी दी थी। सैनफोर्ड (2013) के अनुसार, वर्ष 1946-47 के दौरान भारत में अनाज की कमी होने पर गाँधी ने लोगों से अपने उपयोग के लिए चावल का उत्पादन खुद शुरू करने का आग्रह किया था। गाँधी का विचार था कि भोजन के साथ आत्मीयता- जैसाकि अपने कपड़े खुद से बनाने पर भी होता है- व्यक्तिगत से लेकर सामुदायिक और राजनीतिक स्तर पर उन विकल्पों को काम में लेने की संभावनाएं पैदा करती है जो सामाजिक और पर्यावरण की दृष्टि से अधिक स्थायी है (सैनफोर्ड, 2013)। जैसा कि हम अभी देख रहे हैं, तब भी इस बात को स्वीकारा गया था कि उपभोक्तावादी दृष्टिकोण का प्रतिरोध और स्व-अनुशासन को काम में लेने की हमारी क्षमता ही स्थायी समाज के निर्माण की तरफ ले जा सकती है।

आज की जटिल और संघर्षपूर्ण दुनिया में रहने वाले नागरिकों के रूप में छात्रों को तैयार करने वाले शिक्षकों के तौर पर हमारा मानना है कि आत्मनिर्भरता और स्वायतत्ता के विकास के बारे में गाँधी के विचार शिक्षा के लिए एक प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। ये हमें इस सीमा तक विचार करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं जहाँ हमारे शैक्षणिक प्रयास नए दृष्टिकोण के निर्माण और क्रियान्वयन दोनों के लिए एक मंच का काम कर सकेंगे।

1. विश्व बैंक द्वारा दिए आँकड़े (https://www.worldbank.org/en/topic/poverty/overview), 12 अप्रैल, 2020 को अपडेट किए गए थे।

गाँधीवादी विचार के साथ हमारे अनुभव

गाँधी के विकास के दर्शन के साथ हमारा जुड़ाव नब्बे के दशक की शुरुआत में उन महत्वपूर्ण अनुभवों की बदौलत हुआ था जब हमें तमिलनाडु के दो गाँधीवादी समूहों के साथ जुड़ने का अवसर मिला। हमारा एक अनुभव एसोसिएशन फॉर सर्व सेवा फॉर्म्स (ASSEFA), जो एक आंदोलन होने के साथ ही एक गैर-सरकारी संगठन भी था, के साथ विकसित साझेदारी से निकला था। यह आंदोलन गाँधी की भारत को आत्मनिर्भर गाँवों के समुदाय के रूप में देखने वाली संकल्पना से प्रेरित था। ASSEFA का जन्म बीसवीं शताब्दी के अस्सी के दशक में अनुपजाऊ और बंजर भूमि को विकसित करने में भूमिहीन किसानों की सहायता करने, और पचास के दशक में आचार्य विनोबा भावे द्वारा भूदान में एकत्रित भूमि[2] को कृषि के काम में लेने के उद्देश्य से हुआ था। धीरे-धीरे ASSEFA ने समुदाय को सहयोग देने के लिए अपने मूल दृष्टिकोण में बदलाव किया और समन्वित कार्यक्रमों की एक शृंखला के साथ इसका विस्तार खाद्य उत्पादन, व्यापार और शिक्षक शिक्षा तक हो गया। हालाँकि, अब भी यह स्वतंत्रता, आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित स्वावलंबी, आत्मनिर्भर और स्व-शासित समुदाय की स्थापना के गाँधी के दृष्टिकोण को मार्गदर्शक सिद्धान्त[3] मानकर काम करता है। ASSEFA आज भी काफी सक्रिय हैं, लेकिन यह आर्थिक वैश्वीकरण के विनाशकारी प्रभावों के साथ-साथ वर्तमान भारत सरकार की नवउदारवादी राजनीति से भी जूझ रहा है।

दूसरा अनुभव हम में से कुछ लोगों (कोलूकी और कैमिनो) के वर्ष 1998-2000 के बीच हुए अहिंसात्मक आंदोलन में शामिल होने से जुड़ा हुआ है- तमिलनाडु के समुद्री तट पर सघन झींगा पालन के नए स्थापित उद्योग के कारण हो रही पर्यावरण की हानि के खिलाफ यह अहिंसक संघर्ष गरीब मछुआरों और भूमिहीनों के एक छोटे समूह द्वारा किया गया था। निर्यात के लिए खाद्य उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य को बढ़ावा देने वाली अंतर्राष्ट्रीय कृषि नीतियों के सहयोग से, तटीय मैंग्रोव जंगलों की जगह पर झींगा पालन के खेत तैयार किए गए। नए उद्योग की स्थापना ने कृषि कार्यों के लिए ताजे भूजल के स्तर को घटाया, और झींगों के लिए औद्योगिक रूप से तैयार भोजन और दवाईयों के अपशिष्टों और प्रदूषकों के स्थानीय जल प्रणालियों में निस्तारण ने प्रदूषण की समस्या को बढ़ाया (गोविंदराजन, 2017 पृ. 1)। अस्सी वर्षीय गाँधीवादी कार्यकर्ता जगन्नाथन के नेतृत्व में संचालित इस अहिंसक विरोध ने भारत के सर्वोच्च न्यायालय का ध्यान आकर्षित किया, जिसने 1994 में तट से 500 मीटर के भीतर झींगों की खेती को बंद करने का आदेश दिया।

गाँधी, अनसुने अग्रदूत

आज तक, झींगा पालन अपने पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों के कारण विवादास्पद बना हुआ है (नारायण, 2014) और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा हो रहे पर्यावरणीय संसाधनों के दुरुपयोग के खिलाफ स्थानीय लोगों के विरोध प्रदर्शन की संख्या में इजाफा हो रहा है (ह्वाइट, 2016)। अनियंत्रित शहरीकरण, उपजाऊ भूमि का आकस्मिक ह्रास और बढ़ती सामाजिक असमानताएं इस बात की साक्षी हैं जिसका अनुमान गाँधीजी ने लगाया था; ऐसी आर्थिक प्रणाली के परिणाम विनाशकारी होंगे, जिसमें मानव कल्याण और पृथ्वी के बीच के संबंधों की अंतरनिर्भरता का ध्यान नहीं रखा गया। सामाजिक-पर्यावरणीय विवाद के साथ जुड़ने और झींगा पालन के खिलाफ हो रहे संघर्ष की अहिंसक प्रकृति ने हमें शिक्षा को लेकर गाँधी के विचारों के निहितार्थ को समझने के लिए प्रोत्साहित किया। जिसमें ख़ासकर विज्ञान, शिक्षा और पर्यावरण के बीच के महत्वपूर्ण संबंधों का विश्लेषण शामिल था।

हिंदू परंपरा में अहिंसा को किसी भी प्राणी के प्रति हिंसा ना करने के रूप में देखा जाता है। अहिंसा केवल मनोवैज्ञानिक या शारीरिक हिंसा के सभी रूपों का परित्याग नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण है जो जीवन के सभी रूपों में परमात्मा की उपस्थिति को स्वीकारने से उपजता है। अहिंसा सभी प्राणियों के लिए सम्मान की माँग

---

2. 'भूदान' में दी गई भूमि संपन्न जमींदारों द्वारा भूमिहीन लोगों को खेती करने के उद्देश्य से दान दी गई थी।
3. Assefa India Report 2019/2020. SOCIAL SOLIDARITY ECONOMY: THE GANDHIAN PATH

करती है और आत्म-अनुशासन और आत्म-बलिदान के कार्य में सत्य और आत्म-परिवर्तन का अवसर निहित है। गाँधी ने राजनीतिक क्षेत्र में अहिंसा का विस्तार सत्याग्रह के रूप में किया- जो उत्पीड़क के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध था- जो ताकत की बराबरी पर आधारित है, और जिसका उद्देश्य दोनों पक्षों के बीच के संबंधों की प्रकृति में परिवर्तन लाना है, ताकि दोनों का हित (सर्वोदय) हो सके। इनके आधार पर, हमारा चिंतन ख़ास तौर से 'शक्तिशाली' ज्ञान की प्रकृति और उद्देश्य की समस्याओं को उजागर करना था - जैसे स्कूलों में विज्ञान-शिक्षा पाठ्यक्रम के अंतर्गत सिखाई जा रही ऐसी अवधारणाओं और विचारों को चिह्नित करना जिनका उद्देश्य भविष्य के मज़दूर और इस पृथ्वी के वासी के रूप में युवा नागरिकों का निर्माण करना है (कोलूकी-ग्रे और कैमिनो, 2016)। हमने इस बात पर विचार किया कि कैसे एक तरफ़ इस तरह के विशिष्ट ज्ञान प्राकृतिक दुनिया के बारे में विस्तृत और मात्रात्मक जानकारी प्रदान करते हैं, जैसे कि झींगे के जीव विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान, उनके विकास की दर, उनके उत्पादन के लिए 'अनुकूलतम' जलवायु परिस्थितियों आदि की जानकारी; और दूसरी तरफ़ इसने ऐसी विनाशकारी कृषि पद्धतियों में भी मदद की है जिन्होंने मानव को अपने भोजन के स्रोत से ठीक उसी तरह दूर कर दिया है जैसे उन्होंने आजीविका के लिए अपने पर्यावरण पर निर्भर स्थानीय लोगों के ज्ञान और अनुभवों को हाशिए पर डाल दिया था।

यह भी उल्लेखनीय है कि वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से, 'नए विज्ञान' के आह्वान में यह शामिल है कि वह बायोस्फीयर में अपनी 'जगह' के बारे में अधिक जागरूक और सचेत हो जो सहभागितापूर्ण और संवादात्मक हो, साथ ही साथ एक 'धीमा' विज्ञान हो जिसे डर ना लगता हो ''...मंद गति से चलने और ऐसे सवालों पर समय ख़राब करने से जिनका सीधे-सीधे तात्कालिक परिस्तिथियों और विषय-क्षेत्र की प्रगति से कोई सरोकार ना हो'' (स्टेनजर्स 2017, पृ. 1)। यह नजरिया 'तीव्र विज्ञान' के विपरीत है, वो 'तीव्र विज्ञान' जो प्रभावी ज्ञान के संचय को बढ़ावा देने, एक ही लीक पर चलने और न केवल विषयों के बीच के, बल्कि औपचारिक और अनौपचारिक ज्ञान और सीखने और अनुभव के बीच संबंध को नकारता है। गाँधी की अंतर्दृष्टि और अहिंसा, सत्याग्रह और सर्वोदय के बारे में उनके विचारों का अनुसरण करने के बाद, हमारे शैक्षिक प्रश्न प्रभावशाली ज्ञान को बेहतर तरीके से बच्चों तक स्थानांतरित करने की बजाय इस दिशा में मुड़ गए थे कि दुनिया को समझने और इसमें रहने की प्रक्रिया में हम किस सीमा तक बदलाव ला सकते हैं और इस प्रकार हम रचनात्मक और समालोचनात्मक जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया में वे शैक्षिक तरीके और अनुभव कैसे विकसित कर सकते हैं जहाँ ज्ञान परिस्थिति और लोगों के जीवन से जुड़ा हुआ हो?

चित्र 1 : स्कूल का उद्यान

बच्चों की शिक्षा को लेकर गाँधीवादी दृष्टिकोण

इन सवालों और हमारे रोज़मर्रा के सीखने के तरीकों में अहिंसा के स्थान ने हमें विज्ञान शिक्षा के उद्देश्यों और साथ ही इसके तरीकों के बारे में मूलभूत मान्यताओं पर सवाल करने के लिए प्रेरित किया। लगभग 50 वर्षों से, जब से औद्योगिक पैमाने पर झींगा पालन की शुरुआत हुई, हम अभी भी खाद्य और गरीबी की समस्या से जूझ रहे हैं, जिसे अब 13 सतत विकास लक्ष्यों में से प्रमुख लक्ष्य के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस पूरे परिदृश्य ने अपने स्कूलों के बगीचे में प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों द्वारा अपना भोजन उगाने की

पायलट पहल में हमारी भागीदारी के लिए संदर्भ प्रदान किया (ग्रे, कोलूकी-ग्रे एट अल., 2019)। स्कॉटलैंड के एबरडीन शहर की परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त इस परियोजना को विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, आर्थिक सुधार वाले क्षेत्रों के 3 प्राथमिक स्कूलों और सामुदायिक खेती को बढ़ावा देने वाले स्थानीय स्वैच्छिक संगठन 'वन सीड फॉरवर्ड' के बीच एक साझेदारी के रूप में स्थापित किया गया था। देखा जाए तो यह विचार नया नहीं था क्योंकि कृषि साक्षरता स्कूलों में पुनरुद्धार के दौर से गुजर रही है; 'बागवानी को अब बच्चों की भोजन की खाद्य चेतना बढ़ाने और ताजा भोजन के साथ बच्चों के रिश्तों को फिर से जीवंत करने के लिए बुनियादी प्रभाव में से एक के रूप में देखा जाता है' (ग्रीन और दुहन, 2015, पृ. 2)।

चित्र 2 : 'स्पर्श'

फिर भी, गाँधी और उनके अनुयायियों द्वारा आत्म-निर्भरता (स्वराज) का समर्थन करने के संघर्ष के लिए शुरू किए गए प्रदर्शन की तरह ही, हमारी परियोजना भी ना केवल भोजन उत्पादन के प्राथमिक स्रोत के तौर पर बल्कि शिक्षा और सीखने के लिए भी भूमि को पुनः प्राप्त करने के आग्रह के साथ शुरू हुई। वस्तुतः खाँचों में विभाजित पाठ्यक्रम के ढाँचे को दरकिनार करते हुए, परियोजना ने मिट्टी, जलवायु, मौसम और प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष अनुभव की अहमियत को पुनः तलाशने की कोशिश की। यह हमारी परियोजना में एक महत्वपूर्ण मोड़ था क्योंकि इसने पाठ्यक्रम को देखने की एक अलग दृष्टि दे दी थी। पाठ्यक्रम वह नहीं है जो लिखित, दिया गया या निर्धारित है बल्कि यह उस वातावरण, जिसमें हम रहते हैं और जिस पर निर्भर हैं, के साथ अनुभव के दौरान 'निर्मित' होता है। हमने बच्चों और उनके शिक्षकों के साथ स्कूल के बगीचों को विकसित करने के लिए काम किया। हमने मिलकर तय किया कि कौनसी सब्ज़ियाँ उगानी हैं और कक्षा-कक्ष और बगीचे में होने वाली गतिविधियों के लिए सामग्री विकसित की हैः

''(हमने सीखा)... कि पौधों को सावधानीपूर्वक कैसे लगाया जाए। ऐसा नहीं कि एक गड्ढा है और जिसमें पौधे को घुसा दिया। आप इसे अच्छी तरह से और सावधानी से करते हैं।'' (बच्चा, उम्र 9)

विनोबा भावे ने शिक्षा के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि, ''ज्ञान-प्राप्ति के लिए इंद्रियों का प्रशिक्षण पहला और महत्वपूर्ण कदम है'' (1985, पृ. 35)। इन्द्रियों की शिक्षा से बच्चों को उस पर्यावरण से पहले सीधी प्रतिक्रिया प्राप्त होती है जिसमें वे रहते हैं; वे इस बारे में जानना सीखते हैं कि उन्हें किससे सुरक्षा और पोषण मिलता है; उनका अस्तित्व किस पर निर्भर करता है।

इस तरह अनुभव करना पृथ्वी पर अपने जीवन की परिस्थितियों को समझने के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है जिसमें धैर्य और सावधानी से अवलोकन करने के साथ ही घटनाओं के बीच के संबंधों को भी ध्यान में रखना शामिल है, जो एक तरह से वैज्ञानिक ज्ञान के नैतिक पक्ष को समृद्ध करता है (ब्रूक्स, 1998)। ये विचार संज्ञान की समकालीन समझ के बेहद अनुरूप हैं, गैलगर और लिंडग्रेन (2015) के अनुसार संज्ञान का अर्जन केवल एक मस्तिष्क में होने वाली घटना नहीं है, बल्कि यह मस्तिष्क-शरीर-पर्यावरण की अंतःक्रियाओं के माध्यम से उत्पन्न और विकसित होता है। हाथ और स्पर्श का उपयोग करके समझना (चित्र 2) अपने पर्यावरण की जानकारी और समझ दोनों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्पर्श प्रभाव डालने वाली पहली इंद्रिया होती हैं जिसके माध्यम से हम मानव के रूप में अपने आस-पास की दुनिया को महसूस करने और समझने में कुशल हो जाते हैं। स्पर्श के माध्यम से हम पदार्थ के प्रतिरोध को महसूस कर सकते हैं; पैरों तले जमीन को; भोजन की संरचना को महसूस कर सकते हैं, ऐसे तरीके जो अपने वातावरण के साथ 'सामंजस्य' और 'सह-सृजन' की भावना को मज़बूत करते हैं। और गाँधी ने यही बात

दोहराई थी; ''हमारी शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन की ज़रूरत है। हाथ के माध्यम से मस्तिष्क को शिक्षित किया जाना चाहिए (...)। (हरिजन, 18-2 '39, पृ. 14-15, जोशी में उद्धृत, 2002)।

उद्यान परियोजना ने हमें शिक्षा के बारे में गाँधी के क्रांतिकारी संदेश पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया। मानकीकृत आकलनों के माध्यम से संचालित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा की वर्तमान व्यवस्था एक ऐसी प्रणाली है जो बहिष्कार करने और सामाजिक विभाजनों के पुराने तरीकों को मजबूत करते हुए इन्हें बढ़ावा देती है। ऐसे में स्कूल के बगीचों को सुधारात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है, और इसे उन विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त मान लिए जाने का ख़तरा है जो पर्याप्त अकादमिक नहीं हैं। इस दृष्टि से यह वैचारिक और शारीरिक गतिविधियों को अलग करके देखने वाले कार्टेशियन विभाजन को मज़बूत करती है। इसके विपरीत, गाँधी के मस्तिष्क, हृदय और हाथ के दर्शन को यदि अपनाएं तो यह इन बगीचों एक तरह से पुनर्जीवित करता है, इन्हें नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर देता है और बुनियादी शिक्षा देने के लिए इन्हें एक संदर्भ की तरह पेश करता है; अंत्योदय (सबसे कमजोर का उत्थान), स्वराज (स्व-शासन) और श्रमदान (श्रम का उपहार)।

आगे के विचार

यह स्पष्ट है कि गाँधी की दृष्टि में शिक्षा आम लोगों की भीड़ में से कुछ उत्कृष्ट लोगों को आगे बढ़ाने के लिए नहीं थी। शारीरिक श्रम को शैक्षिक अभ्यास में शामिल किया जाना था, ताकि विशेषज्ञों के तौर पर वैज्ञानिकों और आम लोगों के बीच ज्ञान का कोई पदानुक्रम न बन जाए (प्रसाद, 2001)। ऐसे फर्क को पहचानना ही शिक्षा के लिए चुनौती है। यह शिक्षकों के रूप में अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर सीखने और धरती से सीखने की क्षमता पर सवाल खड़े करता है; स्वयं के बारे में भी उतनी ही जानकारी होने पर ध्यान देना जितना पाठ्यक्रम का ज्ञान है। जैसा कि विनोबा भावे ने माना है कि यदि भौतिक नियमों के ज्ञान (विज्ञान) को स्वयं के ज्ञान (आत्म ज्ञान) के साथ जोड़ा जाता है तो इस स्थिति में शिल्प के माध्यम से शिक्षा एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु साबित हो सकती है - तब सर्वोदय के लक्ष्य (सभी के लिए कल्याण) को हासिल किया जा सकता है (हार्ट, 1992)। उद्यान परियोजना ने नवउदारवादी ताकतों का विरोध किया, जो शिक्षा को पूंजीवादी शोषण की कमियों को दूर करने के तरीके के तौर पर देखती है। बच्चों को सामुदायिक भागीदारी के केंद्र में रखते हुए, उद्यान परियोजना साझे अनुभव से सीखने की दिशा में एक प्रयोग था, जो नए विचारों और रचनात्मक प्रतिरोध के नए रूपों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता है। ◆

लौरा कोलुसी-ग्रे : मोरे हाउस स्कूल ऑफ एडुकेशन एंड स्पोर्ट, द युनिवर्सिटी ऑफ एडिनबर्ग (यूके)
संपर्क : Laura.Colucci-Gray@ed.ac.uk

एलेना कैमिनो : सेंट्रो स्टडी सेरेनो रेजिस, ट्यूरिन, इटली
संपर्क : elenacamino1946@gmail.com

डोनाल्ड ग्रे : स्कूल ऑफ एडुकेशन, युनिवर्सिटी ऑफ एबरडीन, यूके
संपर्क : d.s.gray@abdn.ac.uk

(उपरोक्त तीनों ही लेखक अपने वर्तमान संस्थान के साथ-साथ इंटर-युनिवर्सिटी रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑन सस्टेनेबिलिटी (आईआरआईएस), युनिवर्सिटी ऑफ ट्यूरिन, इटली से भी जुड़े हुए हैं।)

संदर्भ

भावे, वी. (1985): विनोबा: *थौट्स ऑन एडुकेशन*, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

ब्रूक्स, आई. (1998): गोथियन साइन्स एज ए वे टू रियल लैंडस्केप. लैंडस्केप रिसर्च, 53 (1), पेज 51-69।

कोलूकी-ग्रे, एल., कैमिनो, ई. (2016): लुकिंग बैक एंड मूविंग साइडवेज़: फॉलोइंग द गांधीयन एप्रोच एस द अंडरलाईंग थ्रेड फॉर ए सस्टेनेबल साइन्स एंड एडुकेशन. विजन फॉर सस्टेनेबिलिटी, 6 : 23-44

गैलेगर, एस., लिंडग्रेन, आर. (2015): इनएक्टिव मेटाफर्सः लर्निंग थ्रू फुल-बॉडी एंगेजमेंट. एडुक साइकोल रेव, 27, 391 404. https://doi.org/10.1007/s10648-015-9327-1

ग्रीन, एम. एंड डून, आई. (2015): द फोर्स ऑफ गार्डनिंगः इनवेस्टिगेटिंग चिल्ड्रेन्स लर्निंग इन ए फूड गार्डन. *ऑस्ट्रेलियन जर्नल एन. एडुकेशन,* oi: 10.1017 / aee.2014.45

गोविंदराजन, वी.(2017): शृम्प फॉर्मिंग इज ब्लूमिंग इन तमिलनाडु - बट इट इज कॉजिंग वॉटर एंड सॉइल पोल्यूशन. उपलब्ध हैः

https://scroll-in/article/836294/shrimp-farming-is-booming-in-tamil-nadu-but-the-cost-is-water-and-soil-contamination)

ग्रे, डी., कोलूकी-ग्रे, एल., डोनाल्ड, आर., किरियाकौ, ए., एंड वोडा, डी. (2019): फ्रोम ऑइल टू सॉइल. लर्निंग फ्रोम सस्टेनेबिलिटी एंड ट्रांजिशन विथइन द स्कूल गार्डेनः ए प्रोजेक्ट ऑफ कल्चरल एंड सोश्लरी-लर्निंग. स्कॉटिश एडुकेशनल रेव्यू, 51(1), 57-70.

हार्ट, आर.ए.(1992): चिल्ड्रेन्स पार्टीसिपेशन फ्रोम टोकनिज्म टू सिटीजनशिप. इनोसेंट एसेस (वॉल. 4). https://doi.org/88-85401-05-8)

होगेट, पी. (2019): जलवायु मनोविज्ञान. आपदा के प्रति उदासीनता पर. लंदनः पालग्रेव मैकमिलन।

जोशी, डी. (2002): गाँधीजी ऑन विलेजेस. मुंबईः मेघश्याम टी.अजगांवकर, एक्सीक्यूटिव सेक्रेटरी मणि भवन गाँधी संग्रहालय. उपलब्ध हैः

http://www.gandhiashramsevagram.org/gandhi-on-villages/chapter-07-education-for-villages.php

कुमार, आर. (2002): थियरि एंड प्रैक्टिस ऑफ गाँधीयन नॉन-वायोलेंस. नई दिल्लीः मित्तल पब्लिकेशन्स.

नारायण, एस. (2014): हाउ थाईलैंड्स डाईंग शृम्प आर किलिंग एन इंडियन विलेज. नोवा साइंस, उपलब्ध हैः

https://www.pbs.org/wgbh/nova/article/shrimp-pokkali/

प्रसाद, एस.(2001): टूवर्ड्स एन अंडरस्टैंडिंग ऑफ गाँधी'स व्यूज ऑन साइन्स. इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 36 (39), पीपी. 3721-3732.

सैनफोर्ड, ए.डब्ल्यू. (2013): गाँधी'स एग्रेरियन लीगेसीः प्रेक्टिसिंग फूड, जस्टिस, एंड सस्टेनिबिलिटी इन इंडिया. जेएसआरएनसी, 7 (1), पेज 65-87. doi: 10.1558/jsrnc.v7i1.65

स्टेंजर्स, आई (2017): अनदर साइन्स इज पॉसिबलः ए मेनिफेस्टो फॉर स्लो साइंस. लंदनः पॉलिटी प्रेस.

व्हाईट, के. पी. (2016): इंडीजीनस एनवायरनमेंटल मूवमेंट्स एंड द फंक्शन ऑफ गवर्नेंस इन्स्टीट्यूशन्स. द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ एनवायरनमेंटल पोलिटिकल थियरि; जनवरी. 2016. DOI: 10.1093 / ऑक्सफोर्ड/9780199685271.013.31

ज़ापातिस्ता - एक अनोखे समाज की गाँधीवादी शिक्षा

कृति गुप्ता और पल्लवी वर्मा पाटिल

''संघर्ष और निर्माण की कोशिशों के लिए ना तो नेताओं, ना ही मालिकों, ना ही मसीहा और ना ही उद्धारकर्ता आवश्यक हैं। एक आंदोलन के लिए चाहिए थोड़ी शर्म की भावना, थोड़ी गरिमा और बहुत सारा संगठन बनाने का काम।'' - सबकमाण्डेंट मार्कोस, ज़ापातिस्ता के मुख्य नेता

ज़ापातिस्ता मेक्सिको देश के चियापास राज्य में आदिवासियों का 25 से अधिक वर्षों से चल रहा एक आंदोलन है। ये आंदोलन हालाँकि, मैक्सिकन राज्य और पुलिस के साथ एक हिंसक झड़प के साथ 1 जनवरी 1994 मे शुरू हुआ था, पर अब यह एक शांतिपूर्ण आंदोलन है। ऐसा आदोलन जो औद्योगिक सभ्यता के विरुद्ध, एक नए समाज के निर्माण के लिए कार्यरत है। यह आंदोलन आदिवासी वैश्विक नज़रिये पर आधारित है तथा जीवन के सभी पहलुओं- राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी- के क्षेत्र में एक विकल्प निर्माण करने के प्रयास में जुटा है। विशेष रूप से, यह पितृसत्ता के शोषण के सभी रूपों के ख़िलाफ़ एक वैकल्पिक दुनिया बनाने का भी प्रयास कर रहा है।

यह आज दुनिया में इस प्रकार का सबसे बड़ा आंदोलन है जिसमें 1000 गाँव और लगभग 3.5 लाख लोग जुड़े हैं, जिनमें 7 भिन्न-भिन्न भाषाओं की आदिवासी जनजातियाँ भी शामिल हैं। ज़ापातिस्ता आंदोलन से जुड़े आदिवासी अपनी पहचान एक लाल रुमाल और काले 'स्की-मास्क' से बनाते हैं। वे अपना मुँह अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए ढकते हैं - "We are invisible so you can see us!"

ज़ापातिस्ता समाज ने आदिवासी सभ्यता के मूल सिद्धांतों को सामने रखने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है- जसमें प्रकृति का संरक्षण और समाज का संघटन प्रथम स्थान पर है। इसके साथ ही उन्होंने महिलाओं के नेतृत्व को प्रोत्साहन दिया है। उनके वैकल्पिक समाज में, सभी की बातों को ध्यान से सुनना, ठीक से समझना, किसी भी व्यक्ति को ऊँच-नीच का दर्जा न देना, और सभी को उनकी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाते हुए समाज के सभी काम सीखना, महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ज़ापातिस्ता के 1000 गाँवों का संचालन थ्री टीयर (तीन स्तरीय) सरकार के द्वारा होता है : गाँव के स्तर पर ग्राम सभा, गाँव के ऊपर एक नगर पालिका जिसे मारेज़ (Marez) कहते हैं (प्रत्येक मारेज़ में लगभग 35

गाँव शामिल हैं); और फिर जिला के स्तर पर कारकोलेस (Caracoles) (प्रत्येक कारकोलेस में लगभग 5 मारेज़ शामिल हैं)। अपनी इस सरकार को वे अच्छी सरकार (Good Government) कहते हैं, जो कि मेक्सिको सरकार के बिलकुल विपरीत है।

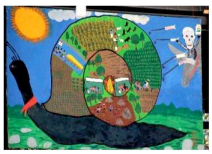

अच्छी सरकार का मतलब है कि यहाँ कोई भी किसी को निर्देश नहीं देता, हर निर्णय आपसी सहमति और लोकतांत्रिक तरीक़े से लिया जाता है। ज़ापातिस्ता के जीवन दर्शन में विकास का मतलब है धीर-धीरे आगे बढ़ना और इसलिए उन्होंने अपने आंदोलन का प्रतीक चिह्न एक ''घोंघा'' चुना है।

अगर इन सब बातों को ध्यान से समझा जाये तो यह सब बहुत तरह से गाँधीजी के 'स्वराज' की कल्पना से मेल खाते हैं और जिस तरह से गाँधीजी की नई तालीम की संरचना स्वराज को ध्यान में रख कर की गई थी, उसी तरह से ज़ापातिस्ता की शिक्षा प्रणाली की संरचना भी उनके नए प्रकार के समाज को बढ़ाने में मदद करती है।

इस लेख में हमने आपको ज़ापातिस्ता की शिक्षा प्रणाली की एक छोटी-सी झलक देने का प्रयास किया है।

ज़ापातिस्ता समाज ने जब एक वैकल्पिक दुनिया बनाने का निर्णय किया तब से वे चाहते थे कि उनके बच्चे सामूहिकता की सराहना करें, अपने आदिवासी संघर्ष की वास्तविकता और इतिहास के बारे में जानें और ये भी समझें कि उन्हें एक-दूसरे के साथ सेवाभाव से रहना है। इस शिक्षा प्रणाली की सबसे ख़ास बात यही है कि यह उनकी संस्कृति के मूल्यों का समावेश है।

इन्हीं सब बातों को आधार बनाते हुए और साथ मिलकर सीखने-सिखाने के लिए उन्होंने अपनी शिक्षा प्रणाली की रचना की और 2001 में (आंदोलन के 7 सालों के बाद ही) उन्होंने पहला ज़ापातिस्ता स्कूल स्थापित किया। यह एक स्वचालित शिक्षा प्रणाली है जहाँ अपने ही शिक्षक, अपना ही पाठ्यक्रम, अपनी ही भाषा और अपनी ही पुस्तकें हैं।

हर एक मारेज़ में समुदाय की मदद से स्कूल बनाया जाता है। प्रत्येक स्कूल की शिक्षा प्रणाली अपने मारेज़ के गाँवों की आवश्यकता के अनुसार बनायी जाती है। इस शिक्षा प्रणाली पर पूर्णतः ज़ापातिस्ता समाज का ही अधिकार है और मेक्सिको देश की शिक्षा से उसका कोई संबंध नहीं है।

अलग-अलग शिक्षा प्रणालियों के होते हुए भी कुछ विशेषताएं ऐसी भी हैं जो सभी ज़ापातिस्ता स्कूलों में समान है, जैसे कि:

- स्कूल सभी के लिए मुफ़्त हैं, यहाँ कभी कोई फीस नहीं ली जाती।
- यहाँ बच्चे और बड़े सब साथ पढ़ते हैं, उम्र की कोई सीमा नहीं है।
- स्कूलों में प्राथमिक भाषा के रूप में मातृभाषा का उपयोग किया जाता है।
- छात्रों को वर्दी का पालन करने के बजाय अपने पारम्परिक कपड़े पहनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- लिंग के आधार पर स्कूलों में कोई भेदभाव नहीं होता।
- परम्परागत शिक्षकों (Conventional Teachers) के बजाय, ''शैक्षिक प्रचारक'' (Education promoters) बच्चों को पढ़ाते हैं। उन्हें शैक्षिक प्रचारक इसलिए कहते हैं क्योंकि वे सभी एक साथ काम करते हैं और एक-दूसरे को सिखाते हैं।

- प्रचारक छात्रों के समान भाषा बोलते हैं और समुदायों द्वारा चुने जाते हैं। उन्हें इस काम के लिए कोई तनख्वाह नहीं मिलती है क्योंकि ज़ापातिस्ता समुदाय में ''शिक्षा उन लोगों के एक कर्तव्य के रूप में देखी जाती है जो उसे 'जानते हैं' और 'अधिकार' उन लोगों के लिए जो नहीं''।
- वेतन के बजाय, प्रचारकों को स्थानीय समुदायों द्वारा आश्रय, भोजन और कपड़े जैसी आवश्यकताओं के लिए सहायता मिलती है।
- अनुभवी प्रचारक नए प्रचारक को तैयार करने में समुदाय की सहयता करते हैं और इसी तरह यह पद्धति आगे बढ़ती है।
- ज़ापातिस्ता के प्रचारक का मानना है कि सीखना एक साझा अनुभव है-

  ''यहाँ हम एक-दूसरे से सीखते हैं। ऐसा नहीं की प्रोत्साहक सब जानता है। छोटे से छोटा बच्चा भी कुछ सिखा सकता है।''
- ये स्कूल ''पहले अभ्यास, फिर सिद्धांत के दृष्टिकोण'' का पालन करते हैं। सामूहिक रूप से, अच्छी सरकार, समुदायों और प्रवर्तकों की परिषदें तय करती हैं कि छात्रों को क्या सीखना चाहिए, कैसे सिखाया जाना चाहिए, और उनके सीखने का मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए।
- स्कूल से यह उम्मीद की जाती है कि सभी छात्र अपनी पहली भाषा के साथ-साथ स्पेनिश भाषा में पढ़ना और लिखना भी सीखें। उन्हें भाषा, गणित, इतिहास, संस्कृति, खेल, जीवन और पर्यावरण में भी कुछ अनुभव प्राप्त करने चाहिए ताकि बच्चे इन स्वायत्त स्कूलों में रहकर बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग न हो जाएं।
- अध्यापन-शास्त्र को बनाते वक्त इस बात का ख़ास ख़्याल रखा जाता है कि उसको लागू इस तरह से किया जाए जिसमें कक्षा के अंदर और बाहर की चीज़ें शामिल हों।

ज़ापातिस्ता की शिक्षा प्रणाली में यह समझ बनी है कि कुछ बातें स्कूल में नहीं आनी चाहिये जैसे किः

- किसी भी प्रकार का व्यक्तिवाद, प्रतियोगिता, या व्यवसायिक उद्यम को नहीं सिखाना है।
- सीखने की प्रक्रिया में शर्म का कोई स्थान नहीं है।
- बच्चों को मारना, किसी तरह की सज़ा, और किसी भी तरह का अनादर-तिरस्कार करना सख़्त मना है।

फिर किन मूल्यों को सिखाएं ?

- अपने काम और समझ से भूमंडल की रक्षा करें।
- समुदाय में ज़िम्मेदारी के साथ सबके भले के लिए काम करें।
- बच्चे मुक्ति और स्वाभिमान के बारे में सीखें।
- और हरेक मनुष्य को आदर देना सीखें।

यूनिटिएरा विश्वविद्यालय - पृथ्वी का विश्वविद्यालय

जब ज़ापातिस्ता समुदाय ने स्कूलों के लिए अवधारणा बनाई थी, तब से लेकर एक लम्बे अरसे तक एक सवाल जीवित रहा और वो यह था कि जब बच्चे स्कूल में जो पढ़ाया जाता है वो सब पढ़ लेंगे, तब वो आगे की शिक्षा के लिए कहाँ पढ़ने जाएंगे?

1999 में स्वदेशी जनजातियों की इस आवश्यकता को महसूस करते हुए, गुस्तावो एस्टेवा और जेमी मार्टिनेज लूना ने ओक्साका नामक मेक्सिको के सबसे विविध और ग़रीब राज्य में यूनिटिएरा विश्वविद्यालय (पृथ्वी विश्वविद्यालय) की स्थापना की।

इस विश्वविद्यालय के संस्थापक आधुनिक शिक्षा प्रणाली और आधुनिक जीवन की अवधारणा की आलोचना करते हैं जो कि पश्चिमी ढाँचे पर आधारित हैं, जिसमें केवल मुद्रा, और आर्थिक लाभ पर ध्यान दिया जाता है। उनका मानना है कि यूनिटिएरा की दृष्टि प्राकृतिक वातावरण और प्राकृतिक सोच से आती है, जिसे किसी ऐसी वस्तु के रूप में नहीं देखा जा सकता जो कि किसी के द्वारा ख़रीदी या बेची जा सके। यह हमारी माँ है और हम उसके बच्चे हैं, यूनिटिएरा का एक समग्र दृष्टिकोण है। गुस्तावो एस्टेवा कहते हैं कि यहाँ गतिविधियाँ समुदाय की जरूरतों और रचनात्मकता के निरंतर प्रवाह पर अत्यधिक निर्भर हैं: ''हम उस चीज को साझा करना पसंद करते हैं जो लोग जानना चाहते हैं''।

यूनिटिएरा का सिलाई घर, पशु पालन घर और मक्का पीसने की मशीन

वर्तमान में, चियापास में स्थित यूनिटियरा विश्वविद्यालय 20 हेक्टेयर में फैला हुआ है और लगातार कम से कम 150 छात्र वहाँ अध्ययन करते हैं। यह एक स्वशासित युनिवर्सिटी है।

छात्र वो सभी कुछ सीख सकते हैं जो वो सीखना चाहते हैं, बिना किसी तय अनुक्रम के इस विश्वविद्यालय में सिलाई, बुनाई से लेकर प्रिंटिंग, यांत्रिकी, आर्किटेक्चर, गाना, बजाना और जूता बनाना तक के लिए अलग-अलग कक्षा घर है। एक पुस्तकालय और सेमिनार हॉल भी है। यह बिल्डिंग मिट्टी, और अन्य प्राकृतिक सामग्री से बनाई गई है; और पेड़-पौधे और पारम्परिक कला से सजाई गई है।

यूनिटिएरा विश्वविद्यालय सभी वर्ग के छात्रों को सीखने का अवसर प्रदान करना चाहते थे, लेकिन कुछ समय बाद, उन्होंने महसूस किया कि सभी स्वदेशी छात्र अपने शहर से ओक्साका में नहीं आ सकते क्योंकि उनके पास यहाँ पर्याप्त संसाधन और सुरक्षा नहीं है। इसलिए उन्होंने हर हफ़्ते अलग-अलग जगहों पर जाने का फैसला किया (चियापास भी उनमें से एक है) और वर्कशॉप दिए ताकि बच्चों को पढ़ने या सीखने में किसी भी तरीक़े की कठिनाइयों का सामना ना करना पड़े।

ज़ापातिस्ता समाज की शिक्षा आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की शिक्षा है। ठीक नई तालीम की तरह। अगर आज की दुनिया में नई तालीम की नई चेष्टाएं देखने में रुचि हो तो हम ज़ापातिस्ता समाज की शिक्षा प्रणाली को ज़रूर जाने।

जिस तरह 1994 में ज़ापातिस्ता ने अपने नारे ''या बास्ता!'' मतलब, ''अब, बस!'' से नए समाज की ओर कदम बढ़ाये थे, हमें भी, आज के संदर्भ में नई तालीम की ओर कदम बढ़ाने के लिए मेनस्ट्रीम शिक्षा को ''या बास्ता'' बोलना होगा! ◆

कृति गुप्ता : शिक्षकों के परिवार में जन्मी और पली-बढ़ी, कृति गुप्ता का झुकाव बहुत कम उम्र से शिक्षा की ओर था। अपनी रुचि को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से बैचलर इन एलीमेंट्री एडुकेशन किया है और कई संगठनों में स्वेच्छा से काम किया है, जिसमें एकलव्य, महिलाओं और स्वास्थ्य का एक संसाधन समूह, लोकपंचायत आदि शामिल हैं। हाल ही में, उन्होंने अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से डेवलपमेंट में मास्टर डिग्री पूरी की है। वह शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में रुचि रखती है।

संपर्क : kritiguptaa96@gmail.com

पल्लवी वर्मा पाटिल : 2013 से अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के विकास स्कूल संकाय में कार्यरत हैं। वे 'आज और कल के लिए नई तालीम', 'लिविंग यूटोपिया', 'फूड एंड न्यूट्रिशन इन एक्शन' शीर्षक वाले पाठ्यक्रम पढ़ाती हैं। वह युवा वयस्कों के लिए गाँधी रीडर की सह-लेखिका हैं। भोजन के इर्द-गिर्द पल्लवी की सक्रियता में फूड एंड आइडेंटिटी नामक एक कार्यशाला-आधारित पाठ्यक्रम शामिल है, जो शिक्षकों के एक नेटवर्क का समन्वय करता है जो भोजन के माध्यम से पढ़ाते हैं, और दि रागी प्रोजेक्ट नामक एक शहरी स्कूल में एक कृषि परियोजना का समन्वय करती हैं।

संपर्क : pallavi.vp@apu.edu.in

संदर्भ :

1. http://enlivenedlearning.com/category/universidad-de-la-tierra/
2. Gahman, Levi (2016) Dismantling neoliberal education: a lesson from the Zapatistas. Roar Magazine. Retrieved from https://roarmag.org/essays/neoliberal-education-zapatista-pedagogy/

चम्पारण में बुनियादी शिक्षा की पुनर्कल्पना

अदिति ठाकुर और शंकर पूर्बे

आदर्श बुनियादी विद्यालयों की विशेषता है कि उनमें प्रशासन एवं प्रबंधन का सामुदायिकरण होता है, जिसमें स्थानीय स्तर पर शिक्षकों और अभिभावकों की सहभागिता में स्थानीय समुदाय उनकी मदद करते हैं और सरकार तथा सामाजिक संगठन उनके पूरक होते हैं। किसी उपयोगी शैक्षिक परिवर्तन (Educational Transformation) के लिए पहली शर्त सभी हितधारकों (Stakeholders) (जिनमें बच्चे भी शामिल हैं) में आपसी सहयोग की भावना का विकास होना है। मगर ऐसा देखा जाता है कि शैक्षणिक संस्थाओं में कुछ चुनिंदा लोगों के आधिपत्य से न सिर्फ कर्मठ लोगों की अनदेखी होती है बल्कि जीवन शैली में परिवर्तन लाने वाले समग्र शिक्षा का भी अनुपालन नहीं हो पाता है।

सही उन्मुखीकरण के साथ छात्रों एवं शिक्षकों को आकर्षित करने की दोहरी चुनौती ने शैक्षिक परिवर्तन के लिये बुनियादी शिक्षा की पुनर्कल्पना (Re-imagining Basic Education towards Learning Transformation) को जन्म दिया ताकि सर्वोदय की मंजिल को पाने के लिये बुनियादी विद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका को समझा जा सके।

विकास प्रबंधन संस्थान (डी.एम.आई.) पटना ने पश्चिम चम्पारण जिले के गौनाहा प्रखण्ड के भितिहरवा गाँव के एक बुनियादी विद्यालय का चयन किया जिसकी स्थापना स्वयं गाँधी जी ने 1917 में की थी। डी.एम.आई. ने छात्रों, शिक्षकों तथा स्थानीय समुदाय के सहयोग से बुनियादी शिक्षा में परिवर्तन की पुनर्कल्पना की है जिसमें गाँधी जी के आदर्शों के साथ-साथ समसामयिक जरूरतों, आकांक्षाओं और विचारों का भी समावेश हो। अपने इस प्रयास में डी.एम.आई. भितिहरवा बुनियादी विद्यालय (नामांकित छात्रों की संख्या 465) के परिपोषण तथा भितिहरवा संकुल के बारह अन्य विद्यालयों (नामांकित छात्रों की संख्या 3796) एवं एक कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय (नामांकित छात्राओं की संख्या 100) मे बुनियादी शिक्षा की पुनर्कल्पना परियोजना की शुरुआत की गई। इस पहल के पीछे सोच यह है कि इन विद्यालयों को आदर्श विद्यालय के रूप में परिपोषित किया जाए ताकि अन्य विद्यालय भी उन मानदंडों के अनुरूप परिवर्तित हो सकें। डी.एम.आई ने प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, सामाजिक संगठनों तथा शिक्षा संस्थानों से निरंतर महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त करने हेतु एक नेटवर्क तैयार किया है ताकि इस दिशा में होने वाले प्रयास को मूर्त रूप दिया जा सके।

बुनियादी शिक्षा में परिवर्तन की पुनर्कल्पना को साकार करने के लिये डी.एम.आई ने निम्नलिखित लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित किया -

- उन गतिविधियों की संकल्पना जो वर्तमान पाठ्यक्रम से सामंजस्य रखते हुए बुनियादी शिक्षा के गाँधी जी के दृष्टिकोण पर आधारित हों एवं समसामयिक ज़रूरतों, आकांक्षाओं तथा अवसरों के लिए भी उपयुक्त हों।

- विद्यालय के शिक्षकों में से ऐसे शैक्षिक सुगमकर्ताओं (Facilitators) का विकास, जो बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों का प्रभावी विकास कर सकें।
- सीखने के लक्ष्यों तथा मानकों को प्रभावी बनाने के लिये माता-पिता सहित स्थानीय समुदाय को प्रेरित करना।
- उस परिवर्तन की प्रतिकृति को कुछ अन्य बुनियादी विद्यालयों में लागू करना जिन्हें भितिहरवा के बुनियादी विद्यालय में शुरू किया गया है।
- इस प्रयास को आगे बढ़ाने के लिये शिक्षाविदों एवं शिक्षा प्रशासकों के एक फोरम का विकास।

प्रारंभ

परियोजना के सदस्यों ने शुरूआत में परिवेश को समझने का प्रयास किया। इस क्रम में संकुल के सभी स्कूलों का भ्रमण, शिक्षकों और अभिभावकों से संवाद तथा उन्हें परियोजना के उद्देश्य को समझाने में मदद करना, छात्रों की अभिरुचि एवं उनसे संवाद जैसे कार्य किए। परियोजना टीम ने संकुल के सभी 13 विद्यालयों के भ्रमण के क्रम में बच्चों की वर्तमान शैक्षणिक स्थिति, स्कूलों में छात्रों तथा अध्यापकों की औसत उपस्थिति, शिक्षकों के शैक्षणिक कौशल एवं विद्यालयों का बुनियादी ढाँचा; इन सभी का अध्ययन किया तथा परियोजना की रूपरेखा तैयार की। शिक्षकों से संवाद के क्रम में संसाधनों के परस्पर लेन-देन, आपसी सहयोग तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पर भी चर्चा हुई।

समुदाय के साथ संवाद

बेसलाईन सर्वे

एक व्यापक सर्वे किया गया जिसमें सभी 13 गाँवों के सभी घरों के 5 से 14 वर्षों तक के बच्चों के शैक्षणिक स्तर की जाँच की गई। मुख्य रूप से इस सर्वे का प्रयोजन साधारण गणितीय कौशल तथा अनुच्छेद पढ़ सकने की क्षमता का अध्ययन करना था। इस प्रयास में अभिभावकों के शैक्षणिक स्तर की पहचान भी की गई तथा यह भी ज्ञात हुआ कि छात्रों में शिक्षा से पलायन की वजहें कौन-कौन सी हैं एवं अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति कितने जागरूक एवं गंभीर हैं।

महत्वपूर्ण अंतःक्षेप (Key interventions)

शुरुआती आंकलन के आधार पर डी.एम.आई ने अंतःक्षेप (interventions) के लिए एक आदर्श संकुल की परिकल्पना की जिसमें पाठयक्रम, विद्यार्थी, समुदाय, शिक्षक आपस में एक-दूसरे से जुड़े हों और परस्पर सहयोग प्रदान करते रहें।

गाँधी जी ने अपने नई तालीम में 'काम के क्रम में सीखने' (Learning by doing) के सिद्धांत को बुनियादी शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण अंग माना था। डी.एम.आई ने गाँधी जी के

इस सिद्धांत के आधार पर कुछ ऐसे व्यवसायिक कौशलों की पहचान की जिन्हें स्कूल के मौजूदा पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा जा सके।

- कृषि और बागवानी।
- कृषि प्रसंस्करण आधारित कौशल।
- हस्तशिल्प और हस्तकरघा।
- टेराकोटा/मिट्टी आधारित शिल्प।
- बेसिक इलेक्ट्रिक एवं इलेक्ट्रॉनिक्स कार्य।
- पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता।
- जीवन कौशल।
- खेलकूद, संगीत, रंगमंच एवं नाटक।

यूनाइटेड नेशन्स कन्वेंशन फॉर राईट्स ऑफ चिल्ड्रेन (UNCRC) के अंतर्गत बच्चों को दिए गए मूलभूत अधिकारों को ध्यान में रखते हुये छात्रों के लिए अंतःक्षेप (interventions) की संरचना की गई है।

छात्र क्लबों का निर्माण व सशक्तिकरण

स्कूल की गतिविधियों में छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये विभिन्न प्रकार के समूहों का निर्माण कराया गया है जो छात्रों द्वारा संचालित होते हैं। ऐसे समूहों में स्वेच्छाग्रही समूह, खेलकूद समूह, सांस्कृतिक एवं संगीत समूह, विज्ञान समूह तथा कृषि एवं बागवानी समूह प्रमुख हैं। इसमें छात्रों की रुचि के अनुसार 20-20 छात्रों को विशेष कार्यकलापों के लिये प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। ये छात्र प्रशिक्षणोपरान्त अपने मित्रों को अपने ज्ञान एवं अनुभवों की जानकारी देते हैं। इस प्रकार छात्रों में परस्पर ज्ञान के आदान-प्रदान का सिलसिला प्रारंभ किया गया है।

शिल्प कला

संकुल के कुछ विद्यालयों के छात्रों में शिल्प कला की क्षमता की पहचान हुई है। इनमें प्राथमिक विद्यालय श्रीरामपुर के छात्रों ने चित्रकारी तथा मिट्टी की कलाकृतियों के निर्माण में काफी सराहनीय कार्य किया है। विजयपुर एवं पचकहर के प्राथमिक विद्यालय तथा सिठी के मध्य विद्यालय के छात्रों को स्थानीय हस्तशिल्प 'टोकरी बुनाई' की जानकारी है तथा अधिकतर विद्यार्थी इन कार्यों में निपुण हैं। इन हस्तशिल्पों के अतिरिक्त काठशिल्प तथा मृदाशिल्प के लिए प्रशिक्षकों की पहचान कर बच्चों को उन शिल्पों में भी उपयोगी प्रशिक्षण दिया गया।

विद्यार्थियों द्वारा कला एवं शिल्प कार्य

सह-शैक्षणिक एवं खेलकूद गतिविधियाँ

सह-शैक्षणिक गतिविधियों में छात्रों की रुचि एवं उसके माध्यम से पाठ्यक्रम को आसान तरीके से समझने में मदद को देखते हुए विद्यालयों में सह शैक्षणिक एवं खेलकूद गतिविधियों की शुरुआत की गई। इन गतिविधियों में विज्ञान प्रदर्शनी, गणित ओलिंपियाड, कबड्डी आयोजन प्रमुख हैं।

विद्यालयेतर गतिविधियों के लिए चाइल्ड सपोर्ट ग्रुप का निर्माण- प्रथम एजुकेशन फाउण्डेशन के सहयोग से 13 गाँवों में लगभग 1000 बच्चों के 194 समूहों का निर्माण किया गया है जिसे 74 वॉलण्टियर सहायता करते हैं। इन समूहों के निर्माण का उद्देश्य है कि बच्चों में स्कूल की पढ़ाई के अतिरिक्त समय में पढ़ने की लगन पैदा की जाए। इस प्रयोग में बच्चों को जीवन शैली एवं रोजमर्रा की सामान्य जानकारियों के अतिरिक्त विज्ञान, गणित, वाचन एवं प्रश्न निर्माण जैसे पाठ्यक्रम और अभ्यास दिए जाते हैं तथा बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे समूह के अन्य छात्रों को पढ़ने में मदद करेंगे। ये बच्चे शाम को अपने अभिभावकों, विशेषकर माताओं की देखरेख में सामूहिक पढ़ाई करते हैं। इन समूहों की निगरानी वॉलण्टियर्स के अलावा परियोजना के सदस्य नियमित रूप से करते हैं।

शिक्षकों का प्रशिक्षण

इस पूरी परिकल्पना का मुख्य आधार शिक्षक है। वर्तमान में नियुक्त शिक्षकों में नई तालीम शिक्षा प्रणाली की समझ का अभाव है। पूर्व में उन्होंने नई तालीम पर कोई भी प्रशिक्षण प्राप्त नहीं की है। साथ ही सिस्टमिक रूप से

बाध्य होने के कारण शिक्षकों को कई बार अपने पढ़ने-पढ़ाने के तरीक़े को बदलना पड़ता है, ख़ासकर जब शैक्षणिक प्रशासकों का ज़ोर पाठ्यक्रम को खत्म करने पर हो। शिक्षकों के उन्मुखीकरण कार्यक्रम के तहत शैक्षणिक कौशल प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। शिक्षकों को कई तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए कई प्रयत्न किए गए हैं। जैसे की एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को उन कौशलों से प्रयुक्त करना था जो उन्हें कक्षा 3 से 5 के छात्रों में अनुच्छेद वाचन तथा साधारण गणितीय संक्रियाओं में निपुण बना सके। इस अवसर पर गाँधीजी के नई तालीम पर आधारित एक छोटी फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। प्रशिक्षण में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि शिक्षक शारीरिक गतिविधियों का ज्यादा प्रयोग कर बच्चों को प्रयोगात्मक शिक्षा प्रदान करें। इस प्रशिक्षण को सिर्फ कक्षा प्रदर्शन तक सीमित नहीं रखा गया है अपितु इस प्रशिक्षण के अनुश्रवण की उचित व्यवस्था भी की गई है। अनुश्रवण के क्रम में प्रशिक्षित शिक्षकों के लिये समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित किया गया है, विद्यार्थियों के क्रमित विकास को निर्धारित करने का मासिक चार्ट बनाया गया तथा शिक्षकों को आवश्यकतानुसार समुचित सहायता उपलब्ध करवायी जाती है।

शिक्षकों के लिए नई तालीम पर आधारित शैक्षणिक कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें आनन्द निकेतन, वर्धा में शिक्षकों के समूह को शैक्षणिक कौशल की संवृद्धि के लिये भेजा गया। आनंद निकेतन एक ऐसा विद्यालय है जहाँ 2005 से गाँधी जी की नई तालीम पद्धति को महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड के पाठ्यक्रम में पढ़ाया जा रहा है। साथ ही कई तरह के जीवन उपयोगी कौशल के द्वारा भी बच्चों को सशक्त बनाया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के पीछे एक उद्देश्य यह भी था की शिक्षक सामान्य तरह की पाठशाला से कुछ प्रेरणा लें और अपनी शिक्षण पद्धति को बेहतर बनाने का प्रयास करें।

विभिन्न कार्यक्रमों में शिक्षक एवं छात्रों की सहभागिता- शिक्षकों ने कई कार्यक्रमों में संरक्षक एवं मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन किया है। साथ ही, शिक्षकों को कम्प्यूटर, कृषि तथा अन्य तकनीकी प्रशिक्षण दिये जाने का प्रयास किया जा रहा है ताकि वे स्वयं मार्गदर्शक बनकर छात्रों को समय-समय पर उचित सहायता कर सकें। ऐसा मानना है कि इस कोशिश से भविष्य में यह कदम छात्रों एवं शिक्षकों के बीच परस्पर सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है।

स्कूल मैनेजमेंट कमिटी की बैठकों का नियमित आयोजन

समुदाय और अभिभावकों के सक्रिय सहयोग से परियोजना के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। विद्यालयों को संचालित करने वाली समितियों की नियमित बैठकों को आयोजित करने के लिये परियोजना के सदस्यों ने समुदाय तथा शिक्षकों से विशेष आग्रह

किया तथा बैठकों के नियमित संचालन को सुनिश्चित किया है। बुनियादी विद्यालय भितिहरवा, उत्क्रमित उच्च विद्यालय भितिहरवा, मध्य विद्यालय कोहरगडी तथा प्राथमिक विद्यालय श्री रामपुर में इस प्रयास के सकारात्मक परिणाम आये हैं। इन विद्यालयों के कार्यकलापों में समुदाय एवं अभिभावकों की रुचि बढ़ी है। बुनियादी विद्यालय की समिति की बैठक विद्यालय के लिये फाटक बनाने के लिये बुलाई गई थी जिसमें समुदाय के सदस्यों ने सहयोग किया तथा अपने प्रयासों से फाटक का निर्माण कराया।

ग्रामीणों के बीच बच्चों की प्रगति का रिपोर्ट कार्ड प्रदर्शन

बेसलाईन सर्वे के आधार पर तैयार किये गये रिपोर्ट को जीविका दीदी, वार्ड मेंबर्स, वॉलण्टियर्स, आँगनबाड़ी कर्मियों तथा स्थानीय शिक्षकों के सहयोग से गाँवों के प्रमुख स्थलों पर प्रदर्शित किया गया। इन प्रदर्शनों में ग्रामीणों को बच्चों के शैक्षणिक स्तर की समस्याओं का जिक्र किया गया, उन्हें आश्वस्त किया गया कि इन कमियों को दूर करने का प्रयास सम्मिलित रूप से किये जाने की आवश्यकता है। अभिभावकों को बच्चों की प्रगति एवं शिक्षा की नियमित जाँच करने के लिये साधारण उपाय समझाये गए। उनसे अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने का आश्वासन लिया गया तथा यह सलाह भी दी गई कि वे शिक्षक-अभिभावक बैठकों को गंभीरता से लें तथा नियमित रूप से उनमें शामिल हों। आँगनबाड़ी सेविकाओं से विशेष आग्रह किया गया कि वे उन बच्चों की माताओं की विशेष मदद करें जिनके बच्चे विद्यालय जाने की उम्र तक पहुँच रहे हैं।

युवाओं, समुदाय के अन्य सदस्यों एवं माताओं के साथ विद्यालय को जोड़ने का प्रयास- अब तक 74 ऐसे युवा समुदाय के सामने आ चुके हैं जिन्होंने विद्यालय की सभी प्रकार की गतिविधियों में सहयोग करने की इच्छा दिखाई है। ऐसे ही कुछ सदस्य समय निकाल कर कम्प्यूटर सिखाने, छात्रों को हारमोनियम सिखाने आते हैं। ये युवा बच्चों को उनके घरों में भी पढ़ाई में मदद करते हैं। कुछ माताओं की पहचान भी की गई है जो शिल्प कार्यों में बच्चों की मदद करने को इच्छुक हैं। ऐसे लोगों को विद्यालयों में किये जाने वाले कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जा रहा है।

उल्लेखनीय परिवर्तन

इस परियोजना के दो वर्षों के अंतःक्षेप में कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियों को हासिल किया गया। इसके साथ ही कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। कुछ उल्लेखनीय परिवर्तन निम्नलिखित हैं:

- मध्याह्न भोजन के उपरान्त छात्रों के पलायन पर अंकुश - विद्यालयों में शिक्षण के अतिरिक्त इस परियोजना के द्वारा विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के फलस्वरूप बच्चों की स्कूल के प्रति सोच बदली है तथा उत्सुकतावश उनमें विद्यालय की गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेने की प्रवृत्ति बढ़ी है।
- बुनियादी विद्यालय के 5 छात्रों ने एकलव्य आवासीय विद्यालय के चयन प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा किया है।

अब उन्हें भारत सरकार द्वारा समर्थित 'खेलो इंडिया' की समस्त सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। 16 जिलों से 498 छात्र कुल 9 रिक्त स्थान के लिए स्पर्धा में आये थे जिनमें एक ही विद्यालय के 5 छात्रों का चयन एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। खेलकूद के नियमित संचालन से छात्र देर शाम तक विद्यालय में ही रहने लगे हैं।

- कम्प्यूटर लैब का नियमित इस्तेमाल किया जा रहा है तथा काफी छात्र लाभान्वित हो रहे हैं।
- संकुल के अन्य विद्यालयों में क्विज एवं विज्ञान प्रदर्शनी के प्रति जिज्ञासा बढ़ी है तथा अन्य स्कूलों में भी इन गतिविधियों को शुरू किया जा रहा है।
- स्कूलों में शिक्षकों का आवागमन नियमित हुआ है।
- अभिभावकों, शिक्षकों एवं समुदाय के सदस्यों की नियमित बैठकों से विद्यालयों के प्रति उनका विश्वास बढ़ा है।

चुनौतियाँ

पिछले दो वर्षों में कई उपलब्धियों के वाबजूद भी गाँधीजी बुनियादी शिक्षा के मूलभूत सिद्धान्तों को पूर्णरूप से आत्मसात नहीं किया जा सका है। इनके पीछे के कुछ कारण शिक्षकों का अभाव, पढ़ाने के तरीक़े में बदलाव के प्रति अवरोध, शिक्षकों में नई तालीम पद्धति से पढ़ाने के लिए अपेक्षित कौशल का अभाव, विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्यों की कम भागीदारी, स्थानीय समुदाय के आकांक्षाओं में परिवर्तन एवं संस्थागत प्राथमिकताओं में बदलाव है।

उपसंहार

इस परियोजना का लक्ष्य बुनियादी विद्यालय की क्षमता को सुदृढ़ करना है ताकि ज्ञान के केन्द्र के रूप में यह विद्यालय पूर्णतः सक्षम हो सके, राज्य के अन्य विद्यालयों के लिये अनुकरणीय हो सके और अपनी ऐसी विशिष्ट पहचान बना सके जहाँ नई तालीम की मूल भावना न सिर्फ उपस्थित हो बल्कि पूर्णतः जागृत भी हो। वर्तमान में जब वैश्विक महामारी (COVID-19) में सारे शिक्षण संस्थानों को बंद करना पड़ा, और लोगों को अपने आस-पड़ोस तक ही सीमित रहना पड़ा, तब एक बार पुनः नई तालीम पद्धति के फायदों का अहसास हुआ। इस महामारी के दौर में जहाँ विद्यालयों में पढ़ाई रोकनी पड़ी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन सुविधाओं के अभाव के कारण पढ़ाई नहीं हो पा रही थी, भितिहरवा संकुल में स्थानीय समुदाय ने रोज़गारपरक शिक्षा जारी रखी। साथ ही समुदाय से कुछ युवा सदस्यों एवं माताओं ने स्थानीय स्तर पर पढ़ाई जारी रखी। ◆

अदिति ठाकुर : विकास प्रबंधन संस्थान, पटना में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। वह वर्तमान में बिहार के पश्चिम चंपारण के भितिहरवा गाँव (जहाँ से महात्मा गाँधी ने अपनी शैक्षिक और राजनीतिक गतिविधियों की शुरुआत की थी) में राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित 'री-इमैजिनिंग बेसिक एजुकेशन फॉर लर्निंग ट्रांसफॉर्मेशन' नामक परियोजना के समन्वयक के रूप में परियोजना का नेतृत्व कर रही हैं।

संपर्क : athakur@dmi.ac.in

शंकर पूर्बे : विकास प्रबंधन संस्थान में पिछले दो वर्षों से सह-आचार्य के रूप में कार्यरत हैं। आई.आई.टी. धनबाद से पीएचडी की डिग्री प्राप्त करने के बाद दस वर्षों तक आई.आई.एम. शिलॉन्ग में बतौर सह-आचार्य के रूप में अपनी सेवा दी। इनकी शैक्षणिक कार्य रुचि विशेष रूप से स्कूली शिक्षा के प्रबंधन और संस्थानों के पुनरुत्थान से संबंधित कार्यों में है।

संपर्क : spurbey@dmi.ac.in

जल की शिक्षा

कर्नाटक के सरकारी विद्यालयों में जल संरक्षण के प्रयासों का अनुभव

अदिति हस्तक
भाषान्तर : मधुलिका झा

"हमें टैंकर से पानी खरीदने के लिए हर 10-15 दिनों में 100 से 150 रुपए खर्च करना पड़ता है। पंचायत से मिलने वाले पानी की आपूर्ति रुक-रुक कर हो रही है। विद्यालय में हाथ धोने की कोई व्यवस्था नहीं है। शौचालय हैं, लेकिन उनमें एक भी नल नहीं है, कोई ओवरहेड टैंक नहीं है जो सीधे शौचालयों या अन्य ज़रूरतों के लिए पानी उपलब्ध करा सके, सेप्टिक टैंक का वाल्व चैम्बर लीक हो रहा है। शौचालय के पास फ़र्श और नाली का काम ठीक से नहीं हुआ है जिसके कारण वहाँ पानी ठहर जाता है और अस्वास्थ्यकर स्थिति पैदा होती है। ऐसी स्थिति में बच्चे पढ़ाई पर कैसे ध्यान केंद्रित कर सकते हैं?" ग्रामीण कर्नाटक के एक सरकारी स्कूल के शिक्षक अपने स्कूल में पानी की व्यवस्था और उससे उपजी चुनौतियों के बारे में बता रहे थे।

भारत के 24 सर्वाधिक सूखा प्रभावित क्षेत्रों में से कर्नाटक राज्य का स्थान सोलहवाँ है। कर्नाटक के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र के जिलों, जिनमें गुलबर्गा, रायचूर, बेल्लारी, चित्रदुर्ग, तुमकुर, कोलार और साथ ही कुछ अन्य स्थानों जिनमें बेंगलुरु भी शामिल है, के भूमिगत जल में फ्लोराइड काफ़ी ज़्यादा है। 2019 में तटीय कर्नाटक के कुछ हिस्से जहाँ आमतौर पर अच्छी वर्षा होती है, वहाँ पीने के पानी की अनुपलब्धता के कारण स्कूलों को बंद करने या आंशिक रूप से चलाने को मज़बूर होना पड़ा था। 2009-10 की जिला शिक्षा सूचना तंत्र (डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सर्विस फॉर एडुकेशन-DISE) की रिपोर्ट के अनुसार, कर्नाटक उन राज्यों में से एक है जहाँ कुल नामांकित छात्रों के 3.5 प्रतिशत से अधिक के पास पेयजल की उपलब्धता नहीं है।

बायोम एनवायरनमेंटल ट्रस्ट (BIOME) एक स्वयंसेवी संस्था है जो भारत में पारिस्थितिक और सामाजिक सततता (सस्टेनीबिलिटी) के क्षेत्र में काम करती है। निम्नलिखित सूची कर्नाटक के गाँवों में पानी और स्वच्छता की स्थिति के बारे में संक्षिप्त विवरण देती है, जिनमें बायोम वर्तमान में काम कर रहा है:

- अधिकांश गाँवों में बोरवेल से पानी की आपूर्ति होती है जो या तो अक्सर सूख जाते हैं या उन्हें गहरा करना पड़ता है परिणामस्वरूप रासायनिक दोष जैसे फ्लोराईड की मात्रा पानी में काफ़ी बढ़ जाती है।
- पानी की गुणवत्ता के बारे में, विशेष रूप से जीवाणु प्रदूषण के संबंध में जागरूकता की कमी है।
- इन गाँवों के विद्यालयों में साफ-सफाई के संसाधन सीमित हैं। शौचालय, हाथ धोने की जगह और जल निकासी की घटिया व्यवस्था के साथ-साथ उनमें से भी अधिकतर टूटे हुए होते हैं।
- यहाँ तक कि जिन विद्यालयों में आँगनवाड़ी हैं, उनमें भी पानी की उपलब्धता सीमित है या नहीं है।

- पंचायत जिनकी यह जिम्मेदारी होती है कि वे स्कूलों में पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करें, उनके लिए स्कूलों में पानी उपलब्ध कराना मुश्किल काम होता है।

पिछले दो दशकों में सरकारी ग्रामीण स्कूलों में बायोम के काम का विस्तार हुआ है- इसमें जल-संचयन, जल-संरक्षण और जल-साक्षरता को लेकर जागरूकता और वर्षा के जल को संचित करने वाली प्रणाली (Rain Water Harvesting - RWH) का निर्माण शामिल है। यह स्थानीय अधिकारियों, विशेषकर तालुका के ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (BEO) के साथ मिलकर काम करने और जितना संभव हो उतना स्थानीय व सहभागी होने की माँग करता है। बारिश के पानी के संग्रहण के लिए आवश्यक संरचनाओं के निर्माण के बाद भी बायोम जल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जितना संभव हो उतना स्कूलों के साथ जुड़ाव बनाए रखता है। अपने परिवेश में पानी की स्थिति के बारे में समझना और जल संरक्षण को व्यवहार में लाना स्कूल के छात्रों को अपने आस-पास पानी और स्वच्छता से संबंधित तात्कालिक मुद्दों के बारे में अधिक जागरूक और सचेत बनाता है। अब तक बायोम ने 40 सरकारी स्कूलों के साथ काम किया है जहाँ जल संरक्षण के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे के क्रियान्वयन का कार्य कुछ महीनों तक चला।

यह लेख बायोम टीम के वास्तविक अनुभव के आधार पर विद्यालय के परिवेश में वर्षा के जल को संचित करने हेतु आवश्यक संरचनाओं के निर्माण के माध्यम से शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया का वर्णन करता है। इस प्रक्रिया में बायोम टीम, स्कूल के अधिकारियों और छात्रों के साथ मिलकर काम करती है।

वर्षा-जल संचयन के लिए पहले छत पर एकत्र वर्षा के जल को पाइप के एक नेटवर्क के माध्यम से इकट्ठा किया जाता है, छाना जाता है और फिर स्कूल की प्राथमिकता के आधार पर या तो उसे भूमिगत गड्ढे या ओवरहेड टैंक में संग्रहित किया जाता है। औसतन 180 वर्गमीटर क्षेत्र वाली छत से जहाँ लगभग 800 मिमी की वार्षिक वर्षा होती हो, एक लाख लीटर (100 के.एल.) से अधिक पानी का संचयन किया जा सकता है। यदि प्रतिदिन 1000 लीटर जल की औसत ज़रूरत हो तो 200 कार्य दिवसों के लिए लगभग 200 के.एल. (2,00,000 लीटर) पानी की ज़रूरत होती है। दूसरे शब्दों में, यदि संग्रहण की व्यवस्था ठीक हो और इसे ठीक तरह से काम में लिया जाए तो स्कूल की पानी की आधी ज़रूरत बारिश के पानी के संग्रहण से पूरी की जा सकती है।

सबसे पहले बायोम टीम वर्षा के जल को संचित करने वाली प्रणाली (RWH) की रूपरेखा और योजना के बारे में सलाह लेने के लिए शिक्षकों और विद्यालय विकास और प्रबंधन समिति (SDMC) के साथ चर्चा करती है। उनकी मंजूरी के बाद बायोम वहाँ के स्थानीय संसाधन जैसे कि गाँव के प्लंबर और श्रमिकों और स्थानीय निर्माण सामग्री को इस योजना में शामिल करता है।

छात्र वर्षा के जल को संचित करने वाली संरचना के बारे में उत्सुक रहते हैं। बारिश के पानी को इकट्ठा करने, इसे संग्रहित करने और इसका उपयोग करने का विचार रोमांचक है लेकिन इस बारे में उनकी जागरूकता सीमित होती है; कि इसे क्यों स्थापित किया जा रहा है या उनके लिए इसके क्या फायदे हैं। इसलिए बायोम टीम कक्षाओं में इस विषय पर सीखने की कुछ गतिविधियों पर काम करती है।

छात्रों के साथ बातचीत की शुरुआत एक सामान्य प्रश्न के साथ होती है - 'वे पानी के बारे में क्या जानते हैं?' आमतौर पर सभी उत्तर पाठ्यपुस्तक से आते हैं जैसे- पानी द्रव है, पानी गैस है, जल चक्र, आदि। अक्सर छात्र पानी से जुड़े हुए अपने स्थानीय मुद्दों जैसे कि एक सूखे बोरवेल, पीने के पानी की कमी, संदूषण आदि के बारे में नहीं सोचते हैं। अपने गाँव में पानी से संबंधित मुद्दों-

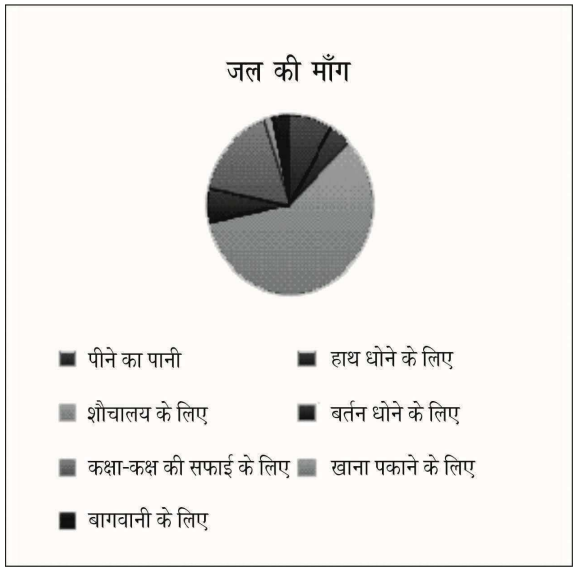

जैसे खेती के लिए, पशुओं के लिए, घरेलू उपयोग के लिए पानी की उपलब्धता, अपने गाँव में खुले कुओं का होना, गाँव की टंकियों जैसे सामूहिक संसाधनों के बारे में सोचने के लिए बच्चों को चर्चा के एक ख़ास स्तर पर पहुँचने की ज़रूरत होती है।

हम 'जलीय चक्र को मापने' की गतिविधि अर्थात् जलस्रोत से पानी के निकलने से लेकर स्कूल से अपशिष्ट जल की निकासी तक के चक्र से बच्चों को परिचित कराते हैं। छात्रों को उनके स्कूल में पानी के विभिन्न स्रोतों की पहचान करने और स्कूल में पानी कैसे और किन कामों के लिए उपयोग में लिया जाता है इसे बताने के लिए कहा जाता है। आमतौर पर इसके जवाब में बच्चे नदी, झील, खुले कुएं, बोरवेल, टैंकर और यहाँ तक कि पानी के स्रोत के रूप में नल का भी नाम लेते हैं। छात्र स्कूल में पानी के विभिन्न उपयोग जैसे पीने के लिए, खाना पकाने, कक्षा की सफाई, बागवानी, हाथ, प्लेट और बर्तन धोने और शौचालय में इस्तेमाल करने का उल्लेख करते हैं।

अधिकतर स्कूलों में पानी का मुख्य स्रोत बोरवेल हैं, जहाँ बोरवेल नहीं है वहाँ स्थानीय ग्राम पंचायत द्वारा पानी की आपूर्ति या तो नल कनेक्शन के माध्यम से या टैंकरों के माध्यम से की जाती है। हालाँकि, अक्सर छात्र इस बारे में अनिश्चित होते हैं कि स्कूल में उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट जल का क्या किया जाता है। कुछ सेप्टिक टैंक का जिक्र करते हैं या सिर्फ यह कह देते हैं कि 'पानी स्कूल परिसर से बाहर चला जाता है', लेकिन उनके पास इसके बारे में बहुत कम जानकारी और समझ है कि उसके बाद उस पानी का क्या होता है- क्या इसका शोधन किया जाता है या यह अशुद्ध ही रहता है, क्या उसे फिर से काम में लिया जाता है या ऐसे ही बहा दिया जाता है?

छात्रों को विभिन्न उद्देश्यों के लिए काम में लिए जाने वाले पानी की मात्रा को मापने के लिए कहा जाता है। उदाहरण के लिए, हाथ धोने के लिए उपयोग में आने वाले पानी की मात्रा को मापने के लिए 1 लीटर की बोतल से एक छात्र या छात्रा द्वारा हाथ धोने में काम में ली गई पानी की मात्रा को आधार माना जाता है। एक बार हाथ धोने के बाद बोतल में पानी के स्तर को मापा जाता है और बोर्ड पर नोट किया जाता है।

प्लेट और बर्तन धोने के लिए भी इसी गतिविधि को दोहराया जाता है। शौचालयों, कक्षा की सफाई और बागवानी के लिए उपयोग में आने वाले पानी को मापने के लिए छात्रों द्वारा काम में ली जाने वाली बाल्टी या मग को मापक के रूप में लिया जाता है। इस तरह सभी कामों या प्रयोजनों के दौरान इस्तेमाल होने वाले पानी की मात्रा को नोट किया जाता है और इन सभी को जोड़कर यह निकाला जाता है कि स्कूल के लिए प्रतिदिन कितने पानी की आवश्यकता होती है। यह गतिविधि किन कामों में

पानी की अधिक और कहाँ कम खपत होती है (खपत के उच्च और निम्न बिन्दुओं) यह तय करने और प्रत्येक गतिविधि में होने वाले अपव्यय को निर्धारित करने में मदद करती है। अक्सर यह पाया जाता है कि स्कूल के शौचालयों में सबसे अधिक पानी काम में लिया जाता है, इसके बाद स्कूल में उपलब्ध कक्षाओं और बगीचे के क्षेत्रफल के आधार पर बागवानी या कक्षाओं की सफाई में पानी की खपत होती है।

जल संरक्षण और उसके उपयोग से संबंधित मुद्दों का परिचय देने में इस तरह की गतिविधि मदद करती है। एक स्कूल के प्रधानाध्यापक ने एक बार इस तरह की गतिविधि के ख़त्म होने के बाद टिप्पणी की थी, ''हमारे पास 750 लीटर के दो टैंक हैं, जिन्हें हम रोजाना काम में लेते हैं। इसलिए, मुझे यह पता था कि स्कूल में पानी की दैनिक खपत 1500 लीटर है, लेकिन मुझे यह कभी पता नहीं चला कि हम केवल बागवानी पर इतना पानी बर्बाद कर रहे थे। अब आगे से, हम इस बात का ध्यान रखेंगे।''

कक्षा में वर्षामापी से बच्चों को परिचित कराना उन्हें उनके स्कूल की छत पर गिरने वाली बारिश को मापने में मदद करता है। वे यह भी सीखते हैं कि वर्षा का जल भी पीने के पानी का एक स्रोत हो सकता है। पानी का परीक्षण करने वाले किट की मदद से छात्र अपने स्कूल और घर के पानी की गुणवत्ता की जाँच करते हैं, और साथ ही रसायन शास्त्र सीखते हैं!

प्रत्येक स्कूल में बायोम नए सेट किए वर्षा जल संचयन प्रणाली की निगरानी और किसी खराबी के कारण मरम्मत के लिए सूचना देने के लिए एक प्रोजेक्ट वॉच समिति की स्थापना का सुझाव देता है, जिसमें शिक्षक भी शामिल होते हैं।

स्कूलों में जल प्रबंधन की शिक्षा परिवारों और घरों में जल संरक्षण के तरीक़ों को बढ़ावा दे सकती है और व्यापक स्तर पर समुदाय को दीर्घकालिक लाभ प्रदान कर सकती है। सफलता की हमारी सबसे अच्छी कहानी में से एक यह थी- इन स्कूलों में से एक स्कूल के छात्र ने अपने पिता को अपने घर में एक वर्षा जल संचयन प्रणाली का निर्माण करने के लिए तैयार किया। पिता शुरू में अनिच्छुक थे, लेकिन उन्होंने बच्चे की बात मानी और अब वो खुश हैं कि उनके पास साल भर के लिए पानी है! ◆

लेखक परिचय : बायोम एनवॉयरमेंटल ट्रस्ट, बैंग्लूरू में कार्यरत हैं।

संपर्क : aditi@biome-solutions.com

मरुदम में प्रकृति से सीखना

एक शिक्षक का अनुभव

ध्रुव देसाई

भाषान्तर : मधुलिका झा

मरुदम, द फॉरेस्ट वे ट्रस्ट द्वारा संचालित एक स्कूल है जो तमिलनाडु में तिरुवन्नामलई की सीमा पर स्थित एक गाँव कान्थामपोन्दी में स्थित है। फॉरेस्ट वे ने करीब 16 साल पहले तिरुवन्नामलई की उजाड़ धरती पर वनरोपण के लिए काम करना शुरू किया और जैसे-जैसे इस काम में शामिल लोगों का समुदाय बढ़ता गया, वैसे ही यह इरादा भी ज़ोर पकड़ता गया कि यहाँ पर एक शैक्षिक संस्थान शुरू किया जाए। शिक्षा के लिए एक ऐसी जगह की संकल्पना थी जहाँ हमारे बच्चे एक अलग, अधिक सार्थक शिक्षा प्राप्त कर सकें। मरुदम की शुरुआत करने वाले लोगों का समूह काफ़ी विविधतापूर्ण था जिनके पास भारत में और दुनिया भर में शिक्षा पर हो रहे काम का विविध अनुभव था। समूह इस बात पर सहमत था कि हमारे अधिकांश बच्चे जिस मौजूदा स्कूल प्रणाली का हिस्सा हैं, वह शिक्षा-व्यवस्था उन्हें प्रकृति से, और कई मायनों में खुद से भी दूर कर देती है।

हम शिक्षा की किसी एक विशेष रूपरेखा का पालन नहीं करते हैं- हम 'वाल्डोर्फ' स्कूल नहीं हैं, और न ही 'मोंटेसरी' स्कूल हैं- इसकी बजाय हम वही तरीक़े और दृष्टिकोण अपनाते हैं और चुनते हैं जो हमें बेहतर लगते हैं, और इनका फैसला करते समय हमेशा दो चीजें केंद्र में रहती हैं- बच्चों की भलाई, और पृथ्वी पर रहने वाले मानव के रूप में हमारी भूमिका। इसलिए, जब हमें गाँव में खेतों के बीच स्कूल के लिए एक उपयुक्त स्थान मिला, तो हमारे लिए यह बिलकुल स्वाभाविक था कि हमारे स्कूल और खेत एक-दूसरे के साथ सामंजस्य में रहकर काम करें। यह स्वाभाविक था कि खेत में काम करने के लिए हम जैविक दृष्टिकोण अपनाएंगे और भूमि का दोहन करने की बजाय ज़मीन के साथ जुड़ाव बनाकर काम करने की कोशिश की जाएगी। हम सभी जिस तरह स्कूल परिसर की साफ-सफाई और रखरखाव के कामों में भाग लेते हैं, उसी तरह खेत में काम करना भी हमारे और बच्चों के दिन का अहम हिस्सा होगा। किसी जगह की देखभाल करना सीखना और उस जगह में विकसित होना दोनों साथ-साथ चलते हैं।

प्रकृति पर मानव के अभूतपूर्व प्रभाव वाले इस समय में, हम जानते हैं कि मानव व्यवहार को बदलने की आवश्यकता है। इस बदलाव का एक अनिवार्य हिस्सा हमारे बच्चों के लिए यह समझना है कि हम प्रकृति से अलग नहीं बल्कि उसका हिस्सा हैं, साथ ही जिस दुनिया में हम रहते हैं उसमें अपना सार्थक योगदान किस तरह से दे सकते हैं। हमें स्वयं इस बात पर विश्वास है, और कार्य के दौरान भी हमें इसका प्रमाण मिला कि बच्चे अपने आस-पास के परिवेश के साथ खुद को जोड़कर ही सबसे अच्छे तरीक़े से सीख पाते हैं।

इसलिए बागवानी और खेती उस व्यापक उद्देश्य (प्रकृति के साथ जुड़ाव और उसके साथ सामंजस्य में रहने) को समझने के तरीके हैं- छात्रों के प्रत्येक समूह के पास बग़ीचे का अपना एक टुकड़ा होता है जिस पर वे

काम करते हैं। फसल रोपाई करने और फसल काटने के समय बच्चे अपनी ज़रूरत और रुचि के अनुसार वयस्कों के साथ मिलकर खेतों में काम करते हैं।

हम जितना संभव हो उतना अधिक समय जंगल में भी बिताते हैं- हमारे लिए हर हफ़्ते का एक दिन अपने पास की पहाड़ी पर चढ़ने, जंगल में भ्रमण करने, कभी घूमने, कभी पक्षी देखने, कभी पेड़ों के बारे में सीखने या कभी-कभी सिर्फ उस जगह पर होने और अवलोकन करने के लिए समर्पित होता है। आवश्यकता पड़ने पर उस स्थान में रहने वाले बच्चे और वयस्क भी वनरोपण के लिए काम कर रहे समूह के साथ काम करते हैं या अगर बच्चों की अधिक रुचि होती है तो वे खासकर मानसून आने से पहले गड्ढे तैयार करने और पेड़ लगाने के साथ-साथ बीज संग्रहण (जो सीखने का एक ज़बरदस्त अनुभव होता है), खरपतवार को हटाने, पानी देने जैसे सभी कामों में भागीदारी करते हैं। इस सब के साथ-साथ हम अपने परिवेश के तात्कालिक अनुभव से इतर, बाहर की दुनिया के बारे में और अधिक जानने के लिए विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और जैव क्षेत्रों (बायोम) की यात्राएं भी करते हैं।

हमने पाया है कि इन अनुभवों के माध्यम से, और कुछ समय इन अनुभवों पर चिंतन करने में लगाने से बच्चे किताबों की तुलना में कहीं अधिक सीखते हैं (ऐसा नहीं है कि किताबें सीखने का हिस्सा नहीं हैं, लेकिन वे केवल एक हिस्सा हैं) और अक्सर हम उन्हें जितना सिखाना चाहते थे या जहाँ से हम शुरुआत करना चाहते थे उससे कहीं अधिक सीख पाते हैं। वे ऐसी बातों को देख पाते हैं जो हमारी नज़रों से चूक जाती हैं, उन पैटर्न को देखते हैं जिन्हें हमने पहले नहीं देखा था, और लगातार अभ्यास के द्वारा पौधों और जानवरों की देखभाल करना सीखते हैं। यह सब केवल ज्ञानार्जन करने में ही योगदान नहीं देते, बल्कि अक्सर इन अनुभवों के द्वारा बच्चे सहानुभूति, संवेदनशीलता, सहयोग जैसे मानवीय गुणों को आत्मसात कर रहे होते हैं।

जहाँ तक संभव होता है हम इन अनुभवों को अपनी परंपरागत शिक्षा से जोड़ने का प्रयास करते हैं- जैसे अपनी पहाड़ी यात्राओं के अनुभवों को हम विज्ञान की कक्षाओं में काम में लेते हैं, और खेतों के अपने अनुभवों का उपयोग भाषा और गणित की कक्षाओं के हिस्से के रूप में करते हैं।

हालांकि बच्चे जैसे-जैसे बड़ी कक्षाओं में पहुँचते हैं तब उनके परिवेश के अनुभवों को उनकी पाठ्यपुस्तकों के साथ सीधे तौर पर जोड़ना कठिन होता जाता है, लेकिन ऐसा ना हो पाने पर भी अनुभव से सीखने का महत्व किसी मायने में कम नहीं हो जाता, बल्कि बढ़ता ही है। हम यह नहीं कहना चाह रहे हैं कि सीखने की प्रक्रिया में दिशानिर्देश का कोई महत्व नहीं है, या इसकी कोई रूपरेखा नहीं होनी चाहिए- बल्कि हमने देखा है कि जिस तरह से व्यवस्थित सीखने-सिखाने का अपना एक महत्व है, वैसे ही मुक्त और अनिर्देशित अवलोकन की अपनी एक उपयोगिता है।

हमारे सीखने-सिखाने की पद्धति की सीमाओं से हम परिचित हैं, और हमने अपने-आप पर काम करते हुए, सचेत रूप से कुछ तरीक़ों का चुनाव किया है। हमारे कई छात्र अपने परिवार की शिक्षा प्राप्त करने वाली पहली पीढ़ी से आते हैं और परीक्षाओं की कठिनाई से जूझना उनके स्कूली शिक्षा को पूर्ण करने के मार्ग में बाधा पैदा करता है। शिक्षा को समग्रता में देखने के हमारे प्रयास का अर्थ यही है कि हम परीक्षा की ज़रूरत के हिसाब से किसी विशिष्ट पुस्तक को काम में लेने पर ज़ोर नहीं देते हैं, इसलिए यह संभावना नहीं है कि हमारे छात्र कभी 'टॉपर्स' की श्रेणी में आ पाएंगे।

10 वर्षों तक मरुदम को स्कूल के रूप में संचालित करने के हमारे अनुभव के द्वारा, यह बात हमारे सामने और अधिक स्पष्ट हुई है कि 'करना' सीखने का एक अनिवार्य अंग है। किसी भी चीज़ को क्यों सीखा जा रहा है इसे तभी समझा जा सकता है जब आपने उससे संबंधित ज्ञान का इस्तेमाल करने या कार्य को करके देखने की कोशिश की हो। इसके अलावा, यह आवश्यक है कि विद्यार्थी अपने परिवेश से जुड़े रहें- प्रयोगशाला के प्रयोग एक हद तक महत्वपूर्ण हैं, लेकिन हमारे अपने परिवेश में काम करके सीखने का स्थान नहीं ले सकते- जैसे आस-पास के कचरे से खाद बनाना और उसका उपयोग करना, जिस भूमि पर हम रहते हैं उस पर काम करना, अपने आस-पास के जीवों व प्राणियों को समझना और उनकी देखभाल करना। ये सभी पाठ्येतर गतिविधियाँ नहीं हैं, बल्कि ये पाठ्यक्रम का ही हिस्सा हैं। ◆

नोट : आलेख में शामिल चित्रों को इस स्कूल के बारे में प्रकाशित एक अन्य लेख से लिया गया है:
http://vikalpsangam.org/article/marudam-farm-school-becoming-while-it-is-being/#.X3w6Fu3hXIU

लेखक परिचय : ध्रुव पिछले आठ-दस साल से शिक्षा और शिक्षण-कार्य से जुड़े हुए हैं। कई विद्यालयों में पढ़ाने के बाद, जैसे ही वह मरुदम पहुँचे उन्हें लगा कि अपना घर मिल गया है। वे ज्यादातर बच्चों के साथ फुटबॉल और फ्रिसबी खेलते हैं, और कभी-कभी पहाड़ चढ़ने जाते हैं।

संपर्क : dhruva.desai@gmail.com

किशोरों के जीवन में संवैधानिक साक्षरता

नवेंदु मिश्र, गौरव जायसवाल और शिरीष कुमार

शिक्षालय

सरकार ने पंचायती राज कानून तो लागू किया, पर गाँधी जी की कल्पना के अनुसार ग्राम पंचायतों को स्वावलंबी बनाने की ख़ातिर कुछ ख़ास काम नहीं किया। गाँधी जी ने ग्रामसभा से लोकसभा तक के लोकतांत्रिक ढाँचे की कल्पना की थी और कहा था कि 'आज़ादी नीचे से शुरू होनी चाहिए, हर एक गाँव में लोगों की हुकूमत या पंचायत राज होगा। उनके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी। इसका मतलब यह है कि हर एक गाँव को अपने पाँव पर खड़ा होना होगा। अपनी ज़रूरतें खुद पूरी कर लेनी होंगी ताकि वे अपना कारोबार खुद चला सकें। सच्चे प्रजातंत्र में नीचे से नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमी को समान अवसर मिलने चाहिए। इसलिए सच्ची लोकशाही केंद्र में बैठे दस-बीस आदमी नहीं चला सकते, वह तो नीचे से हरेक गाँव के लोगों द्वारा चलाई जानी चाहिए। इस दृष्टि से बापू ग्राम पंचायतों के विकास के लिए बहुत उत्सुक थे। उन्होंने कई बार यह बात कही थी कि ''भारत अपने चंद शहरों में नहीं बल्कि सात लाख गाँवों में बसा हुआ है।'' हालाँकि, आज़ादी के बाद कानून और व्यवस्थाएं बहुत बनी, परन्तु उनके अंतिम व्यक्ति तक समझ के साथ पहुँचाने का कार्य बहुत ही कछप गति से हुआ। जिसका परिणाम कागजों पर मज़बूत दिखता पंचायती राज और लोकतंत्र ज़मीन पर पहुँचाते-पहुँचाते बहुत ही कमजोर हो जाता है। मज़बूत लोकतंत्र की नींव मजबूत नागरिक हैं जो भारत की व्यवस्था में सत्ता नहीं कर पाई या कहें कि करने का प्रयास भी सच्चा नहीं रहा। मज़बूत नागरिक कैसे मजबूत पंचायत की नींव रख सकता है इसका एक अनुभव हमें अग्रणी[1] की यात्रा के दौरान प्राप्त हुआ और ये बात भी समझ आई कि क्यों गाँधी जी सत्ता का केंद्र गाँव में देखना चाहते थे, दस या बीस लोगों के हाथों में नहीं। चलिए चलते हैं इस यात्रा पर...

अग्रणी द्वारा पिछले लगभग 9 वर्षों से धीरे-धीरे अपने कार्यों के माध्यम से संस्थागत एवं समुदाय की संवैधानिक साक्षरता को बढ़ाने के लिए कार्य प्रारंभ किया गया। अग्रणी ने इन वर्षों (2012 से 2015) के दौरान अपने शिक्षालय प्रकल्प (यह एक ज्ञान संसाधन केंद्र के नाम से स्थानीय पंचायत के भवन में युवाओं द्वारा संचालित केंद्र रहा है, जहाँ युवा अपने सहपाठियों के साथ मिलकर एक-दूसरे के परस्पर सहयोग से

1. अग्रणी समाज कल्याण समिति 2009 से मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में शिक्षा के क्षेत्र में केंद्रित होकर काम कर रही है। संस्था द्वारा पिछले 10 वर्षों में अनेक कार्यक्रम एवं नवाचारी प्रयोग किये गए, जिनमें आंगनवाड़ियों में गुणवत्ता युक्त शाला पूर्व शिक्षा, शिक्षालय ज्ञान संसाधन केंद्र आदि प्रमुख है। अग्रणी द्वारा सिवनी जिले के आदिवासी विकास खंड कुरई में एक सामुदायिक विद्यालय की भी स्थापना की गयी है जो अपने आप में एक मॉडल की तरह तैयार किया जा रहा है।

संचालन करते हैं। अग्रणी द्वारा आवश्यकता अनुरूप इनकी मदद विभिन्न विषयों में कार्यशालाओं के माध्यम से किशोर एवं किशोरियों के साथ स्थानीय प्रशासन की समझ बढ़ने एवं एक नागरिक के रूप में ग्राम सभा एवं पंचायत स्तर पर सक्रिय भागीदारी कर इन व्यवस्थाओं को मज़बूत करने की विधियों की जानकारी प्रदान की गई। इस प्रक्रिया की शुरुआत हुई जब उनसे बात के दौरान पाया गया कि उन्हें स्थानीय स्तर पर कार्यरत विभिन्न शासकीय कार्यालयों एवं शासकीय कर्मचारियों के विषय में कितनी जानकारी है? देखा गया कि हमारे केंद्र से जुड़े लगभग 1000 किशोर-किशोरियों में से केवल 10 प्रतिशत को पंचायत के बेसिक स्ट्रक्चर की जानकारी है, तथा 5 प्रतिशत को ही सरपंच, सचिव और पंचों के विषय में जानकारी थी। इसके अतिरिक्त त्रिस्तरीय पंचायती राज में जनपद और जिला पंचायत के विषय में केवल 2 प्रतिशत को ही जानकारी थी। पंचायत, जिला पंचायत और जनपद पंचायत के विषय में उन्हें किसी अन्य प्रकार की समझ थी ही नहीं। इसमें विचारणीय तथ्य ये थे कि इनमें से केवल 2 प्रतिशत को ही विधायक एवं सांसद के विषय में जानकारी थी। ये सारे विद्यार्थी 15 से 18 वर्ष आयु वर्ग के थे, जो आने वाले 2 से 3 वर्षों में मतदान करने वाले थे। हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि एक नागरिक के तौर पर ये अपने प्रतिनिधि का चयन किस प्रकार करेंगे जबकि उन्हें उनके कार्यों की जानकारी भी नहीं थी। अतः इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए स्थानीय निकाय के संस्थागत ढाँचे पर समझ तैयार की गई। इसके अगले चरण में हमारे द्वारा उन्हें विभिन्न शासकीय योजनाओं के संदर्भ में जानकारी प्रदान की गई। राज्य और देश के संवैधानिक निकायों के विषय में चर्चा कर हमारे प्रतिनिधियों के विषय में जानकारी उपलब्ध कराई गई। इस विषय में सबसे अधिक रोचक तथ्य तब सामने आया जब उन किशोरों को 'मनरेगा' की जानकारी मिली और उसमें भी मोनिट्रिंग एवं नागरिक की भागीदारी के माध्यम के बारे में पता चला। यदि हम इस पूरी प्रक्रिया को गहनता से देखते हैं तो हम पाते हैं कि इस पूरी प्रक्रिया में जिन युवाओं ने भागीदारी की वे स्वयं में तो नागरिक के तौर पर सक्षम हुए ही इसके अतिरिक्त जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी उनके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई।

> किशोरों के साथ संवैधानिक समझ बढ़ाने पर काम कितने बदलावकारी परिणाम दे सकता है इसका एक उदाहरण इस घटना में देखने को मिलता है। अग्रणी द्वारा संचालित शिक्षालय केंद्र जो कि मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के आदिवासी विकासखंड कुरई में स्थित है। इस केंद्र में संचालित किशोरों की एक सामान्य कक्षा में जब MNREGA पर चर्चा हुई और यह बात सामने आई कि किस तरह MNREGA के MIS सिस्टम का प्रयोग करके सभी कार्यों का लेखा-जोखा देखा जा सकता है। तब किशोरों द्वारा अपनी ग्राम पंचायत द्वारा किये गए कार्यों का विवरण देखा गया, इस अवलोकन में प्रथम दृष्टया ही कई ग़लतियाँ सामने आई, जिनमें सबसे प्रमुख थी फर्जी नामों पर मजदूरी के भुगतान की।
>
> इस बात को किशोरों द्वारा गाँव के वरिष्ठ लोगों, मजदूरों, किसानों, महिलाओं तक पहुँचाया गया एवं ग्रामीण स्तर पर एक आंदोलन शुरू हुआ जिसकी प्रमुख माँग सामाजिक अंकेक्षण की थी। यह आंदोलन बढ़ा और बाद में केंद्र सरकार के ग्रामीण विकास विभाग के हस्तक्षेप के बाद पूरे कुरई ब्लॉक की 62 पंचायतों के सामाजिक अंकेक्षण का आदेश दिया गया। इस प्रक्रिया में 62 पंचायतों का सामाजिक अंकेक्षण एवं एक जन सुनवाई हुई, जिसका फायदा लगभग एक लाख मज़दूरों को हुआ। किशोरों के साथ संवैधानिक मूल्यों एवं नागरिकता पर काम करने के सकारात्मक परिणामों का ये एक रोचक उदाहरण है।

जुलाई, 2014 में एक कार्यशाला में मनरेगा के विषय में जब शिक्षालय के किशोर-किशोरियों को यह ज्ञात हुआ कि इसकी ऑनलाइन मोनिट्रिंग के लिए MIS सिस्टम बनाया गया है, जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपने ग्राम या अन्य ग्राम से जुड़ी जानकारी देख सकता है - जैसे कितने काम एक वित्तीय वर्ष में हुए, उसमें कितनी संख्या में मज़दूर एवं सामानों का उपयोग हुआ, कितना खर्च किया गया, मज़दूरों के नाम और कितने दिन काम किया गया, आदि। कुछ उपस्थित किशोर-किशोरियों ने ग्राम पंचायत दरासी कलाँ की जानकारी अपने मोबाइल पर देखी और यह देखने

के बाद उनके मन में कुछ शंकाएं उत्पन्न हुई, इस बात के चलते उन्होंने गाँव में स्थित तालाब के गहरा करने के कार्य से संबंधित दस्तावेज़ों का प्रिंट निकलवाया। अच्छे से परीक्षण किये जाने पर पाया कि मनरेगा के अंतर्गत किये गए तालाब गहरीकरण और अन्य कार्यों में जिनके नाम मज़दूरों के रूप में दर्ज़ हैं उनमें से कुछ गाँव छोड़कर अन्य शहरों में काम करने गए हैं अथवा कुछ अब जीवित ही नहीं हैं। साथ ही गाँव के ही एक पूर्व जनपद पंचायत सदस्य जिनके हाथ और शरीर एक दुर्घटना में जल गए थे उनका नाम भी मज़दूरों की सूची में पाया गया। यह देखकर किशोरों और युवाओं में काफी रोष पैदा हुआ और उनके द्वारा ग्राम पंचायत में इसकी शिकायत की गई। अपने अभिभावकों के समक्ष यह बात रखकर उन्हें भी इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि अभिभावकों और अन्य युवाओं के द्वारा इसके विरुद्ध आवाज़ उठाई गई और स्थानीय सरपंच व सचिव से इसकी शिकायत कर कार्यवाही की माँग की गई, जिसे पंचायत द्वारा अनसुना कर दिया गया। इस घटना से आक्रोशित गाँव के निवासियों द्वारा स्थानीय जिला पंचायत सदस्य व अध्यक्ष, जनपद पंचायत सदस्य व अध्यक्ष, विधायक, सांसद, जनपद सीईओ, जिला पंचायत सीईओ आदि से मुलाकात कर इस विषय में शिकायत की, जिसका परिणाम भी असफल ही रहा।

इसके बाद गाँव के निवासियों और अग्रणी के साथियों ने साथ मिलकर इस लड़ाई को आगे बढ़ाने का कार्य शुरू किया, जिसके अंतर्गत निर्णय लिया गया कि पहले ग्रामवासी इस भ्रष्टाचार के विरुद्ध अनशन पर बैठेंगे और अग्रणी के वॉलंटियर्स मिलकर मीडिया के माध्यम से इस आवाज़ को और व्यापक स्तर तक लेकर जाएंगे। इसके तहत ग्राम पंचायत दरासी के भ्रष्टाचार के सामाजिक अंकेक्षण की माँग एवं पूर्व जनपद सदस्य जिनके हाथ काम नहीं कर सकते थे, उनकी कहानी को सिवनी, जबलपुर और राजधानी के हिंदी-अंग्रेजी अखबारों तक पहुँचाई गई। जिसका परिणाम यह हुआ कि दो दिन के अनशन में सारा प्रशासन तुरंत हरकत में आया और जिला कलेक्टर ने सबडिविजनल मजिस्ट्रेट, सिवनी की उपस्थिति में मनरेगा के प्रावधान के अंतर्गत सामाजिक अंकेक्षण (सोशल ऑडिट) की प्रक्रिया कराये जाने का आदेश पारित किया गया।

यह आदेश मजबूरी का था। सोशल ऑडिट पूरी दबंगाई भरा नज़र आया, जहाँ SDM साहिबा के बगल में कुरई थाना के थानेदार कुर्सी लगाकर बैठे और नीचे बैठी जनता। थानेदार अपनी दबंग आवाज़ में सवाल करते और सहमी-सी जनता जो कह पाती कहा और कुछ अनकहा ही रह गया। जो तथ्य सोशल ऑडिट में सामने आये उसमें करीब चार लाख से अधिक के भ्रष्टाचार की बात सामने निकल कर आई, साथ में झूठी मज़दूरी, अधूरे काम आदि के तथ्य भी सामने आए। इस पर झटपट जिला पंचायत सीईओ द्वारा सरपंच और सचिव का एक दिन का मानदेय काटने की कार्यवाही कर दी गई जो सिर्फ दिखाने के लिए थी। इतनी लड़ाई लड़ने के बाद ग्रामवासियों में बड़ा रोष था, इतनी मेहनत के बाद कार्यवाही के नाम पर सिर्फ दिखावा। पुनः ग्रामवासियों और अग्रणी की टीम द्वारा निर्णय लिया गया कि अब इस मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर तक लेकर जाएंगे। इसी कड़ी में एक ईमेल इस पूरी कहानी और तथ्यों के साथ-साथ अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं, राजनैतिक पार्टियों के पदाधिकारियों, संवैधानिक पदों पर आसीन जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों को लिखा गया। उनमें से एक सामाजिक कार्यकर्ता अरुणा रॉय द्वारा इसका संज्ञान लिया गया और इस मुद्दे को उनके द्वारा पूर्व ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज के केन्द्रीय मंत्री रहे जयराम रमेश तक पहुँचाया गया। उन्होंने इस मुद्दे को ग्रामीण विकास मंत्रालय तक पहुँचाया, तब त्वरित कार्यवाही करते हुए मुख्य सचिव द्वारा पूरे कुरई ब्लॉक का सोशल ऑडिट करने का निर्देश जारी किया गया। जिसके लिए अग्रणी से जुड़े शिक्षालय के एवं अन्य युवाओं ने VSA की भूमिका निभाई। लगभग 62 युवाओं की टीम द्वारा 62 पंचायतों का सोशल ऑडिट किया, जिसमें बहुत सारी जगहों पर भ्रष्टाचार के मामले, मज़दूरी भुगतान से जुड़े मामले, शौचालयों से जुड़े मामले, खेल मैदान, स्कूल मैदान, सड़क, नाली, बाउंड्री वॉल, ग्राम सभाग्रह आदि से संबंधित मामले निकल कर आए।

सोशल ऑडिट की प्रक्रिया के बाद, अंत में जन सुनवाई होनी थी, कार्यवाही के डर से सरपंच व सचिव द्वारा त्वरित रूप से साल भर से रुकी मज़दूरी, शौचालय का सामान, खेल मैदान आदि कार्यों को रातों-रात पूरा करा दिया गया। अंत में जन सुनवाई में अनेकों पंचायतों में करोड़ों रुपयों के घोटालों की बात उजागर हुई, अनेक सरपंच व सचिवों पर कार्यवाही हुई। एक बड़ा बदलाव लगभग 1 लाख 70 हजार की आबादी वाले आदिवासी बाहुल्य कुरई ब्लॉक के ग्राम वासियों ने पहली बार अनुभव किया कि सत्ता में उनकी भी भागीदारी है। उन्होंने समझा कि कई प्रक्रियाओं और दस्तावेज़ों को उन्हें देखने और इनकी निगरानी रखने का अधिकार प्राप्त है। जब वे मिलकर आवाज़ उठाते हैं तो बदलाव आता है। साथ ही निरंकुश होती ग्रामीण पंचायती राज व्यवस्था में पहली बार जनता की लगाम लगी। युवाओं ने पहली बार लोकतंत्र में जनता की ताकत का स्वाद चखा और देखा भी। इन प्रक्रियाओं में भागीदारी की भावना का विकास हुआ परन्तु यह यात्रा एक दिन की नहीं अपितु निरंतर चलने वाली है, हर दिन नागरिक का संघर्ष सत्ता के साथ होता रहेगा, जहाँ उसे अपनी ताकत ऊर्जा बनाये रखनी है जिसमें जानकारी और शिक्षा उसका आत्मबल है। स्वराज का रास्ता सक्षम नागरिक ही बना सकता है, सच्चे आत्मबल के साथ, बिना स्वराज लोकतंत्र बेमानी है।

महात्मा गाँधी का सपना था शोषण विहीन समाज की स्थापना, जहाँ शिक्षा का स्वरुप ऐसा हो कि व्यक्ति समाज, अर्थशास्त्र और राजनीति को अनुभवात्मक शिक्षा के माध्यम से जी भी पाए और आत्मसात कर पाए। यदि एक विद्यार्थी विद्यालय में चरख़ा चलाकर सूत कातना सीखता है तो आवश्यक है कि उसे खेत में उत्पादित होने वाले कपास के किसान की मेहनत और पीड़ा का अंदाज़ा हो, वहीं वो जाने कि उसके द्वारा काता गया सूत किस प्रकार उससे सस्ते दामों में खरीदकर मेनचेस्टर में बनने वाले महँगे कपड़ों के रूप में उसी के बाज़ार में लाकर बेचा जाता है, वह यह भी जान सके कि इस प्रकार से कंपनी द्वारा जो पैसा अर्जित किया जाता है उसका उपयोग उसके ही शोषण और शासन चलाने में किया जाता है जो इसकी राजनीति है। बस इसी अनुभवात्मक शिक्षा को आधार बनाकर अग्रणी ने अपने शिक्षा के केंद्र की स्थापना की जिसे नाम दिया अग्रणी पब्लिक स्कूल।

स्कूल व्यवस्था और संवैधानिक मूल्य

वर्ष 2013 के नवम्बर माह में अपने पुराने अनुभवों को ध्यान में रखते हुए अग्रणी समूह के रूप में हमें महसूस हुआ कि शिक्षा में हमारे किये हुए नवाचारों और आगामी समय में किये जाने वाले नवाचारों के लिए एक स्वस्वामित्व वाले स्थान की आवश्यकता है। अग्रणी पब्लिक स्कूल की इस प्रयोगशाला के साथ संसाधन केंद्र का सपना लिए हमने इसकी नींव रखी। इस प्रकल्प की शुरुआत से ही हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न था इस संस्थान के मूल्य? जब बात मूल्यों की आती है तो सामान्यता एक स्कूल के मूल्य जो होते हैं वही होने चाहिए। परन्तु प्रश्न था क्या वर्तमान स्कूलों के मूल्यों के साथ शिक्षा के असल उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है? अंततः शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिए? जवाब है एक बेहतर शिक्षा व्यवस्था जो मानवीय मूल्यों पर आधारित हो, परन्तु मानवीय मूल्य शाब्दिक तौर पर और संदर्भ लेने हेतु कहीं लिखित भी हों, व्यक्ति कैसा हो और किस समाज की बात? इन सब प्रश्नों का उत्तर हमें मिला संविधान से जहाँ स्वतंत्रता, न्याय, समता, बंधुता, लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी मूल्यों की बात हो रही हैं। हमने पुनः अपनी सीखों और अनुभवों के आधार को टटोला तो पाया कि वर्तमान मुख्य धारा की शिक्षा व्यवस्था में वे मूल्य जो एक सक्षम नागरिक का निर्माण कर सके वो अनुपस्थित थे।

अगला प्रश्न था कि इन मूल्यों को एक संस्थान के रूप में स्थापित कैसे किया जाए? उत्तर पुनः मिला हमारी व्यवस्था से जहाँ सभी को समाहित कर एक व्यवस्था का निर्माण हो।

समुदाय की भागीदारी : अग्रणी शुरुआत से ही समुदाय की पारस्परिक भागीदारी पर यकीन करता चला आया है। इस भागीदारी को एक शिक्षा संस्थान में लाने हेतु हमने शुरुआत से ही इसकी अवधारणा बनाते समय समुदाय से संवाद

प्रारंभ किया। समुदाय की शिक्षा और व्यवस्था के बारे में अपनी एक सोच है और किसी भी नवाचार की समुदाय में स्वीकार्यता बिना संवाद और उसकी समझ को उस तक पहुँचाये बगैर संभव नहीं है। इसके साथ शिक्षा केवल संस्थानों तक सीमित नहीं है, समुदाय स्वयं अपने अनुभवों और विचारों से निरंतर शिक्षा में योगदान कर रहा होता है। अतः आवश्यक है कि शिक्षा के प्रयोगों में समुदाय का पारस्परिक योगदान हो।

अभिभावकों की भागीदारी : कार्यक्षेत्र के समुदाय में सभी पालकों का समावेश तो हो ही जाता है। परन्तु समुदाय और अभिभावकों के मध्य कुछ अंतर अवश्य होता, वह कभी गंभीरता के रूप में होता है तो कभी चिंता के रूप में, क्योंकि इसका सीधा प्रभाव उनके अपने बच्चों पर होता है। इसीलिए अग्रणी पब्लिक स्कूल की शुरुआत से ही हमने प्रयास किया कि प्रबंधन और शिक्षा से जुड़े हर फैसले में अभिभावकों का भी योगदान हो। शिक्षा के नवाचारों और मूल्यों पर कार्य को सफल बनाने में किशोरों के संदर्भ में अभिभावक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इसका उदाहरण समझने के लिए हम आज़ादी के मूल्य को लेते हैं : यदि हम किशोरों में आज़ादी के मूल्य को स्थापित करते हैं लेकिन घर में अभिभावक इस मूल्य के विपरीत हैं तो इस स्थिति में बच्चों के साथ किया गया कार्य एक मूल्य के रूप में स्थापित कर पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। इसका दूसरा पहलु यह भी है कि किशोर शाला के आलावा बहुत समय अपने घर एवं समाज के साथ गुजारते हैं और सबसे अधिक मूल्यों की शिक्षा उन्हें इनके माध्यम से ही प्राप्त होती है। अतः यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि उन्हें कम से कम ये मूल्य ज़ीने हेतु अपने घर में उपयुक्त सहयोग उपलब्ध हो पाए। साथ ही संस्थान के साथ संबंध को पारदर्शी और मजबूत बनाने हेतु आर्थिक निर्णयों के लिए एक अभिभावक समिति का निर्माण भी किया, जिसका कार्य संस्था के विद्यार्थियों के लिए आर्थिक निर्णय लेना है और प्रबंधन को दिशा देना है।

शिक्षकों की भागीदारी : शिक्षक असल में किशोरों के जीवन के शुरुआती दौर में बहुत ही अहम् भूमिका निभाते हैं। शिक्षक एक किशोर के लिए आदर्श के रूप में होता है। बहुत बार किशोर अपने शिक्षक के आचरण के अनुरूप आचरण करने का प्रयास करते हैं। बहुत कम आयु की अवस्था में किशोर हमेशा शिक्षक की हर बात का अनुसरण करते हैं। अतः ये बहुत आवश्यक हो जाता है कि जिन मूल्यों को हम किशोरों में देखना चाहते हैं वे मूल्य शिक्षक अवश्य जियें, जिसके लिए आवश्यक है कि संस्थान के मूल्य भी वही हों जो शिक्षक जियें अर्थात सभी एक-दूसरे से जुड़े हैं, इन सबको समझाते हुए हमारे द्वारा अग्रणी पब्लिक स्कूल के ढाँचे में शिक्षकों की भागीदारी सभी निर्णयों में जिनमें आर्थिक, सामाजिक एवं भविष्य की योजनाओं और विद्यार्थी हित के समस्त फ़ैसलें शामिल हैं। संस्थान की नीति और दिशा के निर्धारण में भी शिक्षकों की अहम् भूमिका होती है।

किशोरों की भागीदारी : इस पूरे प्रयास में सबसे अहम् हैं किशोरों के लिए उस जगह का निर्माण कर पाना जहाँ किशोर स्वतंत्रता, समानता, न्याय एवं बंधुता जैसे मूल्यों को अनुभव कर पाएं। जब कभी हम मूल्यों की बात करते हैं तो ये मूल्य केवल अनुभवों पर ही आधारित हो सकते हैं; अतः आपको उन विधियों की खोज करनी होगी जिनके द्वारा किशोर इन अनुभवों से गुज़रें। इस अनुभव को निर्मित करने के लिए हमारे द्वारा संस्थान के सिद्धांतों में मूलतः अहिंसा, स्वतंत्रता, प्रेम, न्याय, समानता, सहभागिता, वृद्धि, बदलाव आदि मूल्यों का समावेश किया जोकि भारतीय संविधान, मानवीय एवं 5वीं परिधि के मूल्यों से समाहित होकर बने हैं।

सभी की भागीदारी के लिए हमारे द्वारा कुछ नवाचारों का समावेश भी किया गया :

- इनमें प्रथम है हर माह अभिभावकों, छात्र संसद, शिक्षक एवं प्रबंधन की संयुक्त बैठक, जिनमें शाला से जुड़े तात्कालिक एवं दूरगामी निर्णय लिए जाते हैं। साथ ही इन निर्णयों एवं नवाचारों के संदर्भ में चर्चा कर इनकी पूर्ति के लिए आवश्यक संसाधनों पर भी चर्चा होती है। संस्थान की आगामी नीतियों में होने वाले नवाचार, शिक्षा

संबंधी बदलाव अथवा नवाचारों के संदर्भ में जानकारी भी उपलब्ध कराई जाती है। यह बैठक माह के दूसरे शनिवार को आयोजित की जाती है।

- अगले स्तर पर अभिभावकों के साथ किशोरों से जुड़े अलग-अलग मुद्दों पर कार्यशाला का आयोजन भी नियमित रूप से किया जाता है। जिनमें हमारा प्रयास किशोर अवस्था की चुनौतियों और अनुभवों से अभिभावकों को परिचित कराना होता है। अभिभावक सामान्यतः इनसे परिचित होते ही हैं परन्तु सामाजिक रूप से व्याप्त रूढ़ियों के चलते वे इन पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते। उन विषयों को समय-समय पर चर्चा का विषय बनाने से वे सामान्य जीवन में बहुत-सी उन बातों का ध्यान रख पाते हैं जो किशोरों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

- आर्थिक सलाहकार समिति का निर्माण संस्थान को आर्थिक रूप से संवहनीय बनाये रखने के लिए किया गया है। पारदर्शिता एवं सहभागिता को बनाये रखने के लिए अभिभावकों के सभी वर्गों के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित कर इस समिति का निर्माण किया गया है।

- विद्यार्थी कैबिनेट अपने-आप में एक नवाचार इस मायने में है कि जहाँ RTE एक्ट आने के बाद से ही हर विद्यालय में छात्र संसद का निर्माण आवश्यक है जो अपने निर्वाचित सदस्यों के साथ संस्थान के प्रबंधन में आवश्यक भूमिका निभाएगी। इसको और मज़बूत करते हुए हमारे द्वारा संस्थान में इस कबिनेट को और अधिक शक्तियाँ प्रदान की गई हैं जिनमें प्रति सोमवार बैठक के साथ निर्णयों में सहभागिता, मासिक बैठकों के माध्यम से, हर विभाग की गतिविधियों के सुचारू संचालन हेतु संसदीय सचिव की नियुक्ति (एक शिक्षक इस पद भार को संभालते हैं) कैबिनेट द्वारा लिए निर्णयों को आवश्यक रूप से संस्थान के नियमों के आधार पर परख़ कर क्रियान्वित करवाना शामिल है। यह प्रक्रिया हमारी वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था और लोकतांत्रिक ढाँचे को बेहतर तरीक़े से समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पिछले लगभग 4 वर्षों के अनुभव में हमने यह पाया है कि किशोर विकास में संस्था, परिवार एवं समाज के मूल्य व विचारधारा बहुत अधिक प्रभाव डालती है। यदि हम मूल्यों से युक्त शिक्षा किशोरों तक ले जाना चाहते हैं तो हमें सभी समूहों के साथ समान्तर कार्य करना आवश्यक होगा। इसके साथ ही संस्थानों का दायित्व है कि वे अपने कार्यों में स्वयं, समाज, परिवार और संवैधानिक मूल्यों का समावेश करें।

किशोर छात्रों के साथ संवैधानिक मूल्यों और संवैधानिक प्रक्रियाओं की समझ पर काम करते-करते कई रोचक अनुभव सामने आते हैं। इन्हीं में से एक हुआ जब कक्षा 8वीं की एक इतिहास की कक्षा में NCERT की किताब में जहाँ - अध्याय 4 में बिरसा मुंडा का जिक्र आया है - इस किताब में बिरसा मुंडा के संदर्भ में जो भाषा इस्तेमाल की गई है वह दूसरे ऐतिहासिक पात्रों के विषय में इस्तेमाल की गई भाषा से अलग है एवं कम सम्मानीय दिखाई पड़ती है, उदाहरण के तौर पर जहाँ औरंगजेब का जिक्र है वहाँ लिखा गया है ''मुगल बादशाहों में औरंगजेब आख़िरी शक्तिशाली मुग़ल बादशाह थे'' वहीं बिरसा मुंडा के विषय में जहाँ जिक्र है वहाँ लिखा है कि ''बिरसा नाम का आदिवासी घूमता देखा गया''।

इस विषय में जब कक्षा में चर्चा हुई तब मामले को छात्र संसद में चर्चा के लिए ले जाने की बात आई। छात्र संसद में इस विषय पर चर्चा हुई और आदिवासी, गैर आदिवासी सभी संसद सदस्यों ने इस पर आपत्ति जताते हुए इस विषय पर NCERT को एक पत्र लिखने का निर्णय लिया, सभी ने मिल कर पत्र लिखा। सभी के हस्ताक्षर हुए। उस पत्र को NCERT के पास भेजा गया और भाषा सुधारने की अपील की गई। छात्रों के थोड़े इंतजार के बाद NCERT से एक पत्र वापस आया और उन्होंने यह माना कि छात्रों के द्वारा बोली जा रही बात सही है और वे आगामी वर्ष

के पुस्तक प्रकाशन में इस विषय को ध्यान में रखते हुए सुधार कर पुस्तक प्रकाशित करेंगे। इस पूरी प्रक्रिया पर छात्रों की खुशी और आत्मविश्वास को शब्दों में बयान करना थोड़ा मुश्किल है।

यह पूरी घटना इस बात पर प्रकाश डालती है कि किस प्रकार संवैधानिक प्रक्रियाओं का शिक्षा में अनुभवात्मक प्रयोग छात्रों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहयोगी होता है। ◆

नवेंदु मिश्रा : शिक्षा में बी.ए. एल.एल.बी. किया है। इनकी सामाजिक मुद्दों और संविधान को लेकर काम करने में विशेष रुचि रहती है। स्कूल टीचर्स के साथ वे भारतीय संविधान पर काफी काम करते हैं। अग्रणी संस्था के सह-संस्थापक भी हैं। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन में फैलो रहे हैं साथ ही बहुत से लीडरशिप कार्यक्रमों में इनकी अग्रणी भूमिका रही है।

संपर्क : 9407054284; navendum12@gmail.com

गौरव जायसवाल : सोशल पॉलिटिकल एक्टिविस्ट हैं, शिक्षा से इंजीनियर हैं, शुरू में कुछ वर्ष कॉर्पोरेट में जॉब किया पर शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रुचि थी तो जॉब छोड़ कर फिर अग्रणी संस्था की शुरुआत की। बहुत-सी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप में फैलो रहे। इसके साथ ही शिक्षा कैसे चुनावी मुद्दा बने और शिक्षा में सुधार हो इसके लिए 'शिक्षा सत्याग्रह' के नाम से एक मूवमेंट भी चला रहे हैं।

संपर्क : 9826835066; gourav1009@gmail.com; https://www.facebook.com/agrini.org/

शिरीष कुमार : सोशल वर्क में मास्टर्स की उपाधि, सोशल वर्क में अनुभव के लिए कुछ सामाजिक संस्थाओं में वॉलंटियर किया। शिरीष अग्रणी संस्था के सीईओ। विशेष रूप से संविधान और लाइफ स्किल को लेकर बच्चों के साथ काम करते हैं, साथ ही डिग्निटी फैलो हैं जिसमें विभिन्न माध्यमों से 'संवैधानिक मूल्यों' को बढ़ाने के लिए समुदाय में काम कर रहे हैं।

संपर्क : 8878323255; shirishchouriya@gmail.com

स्वराज की दिशा में भविष्य के शिक्षक

पल्लवी वर्मा पाटिल एवं रोशनी रवि

भाषान्तर : मधुलिका झा

बैंगलोर में शिक्षकों के एक समूह ने वर्तमान समय में नई तालीम के विचार के साथ एक प्रयोग किया। इस प्रयोग के लिए उन्होंने उच्च प्राथमिक स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल भोजन विषय को केंद्र में रखते हुए हाथ से काम करने के अभ्यास और शारीरिक श्रम को जोड़ा। इसे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय और पूर्णा लर्निंग सेंटर के बीच एक सहयोगपूर्ण परियोजना के रूप में परिकल्पित किया गया था। इसे 'दि रागी प्रोजेक्ट' (टीआरपी) का नाम दिया गया। यह परियोजना वर्ष 2017-19 के दौरान लगभग दो सालों तक चली। इस दौरान शिक्षकों ने रागी (मंडुआ) या बाजरे की खेती करने, स्कूल के पास की भूमि में जैविक सब्ज़ियाँ उगाने और खेत व बगीचे से प्राप्त भोज्य पदार्थों को सप्ताह में एक बार सभी के लिए पकाने जैसे कामों में बच्चों को शामिल करके कई शैक्षणिक अवधारणाओं के सीखने-सिखाने पर काम किया।

टीआरपी परियोजना में शामिल सभी शिक्षकों को जैविक खेती करने और भोजन उगाने का कौशल सीखना था। शिक्षकों ने आयु के अनुरूप शैक्षणिक अवधारणाओं को खेती करने के दौरान हाथ से किए जाने वाले कामों से जोड़ने की भी कोशिश की। नई तालीम का यह प्रयोग शिक्षकों से काफ़ी अपेक्षा करता था। शिक्षकों ने भोजन की थीम को केंद्र में रखकर कक्षा के लिए नई विषयवस्तु, कार्यपत्रक, पाठ योजनाएं और कक्षा-भ्रमण की रूपरेखा तैयार की। उन्होंने खेत को तैयार करने के लिए सप्ताहांत और स्कूल के घंटों के बाद भी काम किया; बच्चों को इसमें शामिल करने से पहले खुद जैविक कृषि से संबंधित नए कौशलों और तरीकों को सीखा, न केवल कक्षा बल्कि रसोई और खेत के प्रबंधन और संचालन के लिए भी नई व्यवस्थाओं तरीक़ों को अपनाया; उपयुक्त कक्षा-भ्रमण के अंतर्गत कृषि उपकरणों का इतिहास जानने के लिए किसी संग्रहालय की यात्रा, जैविक खेत से लेकर एक स्थानीय रागी प्रसंस्करण मिल तक का भ्रमण, एक बीज बैंक की

यात्रा, और कीटों की प्रदर्शनी जैसे अनेक शैक्षणिक भ्रमणों का आयोजन किया गया। मौजूदा शैक्षणिक समय सारिणी और शिक्षण के काम के दायरे में रहते हुए शिक्षकों ने इस परियोजना के लिए अतिरिक्त मेहनत की।

गाँधीजी ने खुद उल्लेख किया है कि नई तालीम पर काम करने वाले शिक्षकों की पहली पीढ़ी से उन्हें कितनी अपेक्षाएं थीं- **"हमें ऐसे शिक्षकों की ज़रूरत है जो मौलिक हों और उत्साह से लबरेज हों; जो हर दिन यह विचार करेंगे कि वे अपने विद्यार्थियों को क्या पढ़ाने वाले हैं। शिक्षक को यह ज्ञान भारी-भरकम किताबों से नहीं मिल सकता है। उसे अवलोकन और चिंतन की अपनी स्वयं की क्षमताओं का उपयोग करना होगा और शिल्प की सहायता से, संवाद के माध्यम से अपने ज्ञान को बच्चों तक पहुँचाना होगा।"** (सेवाग्राम, 1939) इसीलिए आज के समय में भी नई तालीम को पुनर्जीवित करने के लिए शिक्षकों का उत्साह और सीखने-सिखाने की नई संभावनाओं को तलाशने की रचनात्मकता बेहद अहम है। इसके अलावा, इस तरह की शिक्षा में शिक्षकों को एक-दूसरे के शिक्षण के तरीक़ों को आपस में सीखने की आवश्यकता होती है। यह लेख 'द रागी प्रोजेक्ट' (टीआरपी) में भाग लेने वाले शिक्षकों के अनुभवों की छानबीन करता है। आलेख पाँच शिक्षकों- रोशनी रवि (आरआर) जो मिडिल स्कूल में सामाजिक विज्ञान और भाषा पढ़ाती थीं; समिता श्रीवत्स (एसएस) जिन्होंने मिडिल स्कूल में सामाजिक विज्ञान पढ़ाया; वसंत कुमारी (वीके) जो मिडिल और हाई स्कूल में विज्ञान पढ़ाती थीं; अश्विनी पाटिल (एपी) जो भाषा शिक्षक होने के साथ स्कूल की रसोई की गतिविधियों की समन्वयक रहीं और जलज अम्बा देवी (जेएडी) जिन्होंने स्कूल में कन्नड़ भाषा और शिल्प कार्य सिखाया, के साथ हुई बातचीत को समेकित करता है।

खेत बने कक्षा : सीखने-सिखाने की नई परिकल्पना

1. रागी परियोजना में आपकी रुचि कैसे हुई? किन बातों ने आपको परियोजना में शामिल होने के लिए प्रेरित किया?

रोशनी रवि : यह परियोजना सीखने और बढ़ने के अवसर की तरह सामने आई। मैं कुछ अलग करना चाहती थी, कुछ ऐसा जो मेरे कक्षा शिक्षण को एक नई दिशा दे सके। मैं भोजन और परिवेश में निकलने वाले अपशिष्टों को लेकर कुछ करना चाहती थी और साथ ही कुछ ऐसा जो मुझे अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में आगे बढ़ने लिए प्रेरित करे।

समिता श्रीवत्स : स्कूल में नई शिक्षिका के रूप में अपने पहले ही दिन मैं रागी के खेतों में गई, वहाँ की ऊर्जा और उत्साह को देखना रोमांचक था। शिक्षकों और छात्रों के साथ स्कूल के दिन का पहला घंटा खेतों में बिताना बहुत अच्छा अनुभव था! मेरे लिए यह परियोजना हाथों से काम करने की कुशलता को समझने का एक तरीक़ा था, और खेती का काम एक तरह से हमारे शरीर को प्रशिक्षित कर रहा था।

वसंत कुमारी : खुद कृषक समुदाय से होने के कारण खेती को खुद करके सीखने का अवसर मेरे लिए खुशी भरा क्षण लेकर आया। मैंने खुद कभी भी खेती के काम और फसल के उत्पादन चक्र को शुरू से अंत तक नहीं देखा था और यह जानना सचमुच अद्भुत था कि इसे स्कूल के पाठ्यक्रम में जगह मिल सकती है।

अश्विनी पाटील : परियोजना के बारे में सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई थी। मैंने बचपन से ही अपने परिवार को खेती करते हुए देखा है। मुझे खुशी हो रही थी कि हमें इसे स्वयं करने का मौका मिला है। यह एक बेहतरीन अवसर था कि हम बच्चों को भोजन का मूल्य, खेती करने और अपने भोजन को उगाने में लगने वाली मेहनत और भोजन के

अपव्यय के बारे में सिखा सकें ताकि वे इस पूरी प्रक्रिया से परिचित हों और इसकी सराहना कर सकें। शहरी बच्चे सोचते हैं कि दूध प्लास्टिक के पैकेट से आता है!

जलज अम्बा देवी : मेरे रोज़मर्रा के भोजन में रागी हमेशा शामिल होता है। इसलिए, मैं बीज से लेकर भोजन की थाली तक रागी के आने की पूरी यात्रा में शामिल होना चाहती थी।

2. रागी परियोजना का हिस्सा बनने के अनुभव ने आपके व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास यात्रा को किस तरह से प्रभावित किया है? क्या इससे एक शिक्षक के रूप में आप में कुछ बदलाव आए? क्या इसने आपके व्यक्तिगत जीवन और पसंद-नापसंद को प्रभावित किया है?

रोशनी रवि : इस अनुभव ने एक शिक्षक के रूप में मेरे काम के तरीक़ों और मेरी पहचान के साथ ही वर्तमान समय में पर्यावरणीय चुनौतियों पर काम करने वाले व्यक्ति के तौर पर मुझे कहीं गहरे तक प्रभावित किया है। मैं कक्षा से बाहर अपने परिवेश में काम करने की संभावनाओं और अनुभव से सीखने के महत्व को प्रत्यक्ष रूप से देख पा रही थी। मैं खेतों और अपनी कक्षा के बीच सार्थक जुड़ाव बना पाने में सक्षम थी। मैं विभिन्न प्रकार के ज्ञान और शिक्षा के महत्व को समझ पा रही थी और मैंने इन्हें साथ जोड़ने की कोशिश शुरू कर दी थी। इस अनुभव ने शिक्षण प्रक्रिया के दौरान सामने आने वाले कई सवालों से जूझने के लिए मुझे प्रेरित किया। एक शिक्षक के रूप में, इसने वास्तव में मुझे यह सोचने पर मजबूर किया कि विकल्प और समाधान पेश करने के साथ-साथ अपने छात्रों को कैसे दुनिया की वास्तविकताओं से रू-बरू कराया जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि रागी परियोजना (वर्तमान परिस्थितियों में उपजी) निराशा और बेबसी को एक करारा जवाब है- यह मेरे लिए आशा, जुझारूपन और मज़बूती का प्रतीक है, ठीक उसी तरह जैसे बाजरा रागी जो खेतों में मज़बूती से खड़ा रहता है!

समिता श्रीवत्स : व्यक्तिगत रूप से मुझे ऐसा लगा कि भोजन के बारे में मैंने पहले कभी इस तरह से नहीं सोचा था। एक उपभोक्ता के रूप में मेरी पसंद-नापसंद बदल गई है। हम घर पर क्या पकाते और क्या खाते हैं अब मैं इस बारे में सोचती और चिंतन करती हूँ। खेती में जो अपनी एक लय होती है उसने मेरे अंदर के शिक्षक और नृत्यांगना दोनों को आकार दिया है। मुझे किसान के शरीर की गतियों को अलग तरह से देखने-समझने का मौका मिला- एक किसान कैसे उकड़ूँ होकर नीचे बैठता है; चलता है; कैसे प्रयासहीन तरीके से अपने उपकरणों को काम में लेता है। एक कलाकार के रूप में मैं इस परियोजना से मिले सांस्कृतिक अनुभवों- फसल के उत्पादन का उत्सव मनाने के लिए लोक गीतों और स्थानीय थिएटर समूहों को इस परियोजना में शामिल करने के प्रयास की सराहना करती हूँ। मैंने यह समझना शुरू किया कि हमारा शरीर हमारे परिवेश का ही अभिन्न अंग है।

वसंत कुमारी : अपने सीखने-सिखाने के तरीक़े को परखने के लिए मेरे पास दो कार्यक्षेत्र थे- खेत और कक्षा। मैंने अपने बुनियादी कृषि कौशल और स्थानीय ज्ञान को शिक्षण में शामिल करने के तरीक़ों पर काम किया। मैंने यह भी समझा कि सिर्फ एक रूमानी ख़्याल रखने की बजाय उसे एक अच्छी योजना में कैसे बदला जाए। और यह भी कि व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से कैसे सह-संबंधों का अनुमान लगाया जाए। इस दौरान हम बहुत से विचारों पर काम कर रहे थे, उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो उपयुक्त नहीं थे और उनके विकल्पों की तलाश में हमने कई चीजों को पढ़ने, सुनने और देखने पर काम किया। आपसी संवाद की इस प्रक्रिया से मेरे अंदर का आत्मविश्वास काफ़ी बढ़ा। एक शिक्षक के रूप में मेरी पहचान और अधिक मज़बूत हो गई। यह परियोजना काफ़ी अधिक समय की माँग करती

थी, लेकिन मैंने कभी थकान महसूस नहीं की क्योंकि मैं अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचान पा रही थी।

अश्विन पाटील : अब लगभग दो साल हो रहे हैं जब हमने इस काम को पहली बार शुरू किया था, लेकिन मैं अब भी अपनी कक्षाओं में खेती के अनुभव के बारे में बात करती हूँ। बच्चे भी इस अनुभव को याद करते हैं। मैंने पाठ्यक्रम में पौधों, खेती की प्रक्रियाओं और बीजों के बारे में नई सामग्री को शामिल किया है। मैंने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में, यहाँ तक कि खेतों में भी, बच्चों को शामिल करने के अधिक रचनात्मक तरीक़ों के बारे में सोचने की कोशिश की। मैंने सीखा कि विभिन्न विषयों के बीच कैसे जुड़ाव बनाया जाता है। रागी की पहली फ़सल के बाद, जब हमने पोंगल मनाया तो हमने इस बारे में चर्चाएँ कीं कि क्यों यह किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण उत्सव रहा है, हमने गाने गाए और वह माहौल लगभग दिवाली का आभास दे रहा था! व्यक्तिगत रूप से, हमने अपने घर पर भोजन में रागी का अधिक उपयोग करना शुरू कर दिया, और इसका उपयोग करके कई नए व्यंजनों को बनाने की कोशिश की। मैंने बचपन में अपने पिता के साथ खेती की प्रक्रियाओं को केवल देखा भर था, लेकिन कभी सीधे भाग नहीं लिया। इस अनुभव के बाद मैं अपने जीवन में कृषि कार्य की तरफ वापस लौटना चाहूँगी। इस परियोजना ने रिटायर होने के बाद मुझे क्या करना चाहिए इसका एक उद्देश्य दे दिया है। इससे मुझे यह भी एहसास हुआ कि खेती का काम कठिन तो है लेकिन इसे करना संभव है।

जलज अम्बा देवी : इस परियोजना ने संभावनाओं के नए दरवाज़े खोले हैं और मुझे प्रेरित किया कि भविष्य में मैं अपने खुद के खेत होने पर विचार करूँ। एक शिक्षक के रूप में अपने शिक्षण पाठ्यक्रम में रागी को शामिल करने के नए तरीके खोजने में मुझे काफ़ी आनंद आया।

3. आपके अनुसार इस परियोजना की कुछ मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?

रोशनी रवि : छात्रों, शिक्षकों, सहायक कर्मचारियों, स्कूल प्रबंधन, माता-पिता, स्थानीय किसानों, कलाकारों, और वैज्ञानिकों जैसे कई लोगों का अलग-अलग समय पर इस काम के लिए एक साथ जुड़ना निश्चित रूप से इस परियोजना का एक अद्भुत अनुभव था। मैं इसे बहुत क़रीब से समझ और अनुभव कर पा रही थी कि इस काम को करने के लिए कितने अलग-अलग लोगों और उनके विविध अनुभवों व विशेषज्ञता की ज़रूरत होती है। किसी जश्न के लिए दो सौ से अधिक रागी लड्डू बनाने से लेकर खेत भ्रमण के लिए ज़रूरी व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करना जैसे सभी काम आपसी समन्वय पर निर्भर करते हैं। बच्चों को खेतों में देखना, उन जगहों को लेकर आपसी बातचीत, एक-दूसरे से सीखना, छोटी-छोटी खोज करना जैसे कई छोटे-बड़े अनुभव थे, जिन्होंने मुझे और मेरे साथी शिक्षकों को प्रेरित किया।

समिता श्रीवत्स : सबसे महत्वपूर्ण बात जो मैंने महसूस की वह यह थी कि खेतों में काम करते हुए बच्चों में आपस में भेद नहीं रह जाता और वे दूसरों को और उनके हुनर को सम्मान देना सीखते हैं।

वसंत कुमारी : मुझे कभी नहीं लगा कि मैं कक्षा में अकेली हूँ; वहाँ हमेशा 'समुदाय' का भाव था। वहाँ किसी 'सफलता' को हासिल करने का कोई दबाव नहीं था बल्कि पूरा नज़रिया ही यह था, 'आइए, इसे मिलकर करते हैं।' यहाँ तक कि अगर कोई तरीक़ा काम नहीं करता था तो भी हम उसे आसानी से बता और स्वीकार पाते थे। हम बहुत सारे लोगों के ज्ञान जैसे- सामान्य लोग, स्थानीय किसान, यहाँ तक कि मेरे किसान पिता के अनुभवों को भी काम में ले रहे थे! इसके अलावा, खेती के नए और स्थायी तरीक़ों को परखने के साथ ही मिट्टी को उर्वर बनाने और पौधों के विकास को बढ़ावा देने के लिए पारंपरिक तरीक़ों को वापस आज़मा रहे थे।

अश्विनी पाटील : इस प्रोजेक्ट से पहले मुझे रागी का अंग्रेजी नाम नहीं पता था। फसल पकने के बाद जब मैंने उसे क़रीब से देखा तो लगा कि 'फिंगर मिलेट' नाम इसके लिए एकदम सटीक है! मुझे रागी का उपयोग करके नए व्यंजन बनाने में मज़ा आया और साथियों ने मुझे ऐसे प्रयोग करने के लिए न केवल प्रेरित किया बल्कि सहयोग भी दिया। वह मेरा पसंदीदा समय है जब हमने साथ में बुआई करके इसकी शुरुआत की थी, हमने मिलकर सब कुछ किया। इस पूरी परियोजना के दौरान हमेशा खुशनुमा माहौल रहा, हर पल खुशी से भरा था- ऐसे किसी एक या दो क्षणों को चिह्नित कर पाना बहुत कठिन है।

जलज अम्बा देवी : मुझे बच्चों के साथ काम करने में, अपने भोजन में रागी का उपयोग करने के तरीक़ों को खोजने और उसे पकाने में बहुत मज़ा आया। यह देखना बहुत अच्छा था कि कैसे पूरी परियोजना के दौरान इससे जुड़ा हर व्यक्ति सकारात्मक रहा और इसके हर पल का आनंद लिया।

4. व्यक्तिगत तौर पर और शिक्षकों के एक समूह के रूप में आपने किस तरह की चुनौतियों का सामना किया?

रोशनी रवि : खेत और खेती के काम के साथ संबंध बनाने में छात्रों की मदद करना चुनौतीपूर्ण था, अचानक लंबे समय तक कक्षा से बाहर खेतों में रहना एक ऐसा बदलाव था जिसका उन्हें अभ्यस्त होना था। कृषि कार्य की अनिश्चितता को स्वीकारना और कक्षा में उस अनिश्चितता के विचार का सामना करना भी एक चुनौती थी। हमें अक्सर तत्काल सोचना होता था, उदाहरण के लिए- भूगोल में हमने क्या किया और खेत में क्या हो रहा था, इन दोनों के बीच एक जुड़ाव को देखना और समझना! प्रायः शिक्षकों को अतीत के अनुभवों को कक्षा में लाना होता था; बचपन के अनुभव, कहानियाँ, गीत और कला इस ज्ञान को साझा करने के महत्वपूर्ण साधन/उपकरण और माध्यम थे।

समिता श्रीवत्स : मुझे लगता है कि परियोजना से जुड़े सभी लोगों को समावेशी होने का एहसास कराना एक अहम चुनौती थी। सभी छात्रों में उत्साह और सहयोग के भाव को बनाकर रखना भी एक अच्छी चुनौती थी। एक शिक्षक के रूप में कुछ बच्चों को उदासीन देखना कठिन था, लेकिन मैंने महसूस किया कि मुझे उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए कुछ नए तरीके खोजने होंगे।

वसंत कुमारी : पाठ योजनाओं को बनाने और अपने काम के बारे में लिखने के अलावा एक साथ काम करते हुए साथियों की असहमति को सम्मान देना (असहमत होने के लिए सहमत होना) सीखना मेरे लिए वास्तव में चुनौतीपूर्ण था।

अश्विनी पाटील : कई बार मुझे लगा कि इस तरह के सीखने-सिखाने के तरीक़े को स्कूल प्रबंधन द्वारा अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। मुझे यह भी लगता था कि क्या हम बच्चों को खेती की वास्तविकताओं की पूरी तस्वीर दे पाने में सक्षम हो पाएंगे?

जलज अम्बा देवी : एक शिक्षक के लिए हर दिन चुनौती से भरा होता है। रागी परियोजना के दौरान हम सभी का ध्यान नई तकनीकों को सीखने और उसके हर पल का आनंद लेने पर केंद्रित था। हालाँकि कभी-कभी किसी तय काम को पूरा करना कठिन होता था। कुछ छोटे बच्चों की रुचि नहीं रह जाती थी। कभी-कभी किसी एक बात पर सहमति बनाने में समय लगता था, लेकिन इन सारे उतार-चढ़ाव के बावजूद हमने इस पूरी प्रक्रिया का आनंद लिया।

5. आपको क्या लगता है कि आज दुनिया में 'दि रागी प्रोजेक्ट (टीआरपी)' जैसी परियोजना की क्या भूमिका है?

रोशनी रवि : मुझे लगता है कि इस तरह की परियोजनाएं महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे छात्रों और शिक्षकों के संसार और दृष्टिकोण को विस्तृत बनाते हैं। रागी परियोजना में काम में ली गई शिक्षण पद्धति और दृष्टिकोण के साथ परिवेश की कोई भी जगह शिक्षण-कक्ष का काम कर सकती है, जहाँ रोज़मर्रा की गतिविधियों से ही सीखने-सिखाने के कई अवसर सामने आ सकते हैं; और ऐसा होना छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को स्कूलों में सीखे और सिखाए जाने वाले ज्ञान के औचित्य को समझने का अवसर देता है। ये जीवन को बदलने वाले अनुभव हैं जिनसे मिली सीख हमारे जीवन का हिस्सा हो जाती है और वह हमारे निर्णय लेने और जीवन विकल्पों, जैसे कि हम अपने भोजन की थाली के लिए क्या चुनेंगे, को प्रभावित करने की क्षमता रखती है।

समिता श्रीवत्स : हमने तमिलनाडु के पुवीधाम स्कूल नामक एक अन्य वैकल्पिक स्कूल का भ्रमण किया था। उस स्कूल के पाठ्यक्रम में भी खेती को शामिल किया गया है। जब उनकी संस्थापक ने कहा कि उनका इरादा बच्चों को ऐसे भविष्य के लिए तैयार करने का है जब भोजन का उत्पादन करना सबसे महत्वपूर्ण कौशल होगा। उस क्षण में हमने रागी परियोजना को भविष्य के परिप्रेक्ष्य में देखा। मुझे लगता है कि वर्तमान में बच्चे और वयस्क हम सभी समस्या को सुलझाने के बारे में सोचते हैं, लेकिन यह सबसे अच्छा विकल्प नहीं हो सकता। हमें रोकथाम की बजाय समस्या को जड़ से समाप्त करने के बारे में सोचना चाहिए। मुझे इसके पक्ष में तर्क करने में कठिनाई आती थी। जब भी कोई समस्या आती तो बच्चे भी दिल्ली के वायु प्रदूषण, स्मॉग-एयर प्यूरीफायर (वायु शोधक यंत्रों), मास्क आदि की बात करते थे। लेकिन इस तरह की समस्याओं के बारे में सोचने के साथ-साथ यह सोचना कि हम अपने-आप को और अपने जीवन जीने के तरीक़े को किस तरह से बदल सकते हैं- इस नए नज़रिए ने बच्चों को उनके आस-पास की पर्यावरणीय संबंधी समस्याओं पर विभिन्न तरीक़ों से सोचने का अवसर दिया और साथ ही उन्हें इन मुद्दों को समझने का मार्ग सुझाया।

वसंत कुमारी : आज की दुनिया में हर चीज की रफ़्तार काफ़ी तेज़ है, लेकिन इस तरह की परियोजना और माहौल आपको तेज़ भागना नहीं, बल्कि ठहरकर चलना सिखाते हैं। अगर हम विकास करना चाहते है और दुनिया का अनुभव लेना चाहते हैं तो हमें धैर्य और संयम रखना सीखना होगा। यह हम सभी को भोजन और उसकी उत्पादन प्रक्रिया को महत्व देना भी सिखाता है। अगर आप भोजन उगाने के प्रयास में लगने वाले श्रम को समझते हैं, तो भोजन की

बर्बादी अपने आप कम हो जाएगी। भोजन के साथ आपका ऐसा संबंध प्रकृति का पोषण करने में मददगार होगा और खेती इस रिश्ते की एक अभिन्न कड़ी बन जाती है। ऐसी परियोजना खेती के क्षेत्र में नए रास्तों, अवसरों के द्वार खोलती है, और इस तरह के काम के बारे में कई मिथकों को तोड़ती है। इसने मुझे याद दिलाया है कि 'मुझे अपनी ज़मीन की देखभाल करनी चाहिए!' कोई भी शिक्षक जो खुद को और निपुण बनाना चाहता है, उसे इस तरह के कामों में भागीदारी करनी चाहिए और इस तरह के कार्य में शामिल होना भी अपने-आप में एक तरह की सफलता है। इसके अलावा, मुझे लगता है कि मिट्टी सीखने का सबसे अच्छा माध्यम है, आप मिट्टी के साथ धोखा नहीं कर सकते हैं।

अश्विन पाटिल : मैं मानती हूँ कि शहरी स्कूलों में खेती करना बहुत व्यावहारिक नहीं है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इसे प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। यह भी ज़रूरी है कि सभी अपने आस-पास के वातावरण को महत्व दें। मेरे परिवार में हमारे पास भी खेत हैं लेकिन हमारे बच्चे खेती के बारे में कुछ नहीं जानते हैं। यहाँ तक कि एक किसान का बच्चा भी कृषि के काम का अनादर कर रहा है। इन हालातों को जानने और समझने के साथ ही हर काम में लगने वाले श्रम का आदर करना बहुत ज़रूरी है। इस तरह की परियोजनाएं हम शिक्षकों और बच्चों को व्यावहारिक कौशल सीखने का अवसर देती हैं। मुझे लगता है कि यह तनाव के स्तर को भी कम करता है। जब बच्चे खेतों में अपनी उगाई फसल, उसके फूल, फल, पत्तियों आदि को देखते हैं तो वे काफ़ी खुश रहते हैं!

जलज अम्बा देवी : इस तरह की परियोजना हमें याद दिलाती है कि हमें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए, साथ ही यह बेहतर खेती व खाने की स्वस्थ आदतों और आहार के प्रति जागरूकता लाने का काम करती है।

6. क्या आप जलवायु परिवर्तन और दुनिया की अन्य परेशानियों के जवाब में इसे एक प्रतिक्रिया के तौर पर देखते हैं? इस परिप्रेक्ष्य में भविष्य की शिक्षा कैसी होनी चाहिए? और भविष्य के शिक्षक कैसे होंगे?

रोशनी रवि : मुझे लगता है कि टीआरपी जैसी परियोजनाएं, जो स्थानीय स्तर पर संचालित होती हैं लेकिन जिनकी परिकल्पना व्यापक है, वे इस बात को सुनिश्चित करने के लिए अहम हैं कि हमारे वृत्तांत समाधान-केंद्रित और व्यवहार में ला पाने योग्य हों। बच्चे दुनिया में तेज़ी से आ रहे बदलाव को अनुभव कर पा रहे हैं क्योंकि हम वयस्क अक्सर निराशा में रहते हैं। ऐसे में हमें छात्रों को केवल डर और क्रोध के साथ अकेला छोड़ने की बजाय सामने आई समस्याओं के समाधान का रास्ता तलाशना चाहिए। छोटे समुदायों जैसे स्कूल में इस तरह के अवसर निश्चित रूप से समाधान का हिस्सा हैं, क्योंकि ये बच्चों के सीखने को और वे अपना जीवन कैसे जिएंगे इसे एक अर्थ दे रहे हैं। मुझे लगता है कि भविष्य में सीखने-सिखाने में स्थानीय ज्ञान को प्राथमिकता मिलेगी और यह ज़मीन व समुदाय से जुड़ा हुआ होगा। शिक्षा के केंद्र को 3 आर (रिड्यूजस, रीयूस और रीसाइकिल) से हटाकर 3 एच (हेंड, हार्ट और हैड) में स्थानांतरित करना होगा, जिसमें सीखा गया हुनर सीधे तौर पर लोगों को संपूर्ण, और आत्मनिर्भर जीवन जीने में मदद करता है। भविष्य के शिक्षकों के लिए यह सुनिश्चित करना अहम होगा कि वे ज़मीन से और उन समुदायों से जुड़े हों जहाँ वे काम करते हैं।

समिता श्रीवत्स : मुझे पता है कि आज हम स्कूलों में जो भी कर रहे हैं वह सब कुछ लंबे समय तक काम नहीं करने वाला है। एक बात जो मैंने सीखी, वह यह है कि खुद को और बच्चों को किसी नई बात को समझाने में बहुत समय लगता है। हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहाँ हमारा व्यवहार पर्यावरण के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए हम त्वरित परिवर्तन या न्याय या बलपूर्वक बात मनवाने की उम्मीद नहीं कर सकते। लेकिन यह एक चुनौती है कि कैसे बिना किसी ज़ोर-ज़बरदस्ती के इन बातों को आत्मसात कराया और समझाया जाए कि त्वरित कदम उठाने के साथ ही

परिवर्तन के लिए आवश्यक समय की माँग के बीच इस संतुलन को हम कैसे हासिल करें। भविष्य का शिक्षक वह होगा जो चिंतनशील और संवेदनशील हो, जो बातों को सही परिप्रेक्ष्य में देख सकता हो और जिसे स्थानीय ज़रूरतों की समझ हो।

वसंत कुमारी : भावी शिक्षक को आस-पास की घटनाओं से अवगत और जागरूक होना चाहिए। उसे सीखे हुए को भूलने के लिए तैयार रहना होगा, प्रयोग करने के लिए तत्पर रहना होगा, और अपने शिक्षण पर चिंतन करना होगा। उसे साथी शिक्षकों के साथ आपसी सहयोग से सीखने में रुचि होनी चाहिए।

अश्विन पाटील : भावी शिक्षक वे होंगे जो स्वयं के लिए भोजन का उत्पादन करने और उसका उपभोग करने में आत्मनिर्भर होने का प्रयास करेंगे। बच्चे अपने शिक्षकों का अनुसरण करते हैं, उनकी कही गई बातों को मानते हैं, इसलिए हमारी कथनी और करनी में समानता होनी चाहिए। हमें अपने विचारों और कार्य के बीच समन्वय बनाए रखने की ज़रूरत है। भविष्य के शिक्षक को लोगों की सोच को बदलने के क्रम में स्वयं के भोजन के चुनाव के बारे में भी विचार करना होगा। खेती करना, अपना भोजन पकाना महत्वपूर्ण कौशल है। बच्चों को पता है कि ज़मीन केवल भवन निर्माण के लिए ही नहीं है, उसमें और भी बहुत कुछ किया जा सकता है। यह उन्हें भूमि पर पेड़ लगाने के पीछे के उद्देश्य को समझने और पर्यावरण के अनुकूल तरीकों से अपनी भूमि की देखरेख करने में सक्षम बनाता है।

जलज अम्बा देवी : यह जरूरी है कि बच्चे इस बात इस बात से अवगत हों कि उनका भोजन कहाँ से आता है। इस तरह की परियोजनाएं एक छात्र की सोच को विस्तार देती हैं जिससे उनके सामने नए विकल्प खुलते हैं और उनकी क्षमताओं में वृद्धि होती है। परियोजना के अंत में कुछ बच्चों ने बताया कि खेतों में काम करना कैसे उन्हें ताज़गी से भर देता था और कुछ ने यह भी कहा कि अगर संभव हुआ तो वे इसे व्यवसाय या शौक के रूप में आगे भी अपनाना चाहेंगे। रागी परियोजना के माध्यम से इसमें शामिल सभी लोग छोटे पैमाने पर की जाने वाली जैविक खेती के मुद्दों के साथ जुड़ पाए। इसने शिक्षकों को यह महसूस कराया कि वे अपने और समाज के लिए कुछ सार्थक काम करने के बड़े उद्देश्य से जुड़े हुए हैं। इसने शिक्षकों को औपचारिक शिक्षा व्यवस्था में हाथ से काम करने के बारे में अपनी सोच पर चिंतन करने और अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं पर सवाल उठाने का अवसर दिया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि इस परियोजना के माध्यम से शिक्षकों ने शिक्षा को बदलाव लाने की प्रक्रिया के तौर पर देखना सीखा।

ई. डब्ल्यू. आर्यनायकम ने आशा देवी के साथ सेवाग्राम में पहले नई तालीम स्कूल की शुरुआत की और वर्धा में बुनियादी तालीम का पहला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किया। उन्होंने 19 मार्च 1954 को गुजरात में नई तालीम के सम्मेलन के अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था:

''किसी ने कभी यह दावा नहीं किया है कि नई तालीम आसान है। यह सतत और उच्च स्तर की शारीरिक ऊर्जा, मानसिक विद्वत्ता व जुझारूपन और आध्यात्मिक बल की माँग करती है। लेकिन एक बात को लेकर नई तालीम के सच्चे शिक्षक आश्वस्त होते हैं और वही उनका पुरस्कार होगा। वह है सहज मानवीय रुचि पर आधारित शिक्षण

को लेकर बच्चों की प्रतिक्रिया और इस तरह सीखने की उनकी प्रेरणा और उत्साह। चुनौती और अवसर से भरे ऐसे दिन हमें नए प्रयासों के लिए प्रेरित करते रहें।''

साठ साल के बाद भी ये शब्द सच प्रतीत होते हैं!

**लेखक सभी बच्चों, शिक्षकों और स्कूल समुदाय को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने अपने समय, प्रयास और उत्साह से नई तालीम की इस यात्रा को एक अनूठे सार्थक अनुभव में बदल दिया। हमें उम्मीद है कि रागी परियोजना से मिले हमारे अनुभव हमेशा स्कूल के भोजन संबंधी संवादों का हिस्सा बने रहेंगे और हमारे भोजन की पसंद-नापसंद को प्रभावित करते रहेंगे। ◆

पल्लवी वर्मा पाटिल : 2013 से अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के विकास स्कूल संकाय में कार्यरत हैं। वे 'आज और कल के लिए नई तालीम', 'लिविंग यूटोपिया', 'फूड एंड न्यूट्रिशन इन एक्शन' शीर्षक वाले पाठ्यक्रम पढ़ाती हैं। वह युवा वयस्कों के लिए गाँधी रीडर की सह-लेखिका हैं।

भोजन के इर्द-गिर्द पल्लवी की सक्रियता में फूड एंड आइडेंटिटी नामक एक कार्यशाला-आधारित पाठ्यक्रम शामिल है, जो शिक्षकों के एक नेटवर्क का समन्वय करता है जो भोजन के माध्यम से पढ़ाते हैं। वे *दि रागी* प्रोजेक्ट नामक एक शहरी स्कूल में एक कृषि परियोजना का समन्वय करती हैं।

संपर्क : pallavi.vp@apu.edu.in

रोशनी रवि : रोशनी रवि टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई में परामर्श मनोविज्ञान की शिक्षिका हैं। उन्होंने पेरी-अर्बन बैंगलोर के एक वैकल्पिक स्कूल में भाषा, पर्यावरण अध्ययन और सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका के रूप में काम किया है। फिलहाल नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन के एजुकेशन एंड पब्लिक एंगेजमेंट प्रोग्राम से जुड़ी हुई हैं।

संपर्क : ravi.roshni90@gmail.com

संदर्भ :

प्रकाश वेद, (1985), गाँधीयन बेसिक एजुकेशन एज ए प्रोग्राम ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी इंस्ट्रक्शन एट द एलीमेंटरी स्टेजः सम लेसन्स ऑफ एक्सपीरियंस, यूनेस्कोः पेरिस।

दावा अस्वीकरणः इस साक्षात्कार में व्यक्त विचार भागीदार शिक्षकों के अपने/व्यक्तिगत विचार हैं। वे परियोजना में शामिल संस्थानों- अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय या पूर्णा लर्निंग सेंटर के दृष्टिकोण या विचारों को नहीं दर्शाते हैं।

गोबर गैस संयंत्र से शिक्षा*

आधारशिला लर्निंग सेंटर में नई तालीम के प्रयोग का एक अनुभव[1]

डॉ. क्रिसटियन कैसिलस

भाषान्तर : मधुलिका झा

आधारशिला लर्निंग सेंटर की स्थापना जयश्री और अमित भटनागर ने 1998 में भारत के मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले में एक स्थानीय आदिवासी संगठन और आस-पास के समुदायों की सहायता से की थी। स्कूल में अब कक्षा 1 से 8 तक लगभग 125-150 छात्र हैं। ज़्यादातर छात्र आस-पास के समुदायों से आते हैं और स्कूल में रहते हैं। स्कूल के संचालन में छात्रों की भूमिका स्कूल की गायों और जैविक खेती की देखभाल से लेकर खाना पकाने और सफाई के कामों तक विस्तृत है। स्कूल परियोजना-आधारित शिक्षा के माध्यम से एक सार्थक सीखने के वातावरण का निर्माण करता है। उनके पाठ्यक्रम के कई पहलुओं को खेतों में काम करने के माध्यम से (जहाँ जीव विज्ञान, भूविज्ञान और गणित से संबंधित विषयवस्तु को आसानी से समझा जा सकता है) सीखा जाता है और प्रत्येक वर्ष छात्र किसी न किसी तरह की सामुदायिक अनुसंधान परियोजना में शामिल होते हैं। जयश्री और अमित दोनों ही नई तालीम समिति द्वारा दिए जाने वाले 'माँ बाबा पुरस्कार' से सम्मानित हैं।

कुछ हफ़्ते पहले आधारशिला लर्निंग सेंटर के जीवंत वातावरण में तीन सप्ताह बिताने के लिए मैं वापस लौटा। मैंने इस दौरान मुख्य रूप से कक्षा 6 और 7 के लगभग 20 छात्रों के साथ मिलकर एक छोटे बायोगैस प्लांट (बायोडाइज़ेस्टर) का निर्माण करने, और वहाँ के कुछ सौर ऊर्जा चालित प्रकाश व्यवस्था के नवीनीकरण का काम किया। ये परियोजनाएं केवल सीखने-सिखाने के बारे में नहीं थीं, बल्कि स्कूल की आर्थिक और पर्यावरण संबंधी चुनौतियों का सामना करने के लिए चुनी गईं थीं। खाना पकाने के लिए जलाऊ लकड़ी खरीदने में होने वाले नियमित खर्च और लकड़ी की उपलब्धता की अनिश्चितता ने बायोगैस परियोजना को लागू करने के लिए प्रेरित किया था। प्रकाश परियोजना की आवश्यकता इसलिए थी क्योंकि मुख्य ग्रिड से स्कूल की विद्युत आपूर्ति सीमित और अनिश्चित थी। तीन सप्ताह के दौरान, छात्रों ने यह सीख लिया कि एक बायोडाइजेस्टर को कैसे बनाया और संचालित किया जाता है। इसके साथ ही उन्होंने बिजली और सौर ऊर्जा के बारे में अपनी जानकारी को और गहन करने के साथ-साथ अपने अंग्रेजी, गणित और विज्ञान संबंधी कौशलों को भी बेहतर बनाया।

---

1. https://schoolreformed.wordpress.com/category/models-from-india/

* इस लेख को डॉ. क्रिसटियन कैसिलस के 2013 में लिखे गए एक लेख से लिया गया है, जिन्होंने 2012 में अधारशिला लर्निंग सेंटर में वहाँ के छात्रों की मदद से एक बायोगैस प्लांट (बायोडाइज़ेस्टर) स्थापित करने का काम किया था। स्थापना के तीन साल बाद तक बायोगैस संयंत्र स्कूल की रसोई में दूध को गर्म करने और दाल पकाने के लिए ईंधन उपलब्ध कराने के साथ ही अच्छी गुणवत्ता वाली खाद प्रदान करने और बच्चों के शरीर व दिमाग को व्यस्त रखने का उपयोगी काम भी करता रहा।

बायोडाइज़ेस्टर को स्थापित करना, बल्ब लगाना और एक स्ट्रीटलाइट का परीक्षण करना

बायोडाइज़ेस्टर परियोजना

आधारशिला में लगभग 125-150 छात्र हैं, और यह स्कूल एक बंजर स्थान जहाँ वनों को भारी मात्रा में काटा जा चुका है वहाँ स्थित है। वर्तमान में स्कूल पास के शहर से जलाऊ लकड़ी खरीदता है और यहाँ अधिकांश भोजन लकड़ी के चूल्हों पर पकाया जाता है। हमारे बायोडाइज़ेस्टर में एक बड़ा, पूर्णतः बंद टैंक शामिल था जिसमें पानी और कार्बनिक पदार्थों के मिश्रण को रखा जा सकता था। टैंक के अंदर, अवायवीय जीवाणु उस मिश्रण का विघटन करते हैं और मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड (बायोगैस) के मिश्रण का निर्माण करते हैं, जिसे खाना पकाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

बायोडाइज़ेस्टर के निर्माण में केवल डेढ़ दिन का समय लगा, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान कई छोटी परियोजनाएं सामने आईं। बच्चों ने अपने दैनिक भोजन पकाने के लिए काम में आने वाली जलाऊ लकड़ी की मात्रा को निर्धारित करने में कई दिन लगाए, और स्कूल के परिसर में जैविक अपशिष्ट, कूड़े के निपटारे व निकासी को चिह्नित किया। आधारशिला में 'कूड़ा' बहुत कठिनाई से दिखाई देता है। जूठा व बचा हुआ भोजन केंद्र की तीन गायों को दे दिया जाता है, जिनका गोबर स्कूल के जैविक खेत में खाद के रूप में काम आता है। विभिन्न जैव ईंधन स्रोतों से गैस उत्पादन के बारे में हमें जो भी चार्ट और तालिकाएं मिलीं, उनमें से कोई भी स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री और क्षेत्र के गर्म तापमान के साथ ठीक-ठीक मेल नहीं खाती थीं। इसलिए यह निर्धारित करने के लिए हमें एक छोटा-सा प्रयोग करना पड़ा कि किस तरह के अपशिष्टों का मिश्रण बायोगैस का अधिक उत्पादन करेगा। बायोगैस उत्पादन के दर का मोटा अनुमान लगाने के लिए बच्चों ने सावधानीपूर्वक तौले गए जैव ईंधन के साथ सात मिनी-डाइजेटर बनाए। हमने समीक्षा की कि मात्रा कैसे मापी जाए, माप और अवलोकनों को रिकॉर्ड करने के महत्व पर ज़ोर दिया।

मिनी-बायोडाइज़ेस्टर, मुख्य टैंक और खाना पकाने में बायोगैस की मात्रा को मापना

बायोगैस और सौर परियोजनाओं को बच्चों के पाठ्यक्रम के साथ समायोजित करना आसान था। उन्होंने अंग्रेजी के नए शब्दों की एक लंबी सूची तैयार की, और बायो गैस और सौर ऊर्जा के बारे में पूरे वाक्य में सवालों का जवाब देने का अभ्यास किया। बड़े छात्रों ने सीखा कि टैंक के अंदर गैस का अनुमान लगाने के लिए एक सिलेंडर के आयतन को कैसे मापा जाए और एक अज्ञात चर के लिए किसी समीकरण को किस तरह से हल किया जाए, जबकि छोटे बच्चों ने दशमलव के साथ बीजगणित का अभ्यास किया।

काम की पद्धति

बायोगैस और सौर परियोजनाओं दोनों के दौरान, मेरे पास आमतौर पर तीन से दस छात्रों का एक समूह होता था जो मेरे साथ जुड़कर काम करते थे। यह ध्यान रखना दिलचस्प था कि कौन से छात्र थे जो लगातार शामिल रहते थे, कौन से केवल कुछ समय के लिए दिखाई देंगे, और कौन लोग हाथ से काम करने के अवसर पर पल्ला झाड़ लेंगे। सौर उपकरणों को लगाने के दौरान हमने साथ की दीवारों पर उस सिस्टम के विवरण को चित्रित करने का निर्णय लिया। अचानक ऐसे छात्र मदद करने के लिए आगे आने लगे जिन्होंने पहले दिलचस्पी नहीं ली थी। यह दिखाता है कि ऐसी परियोजना के विभिन्न घटक अलग-अलग बच्चों की उत्सुकता को किस तरह से जागृत कर सकते हैं (किस तरह से अलग-अलग बच्चों के ध्यान को आकर्षित कर सकते हैं)।

इस बात ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया कि सामग्री और विषयवस्तु की बजाय खुद करने की प्रक्रिया ने छात्रों को अधिक आकर्षित किया। कुछ छोटे बच्चे जिनके पास अंग्रेजी और विज्ञान की बुनियादी जानकारी थी, और साथ ही एक बच्चा जो गणित और विज्ञान में बहुत अच्छा था, उन्होंने बिना किसी मदद के अपने स्वयं के मिनी-बायोडाइज़ेस्टर का निर्माण किया। उनके व्यक्तिगत प्रयोगों को पास के पेड़ों के नीचे देखने के बाद मैंने सोचा कि क्या समूह में होने वाला काम बहुत तेज़ या बहुत धीमा था या उसमें होने वाली भागीदारी इन बच्चों को अपने तरीक़े से सीखने का पर्याप्त मौका नहीं दे पा रही थी।

हम किस तरह से सीखना पसंद करते हैं उसके बारे में सभी के अंदर स्वाभाविक और अनुकूलित दोनों तरह के रुझान होते हैं। प्रधान शिक्षक अपने अवलोकन के आधार पर सीखने को लेकर कुछ बच्चों की प्रवृत्तियों को बता पा रहे थे। जैसे 'यह बच्चा बौद्धिक कार्यों में अधिक रुचि रखता है, लेकिन हाथ से करने वाले काम में इसके योगदान देने की बहुत कम संभावना है', या 'लगातार मार्गदर्शन ना देने पर उसका ध्यान बहुत जल्दी भटक जाता है।' विविध परियोजनाओं में भागीदारी, विशेष रूप से ऐसी जिनकी रूपरेखा उन्हें खुद बनानी हो, नन्हें छात्रों में अपनी रुचि को पहचानने और उन्हें विकसित करने की संभावनाएं पैदा करती है।

मार्गदर्शक के लिए मार्गदर्शन का क्या अर्थ होना चाहिए?

पिछले कई हफ्तों ने मुझे अपनी खुद की सीखने की प्रवृत्ति का, साथ ही साथ सिखाने की मेरी चाह को पुनः जाँचने का मौका दिया। अनुभव से सीखना मुझे खुद बहुत प्रेरित करता है। मुझे सीखना अच्छा लगता है, और मैं स्वयं करके सबसे बेहतर सीख पाता हूँ। लगभग तीन सालों से मैं बायोडायज़िस्ट्र्स के बारे में पढ़ता और उसकी रूपरेखा की गणना करता रहा हूँ, मगर मुझे खुद से एक बनाकर देखने का मौका नहीं मिला था।

बायोगैस टैंक के बनने को देखने का रोमांच, गैस ट्यूब में पानी के संघनन को देखना, और अपने हाथों से गोबर को मिलाकर टैंक में डालने ने अचानक ही मेरे किताबी-ज्ञान में कई नई जानकारियों व बारीकियों को जोड़कर उसे जीवंत

बना दिया। इन विवरणों को केवल पढ़ने या चर्चा के माध्यम से नहीं समझा जा सकता था। इसके अलावा, कई जिज्ञासु मस्तिष्कों के साथ सीखने की प्रक्रिया ने मेरी अपनी समझ को बढ़ाया। अब जब भी बच्चे या शिक्षक मुझसे कोई सवाल पूछेंगे, मैं आमतौर पर एक उपयुक्त-उत्तर देने में सक्षम रहूंगा, लेकिन तब मैं रुकूंगा और स्वीकार करूंगा कि, 'मैंने कभी ऐसा किया नहीं है इसलिए वास्तव में मैं नहीं जानता हूं कि हम इसकी जाँच कैसे कर सकते हैं?'

मुझे जल्दी ही मार्गदर्शन और कक्षा-कक्ष शिक्षण के बीच के बुनियादी अंतर का भी पता चल गया। सीखने के इच्छुक छात्रों की सीमित संख्या के साथ काम करना संतोष देने वाला और मज़ेदार होता है। रुचि ना रखने वाले लोगों के एक बड़े समूह को सीखने के लिए प्रेरित करने के प्रयास की बात दूसरी होती है। प्रभावी कक्षा शिक्षक आमतौर पर अच्छे कक्षा प्रबंधक और सिखाने वाले दोनों होते हैं। जब मुझे सभी बच्चों को सक्रिय रूप से सीखने में शामिल करने का काम सौंपा गया था (उदाहरण के लिए जब हमने मिनी-बायोडाइज़ेस्टर का निर्माण किया था), तब मैंने एक स्पष्ट आंतरिक संघर्ष को महसूस किया। मेरी हताशा इस बात से पैदा हो रही थी कि मैं अपने तय किए हुए काम में बच्चों के रुचि लेने की अपेक्षा कर रहा था, और फिर मुझे अपने दोहरे व्यवहार के कारण खुद पर गुस्सा आ रहा था। जब मैं खुद की जिज्ञासा से प्रेरित होकर काम करना पसंद करता हूँ, तो मुझे बच्चों को ज़बरदस्ती सिखाने की कोशिश क्यों करनी चाहिए?

परियोजना-आधारित सीखना और मार्गदर्शन

शिक्षा के कक्षा शिक्षण पर आधारित मॉडल का एक दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष यह है कि उसमें अनुभव से सीखने के अवसरों का अभाव होता है। एक परंपरागत पाठ्यक्रम हमें शब्दों, संख्याओं और चित्रों का उपयोग करके एक सरलतम वर्णन के माध्यम से वास्तविकता को समझने की कोशिश करने के लिए प्रशिक्षित करता है। हमारे जटिल सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश में छोटी समस्याओं के उभरने के बाद ही गहन और महत्वपूर्ण बारीकियाँ हमारे सामने आ पाती हैं। हालाँकि, अनुभवजन्य और अमूर्त शिक्षा दोनों ही महत्वपूर्ण और एक-दूसरे की पूरक हैं। एक परियोजना-आधारित पाठ्यक्रम उन दोनों पर जोर देने का अवसर प्रदान करता है।

मार्गदर्शन को शैक्षिक कौशल निर्माण के साथ जोड़ने के दो अतिरिक्त लाभ हैं। एक तो यह बच्चों में अपने पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाने की क्षमता पैदा करता है, और दूसरा मेरे जैसे उत्साही, जो कि मानकीकृत पाठ्यक्रम और कक्षा-कक्ष प्रबंधन से ऊब जाते हैं, उसके लिए नए दरवाज़े खोलता है ताकि हम अपनी सीखने की यात्रा को युवाओं के साथ साझा कर सकें।

जब मैं एक बस में सौर उपकरणों को लेकर आधारशिला वापस आ रहा था तो दो लड़कों ने मुझसे बातचीत की। यह पता चला कि वे दोनों एक स्थानीय कॉलेज में अंतिम वर्ष के इंजीनियरिंग के छात्र थे, और उनमें से एक अपनी अंतिम परियोजना के लिए एक मिनी- बायोडाइज़ेस्टर बनाने वाला था। जब उसे पता चला कि मैं इसी पर काम कर रहा हूँ, तो उसने मुझ पर सवालों की बौछार कर दी। मैं यह सोचकर मुस्कुराए बिना नहीं रह सका कि गाँव के 12 साल के बच्चों का समूह उनमें से अधिकांश सवालों का जवाब दे पाने में सक्षम है। मुझे यह जानकर अच्छा लग रहा था कि जल्दी ही यह इंजीनियर हाथों से काम करके अपने अनुभवों से कुछ सीख रहा होगा। ◆

लेखक परिचय : वर्तमान में सांता फ़े, न्यू मैक्सिको में रहते हैं जहाँ जलवायु नीति और इक्विटी के मुद्दों पर स्थानीय सरकारों के साथ काम करते हैं और स्कूलों में बेघरों के आश्रयों की सुविधा उपलब्ध करवाते हैं।

संपर्क : cecasillas@gmail.com

आनन्द निकेतन : नई तालीम का एक प्रयोग

सुषमा शर्मा से ऋषभ कुमार मिश्र की बातचीत

नई तालीम की बात हो और सामयिक संदर्भों में इसके परिष्कार और आंतरिक सामंजस्य पर विचार करना हो तो मन में कई सैद्धान्तिक सरोकार और अनुभव की कसौटी पर इन्हें कस कर देखते हुए कुछ वैकल्पिक प्रयोगों की टोह लेने का विचार सहज ही उठता है। ऐसे ही कुछ सरोकारों, जिज्ञासाओं और प्रेरणाओं को तलाशता यह साक्षात्कार सुश्री सुषमा शर्मा, आनन्द निकेतन विद्यालय, संचालिका से रू-बरू होता है।

प्रश्न : वर्ष 2005 में सेवाग्राम में नई तालीम के सिद्धान्त पर आधारित बुनियादी विद्यालय आरंभ हुआ। इस दौरान आप लोगों ने किन संदर्भों को रेखांकित किया? विद्यालय के लक्ष्य और स्वरूप को कैसे तय किया और कैसे इस विद्यालय की यात्रा आरंभ हुई?

उत्तर : वर्ष 2004 में आशा देवी आर्यनायकम् की जन्म शताब्दी मनायी जा रही थी। इस अवसर पर सेवाग्राम में नई तालीम से जुड़े कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में देश भर से आए हुए कार्यकर्ताओं का मानना था कि नई तालीम पद्धति के साथ शिक्षा का कार्य शुरू करना अतिआवश्यक है। अतः दुबारा से सेवाग्राम में नई तालीम का प्रयोग आरंभ हो। इसके साथ-साथ कुछ और घटनाएं भी घटित हो रही थी। इसी समय शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं में भी नई तालीम को देखने का नज़रिया नए सिरे से खुल रहा था। इसके लिए दो व्यक्तियों का योगदान महत्वपूर्ण है- प्रो. कृष्ण कुमार जो उस समय एनसीईआरटी के निदेशक थे और डॉ. अनिल सद्गोपाल जो इसको नेतृत्व दे रहे थे। इसी वक़्त एक और बात हो रही थी, महाराष्ट्र के एक शिक्षाविद् रमेश पानसे नई तालीम के इतिहास पर शोध करने के लिए सेवाग्राम में रह रहे थे। इस दौरान, लगभग ढाई-तीन साल तक, वे वर्धा के गाँधी मार्गी कार्यकर्ताओं से अपने विचार साझा कर रहे थे। इस माहौल में एक वैचारिक परिवेश बन रहा था कि फिर से नई तालीम का विद्यालय खोला जाए। उस समय नई तालीम समिति के अध्यक्ष कनकमल गाँधी थे। शिवदत्त उस समय नई तालीम के ऊपर एक अच्छी किताब तैयार कर रहे थे। कुल मिलाकर एक तरफ नई तालीम की उपलब्धियों पर शोध और समीक्षा चल रही थी। उसके लिए वैचारिक तैयारी हो चुकी थी। नई तालीम समिति को भी लग रहा था कि आनंद निकेतन विद्यालय आरंभ किया जाए। मन में थोड़ा संशय था कि बिना तैयारी या आधी-अधूरी पृष्ठभूमि में विद्यालय कैसे शुरू किया जाए। उस वक्त रमेश पानसे जी ने कहा कि भले ही हमारी पूर्ण तैयारी न हो, समय के साथ तैयारी हो जाएगी। विकास की प्रक्रिया में संसाधन और संरचनाएं तैयार होती रहेगी। इन परिस्थितियों में हमने स्कूल शुरू करने का फैसला किया।

मैं उन दिनों चेतना विकास संस्था के साथ वर्धा के ग्रामीण समुदाय के बीच काम कर रही थी। मेरा कार्यक्षेत्र अनौपचारिक शिक्षा था। इस स्कूल को आरंभ करने की जो सारी वैचारिक प्रक्रिया हो रही थी उसमें मैं भी

शामिल थी। जब यहाँ पर विद्यालय खोलने का निर्णय हुआ और इसकी ज़िम्मेदारी उठाने का सवाल पैदा हुआ तो मेरा नाम सुझाया गया। मैं अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में नई तालीम के सिद्धान्तों के अनुरूप कार्य कर रही थी। मेरे पास बालवाड़ी से 14 साल तक बच्चों के साथ स्कूल के बाहर के समय में शैक्षिक कार्यक्रमों के आयोजन का अनुभव था। ये सारे कार्य करते समय मेरी दृष्टि स्पष्ट हुई कि किताबी शिक्षा तो बेमतलब है उसको जीवन के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। मैं खुद उन दिनों ''उत्पीड़तों का शिक्षाशास्त्र'' जैसी किताबें पढ़ रही थी। उसमें दिए विचारों पर मनन कर रही थी। इवान इलिच, जॉन हॉल्ट के विचारों से भी परिचित हुई थी। गाँधी और विनोबा की किताबें पढ़ना थोड़ा मेरे लिए स्वाभाविक था। मेरे परिवार और पेशेवर जीवन में उनकी स्वाभाविक उपस्थिति थी। इन परिस्थितियों में समुदाय और गाँव के क्षेत्रानुभव और वैचारिक तैयारी के साथ मैं विद्यालय की योजना से जुड़ी। हमने जब स्कूल खोलने का निर्णय लिया था तब लगभग 15 साल का गाँव में काम करने का मेरा अनुभव हो चुका था। यहाँ एक बात जोड़ना चाहूँगी कि चेतना विकास संस्था में काम करने के दौरान भी एक विद्यालय खोलने की योजना बनी थी। कुछ चुनौतियों के कारण वह क्रियान्वित नहीं हो पा रही थी। इस विद्यालय से जुड़ना उस योजना को क्रियान्वित करने की अभिप्रेरणा से भी था।

प्रश्न : जब आपने यह फैसला किया कि यह स्कूल नई तालीम की पद्धति के अनुसार खुलेगा तो उस समय आपने नई तालीम को लेकर जो ख़ाका बनाया था, उस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : हम लोगों ने नई तालीम की विचार और पद्धति के बारे में काफ़ी पढ़ लिया था पर विद्यालय कैसे चलना है इसके बारे में व्यवस्थित ढाँचा तैयार नहीं था। हमारे आस-पास कोई विद्यालय ऐसा नहीं था जहाँ पर जीवोन्मुखी शिक्षा दी जा रही हो, जिसमें जीवन से जुड़ी गतिविधियों और क्राफ़्ट को स्थान दिया गया हो, जिसका हम अनुकरण कर सकें या जो हमें कार्य आरंभ करने की दिशा दे। हम लोगों को इन्हीं घटकों को अपने विद्यालय में स्थान देना है यह सोच स्पष्ट थी। समवाय कैसे करना है, बच्चों के परिवेश से कैसे जोड़ना है; इसकी पद्धति और प्रक्रिया की क्रियात्मक तैयारी बहुत अधिक नहीं थी। हमने तय किया शिक्षाशास्त्र के वर्तमान अभ्यासों को भी नई तालीम से जोड़ते हैं। उस समय पूरे देश में 'रचनावाद' की चर्चा ज़ोर पकड़ चुकी थी। आनुभाविक अधिगम को महत्व दिया जा रहा था। शिक्षा और समुदाय के रिश्तों को मज़बूत करने पर विचार हो रहा था। हमारे सामने शाश्वत विकास की समस्या खड़ी हो चुकी थी। हमने भी तय किया कि इन बातों विमर्शों को हम अपने विद्यालय में स्थान देंगे। आज के संदर्भ में हमें क्राफ्ट को भी डिज़ाइन करना होगा। इन्हें ध्यान में रखते हुए कार्य आरंभ हुआ लेकिन हमने नई तालीम की कुछ बातों को देश-काल परिस्थितियों के अनुसार नहीं भी अपनाया। हमने क्राफ्ट को सीखने के केन्द्र में रखते हुए तय किया कि इस विद्यालय में समुदाय आधारित सीखने को शामिल करना होगा। हमने आनंद निकेतन को नेबरहुड स्कूल की तरह आरंभ किया। यह लक्ष्य रखा कि इसमें नई तालीम के सारे तत्वों को लाने की कोशिश करेंगे।

शुरुआत के समय में बहुत छोटी-सी टीम थी क्योंकि इस व्यवस्था में शिक्षक बनना कोई आसान काम नहीं है। नई तालीम की तरह का विद्यालय बनने का मतलब यह था कि शिक्षकों को इसके तरीके सिखाए जाएं। इसके लिए टीम तैयार थी। शुरुआत के समय में रमेश पानसे जी जैसे नई तालीम से जुड़े लोगों ने शिक्षकों को तैयार करने काम किया। जया ताई, जयश्री ताई और मैं इसके साथ बालवाड़ी की टीचर इस तरह हम पाँच लोगों ने शुरुआत की और फिर धीरे-धीरे लोग बढ़ते गए। हम सब लोग प्रयोग करते, साथ में बैठते, उन पर बात करते, किताब, लेख डॉक्यूमेंट आदि पढ़ते। इसके आधार पर पाठ्यचर्या की मैपिंग करते और उसके क्रियान्वयन की योजना बनाते। हमने छोटे-छोटे वर्कशॉप आपस में किए। ज़रूरत के हिसाब से बाहर से भी लोगों को बुलाते थे जैसे चेतना विकास से कृषि और भाषा के लिए एक मीना ताई आती थीं। सामूहिक भागीदारी के प्रयोग के लिए मोहन भाई हीरालाल हमारे साथ थे। इस विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी रहे कला शिक्षक अम्बुलकर गजानन को भी हम बुलाते थे। वे नई तालीम के ही पूर्व विद्यार्थी थे। उस समय की नई तालीम के बारे में अपने अनुभव वह उस समय की नई तालीम की पूरी प्रकृति के बारे में बताते थे। वे प्रायोगिक तौर पर बताते कि कैसे समवाय स्थापित करना है? इन लोगों के मार्गदर्शन, आपसी सहयोग के हिसाब से हम आगे बढ़ते गए।

प्रश्न : वर्तमान में शिल्प और विषय के सहसंबंध और समवाय की अवधारणा को कैसे देखें? आनंद निकेतन विद्यालय में कैसे विषय और उत्पादक कार्य को एकीकृत किया जा रहा है?

उत्तर : समवाय के बारे में सबसे पहले स्पष्ट कर दूँ कि यह पद्धति व्यावसायिक प्रशिक्षण और अकादमिक विषयों में कोई भेद नहीं करती है। नई तालीम का मतलब ही है समग्र शिक्षा। समग्र शिक्षा के लिए समवाय होना चाहिए। यह नई तालीम का सर्वप्रमुख पक्ष है। हमारे सामने समस्या थी कि समवाय के बारे में प्रयोगों को कोई विस्तृत दस्तावेज़ उस समय हमारे पास नहीं था। हमने अपनी ही समझबूझ से समवाय आरंभ किया। मैंने गाँवों में अनौपचारिक शिक्षा के प्रयोग के समय थोड़ा समवाय पर काम किया था। ऐसा समझ में आया कि यह कोई ऐसा तरीका नहीं है कि जिसे डी.एड., बी.एड. में सिखाया जाए या जो डी.एड. और बी.एड. करके आया वह समवाय कर ले। हमने शिक्षकों के साथ गणित, भाषा और विज्ञान विषयों को लेकर प्रयोग आरंभ किया। उन्हें प्रेरित किया कि वे समझे और जानें कि जीवन और अलग-अलग विषयों का एक गहरा रिश्ता होता है। इस रिश्ते को सर्वांगीण रूप में देखना चाहिए। इसके लिए हमें काफ़ी ''करके देखना'' पड़ा। किससे, कैसे जोड़ना है यह विचार किया, प्रयोग किया, उसका आकलन किया। उन दिनों हमें यह भी समझ नहीं आता था कि जो हम करना चाहते हैं वह किस उम्र के बच्चे कर सकेंगे? किस उम्र के बच्चों को इससे सीखने में मदद मिलेगी? हम सभी नई तालीम से सीख रहे थे। बच्चे भी नई तालीम से सीख रहे थे। जब बालवाड़ी से कक्षा 4 का एक चक्र पूरा हुआ तब हमारे पास पर्याप्त अनुभव हो गया। यह अनुभव आगे की कक्षाओं में जुड़ता गया। हमने प्रयोगों को जारी रखा। हर बार करते, कुछ नया जोड़ते, पुराने में संशोधन करते। इस दौरान सबसे बड़ी दिक्कत थी शिक्षकों का बदल जाना। आरंभ में जिन महिला शिक्षकों को तैयार किया उनका विवाह हो गया। ऐसे ही कुछ शिक्षक परिषदीय विद्यालयों में चले गए।

प्रश्न : नई तालीम साहित्य में बार-बार समुदाय के साथ सीखने का उल्लेख किया जाता है। इसके लिए आपने क्या-क्या प्रयोग किये इस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : इस क्षेत्र में हमने कुछ काम किए और कुछ काम नहीं कर पाए। जब हमने स्कूल शुरू किया तो समझ में आया कि अब गाँव नाम मात्र का बचा है लेकिन गाँव में रहने वाले लोग गाँव के निवासी नहीं है। अब गाँव में रहने वालों में कई लोग बाहर गाँव से आए हुए भी हैं। यहाँ पर ऑर्गनिक कम्युनिटी नहीं है। समुदाय में हमारे विद्यालय से जुड़ने में झिझक थी। वे हमसे सवाल करते कि इस विद्यालय में प्रवेश कराने पर उनका बच्चा पीछे तो नहीं जायेगा। हमारे सामने इस तरह की चुनौतियाँ थी। हमारे स्कूल में आने वाले बच्चे कम थे दूसरे स्कूलों में जाने वाले बच्चे अधिक थे। आप सीखने की प्रक्रिया में समुदाय को तभी जोड़ सकते हैं जब आपके पास स्थानीय समुदाय के बच्चे आएं। हमारे साथ ऐसा नहीं था इसलिए हमने सोचा कि वे कौन से मुद्दे हैं जिन्हें लेकर समुदाय के साथ कार्य कर सकते हैं। हमने 'वेस्ट मैनेजमेंट' पर काम किया। इस काम को लेकर हम समुदाय के पास गए। फिर किसानों से जुड़े विषयों में कई कार्य किए। हम नुक्कड़-नाटक के माध्यम से समुदाय में जाते और स्कूल के कामों को देखने और जानने के लिए समुदाय को बुलाते हैं। वर्तमान में हमने वृक्ष बचाओ आंदोलन के माध्यम से बस्ती के लोगों को जोड़ा। हमने बच्चों के किए कामों की प्रर्दशनी लगायी। हमने अपने कार्यक्रमों, ख़ासकर जात्राओं, में शिक्षा और समाज के मुद्दों पर बात की।

प्रश्न : जब भी नई तालीम की बात की जाती है तो कई बार हम व्यावसायिक शिक्षा और नई तालीम को एक-दूसरे का पर्यायवाची मानने लगते हैं। इस भ्रम की स्थिति पर आपका क्या मत है?

उत्तर : व्यावसायिक शिक्षा बहुत ही सीमित चीज़ है। इसका मतलब ही होता है कि एक औद्योगिक दुनिया की समझ होना जिसमें एक काम करने वाले व्यक्ति को विशिष्ट कुशलता के लिए तैयार करना होता है। मैं शिक्षा की इस भूमिका को कम नहीं मानती लेकिन यह विचार करना जरूरी है कि औद्योगिक प्रशिक्षण के लिए कब तैयार किया जाए और उसका स्वरूप क्या होगा? मैं ऐसा मानती हूँ प्राथमिक कक्षाओं में व्यावसायिक शिक्षा लाना बिल्कुल गलत है। इसे 15-17 साल की शिक्षा के बाद देना चाहिए। आरंभिक कक्षाओं में समवाय के स्थान पर व्यावसायिक शिक्षा को देना बच्चों के समग्र विकास के स्थान पर उन्हें श्रमिक बनाने की ओर ढकेलता है। हमें उन्हें केवल कुशलता नहीं देना है

यह भी ध्यान रखना है कि बच्चों में विश्लेषणात्मक सोच होनी चाहिए, सामाजिक आयामों की समझ आनी चाहिए। आलोचनात्मक चिंतक के रूप में बच्चा विकसित होना चाहिए।

प्रश्न : जब भी नई तालीम के बारे में लिखा जाता है तो इसकी एक रोमांटिक दुनिया को सामने रखा जाता है कि बच्चे खेत में काम कर रहे हैं, वे आनंदित हैं आदि। नई तालीम की शिक्षण पद्धति में दिखने वाली रोमांटिक दुनिया और समग्र विकास का जो लक्ष्य है इसके फर्क को कैसे समझा जाए?

उत्तर : मुझे ऐसा लगता है कि इसको रोमांटिसिज्म के हिसाब से नहीं देखना चाहिए बल्कि एक अपरिहार्य प्रयास की तरह ज़रुर देखना चाहिए। नई तालीम क्या है? नई तालीम का लक्ष्य और हमारी ज़िंदगी का लक्ष्य समान है। हम अपने विकास को कैसे देखते हैं? हमारे ज़िंदगी में, हमारे बच्चों की ज़िंदगी में क्या चीज़ें आनी चाहिए? अगर इसके बारे में गहराई से सोचेंगे तो हमें लगता है कि पूर्णरूप से समानता, अहिंसा और न्याय-आधारित समाज को हम अपने बच्चों के लिए आदर्श मानेंगे। उदाहरण के लिए हर अभिभावक चाहता है कि उसका बच्चा अपने ज्ञानेन्द्रियों का सृजनात्मक तरीक़े से इस्तेमाल करना सीखे। हर अभिभावक चाहता है बच्चे के भाव और संज्ञान का विकास हो। हर अभिभावक चाहता है कि बच्चे संवेदनशील बनें। इसके आधार पर नई तालीम को समझना है। यह कोई उपभोग की वस्तु मात्र नहीं है। इसमें सहकार और सहजीवन है। सृजनशील नई तालीम एकदम आसानी से आ जाने वाली शिक्षा नहीं है। इसके लिए शिक्षक को गढ़ना होता है, उसे क्रिएटिव बनाना पड़ता है। यदि नई तालीम भी ढर्रे वाली शिक्षा बन जाए तो हम चीज़ें दोहराएंगे नया नहीं कर पाएंगे। इसमें बच्चे और शिक्षक के बहुत ज्यादा क्रिएटिव होने की संभावना है।

प्रश्न : प्रायः कहा जाता है कि आर्थिक और वैश्वीकृत दुनिया में हम सभी एक ही मॉडल में ढलते जा रहे हैं। ऐसे समय में हमारी शिक्षा और जीवन के संदर्भ में नई तालीम और गाँधी की प्रासंगिकता को आप कैसे देखती हैं?

उत्तर : आप ठीक कह रहे हैं। आज की दुनिया में हम सभी उत्पाद और उपभोक्ता बनते जा रहे हैं। हमारा खुद के जीवन से नियंत्रण समाप्त होता जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन ही हमारे लिए अंतिम सत्य बन चुका है। इन परिस्थितियों में ऐसा लगता है कि हमारे पास कोई चुनाव ही नहीं बचा है। सत्ता और पूँजी केन्द्रित होती जा रही है। इन परिस्थितियों में आम आदमी फँस चुका है। उसे इस बात का बोध है कि वह सोचने वाला इंसान है लेकिन उसकी सोच कैसे दूसरों से नियंत्रित होती जा रही है इसका विवेक आवश्यक है। हमें ध्यान रखना ज़रूरी है कि हम सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। प्रकृति और इंसानों का हित अलग-अलग नहीं है। इन रिश्तों में जब हम संतुलन खोते हैं तो एक तरह से हम खुद को भी नष्ट करते हैं। हमें प्रत्यक्षतः खुद का विनाश नहीं दिखता लेकिन वह हो रहा होता है। इन परिस्थितियों में अलग दिशा लेनी पड़ेगी जो हमें उपभोग प्रधानता से हटाकर विवेक दे कि ज़रूरत क्या है और लालच क्या है? हम रिश्तों को बेहतर बनाने के तरीके ढूँढ़ सकें। हम खुद से परे दूसरों की खुशियों में आनंद ले सकें। हम मानें कि दुनिया अधिकार करने की वस्तु नहीं है बल्कि हमें इसे बेहतर बनाना है। हमें दूसरों को नियंत्रित करने के स्थान पर उन्हें निखारने में मदद करें। अगर हम यह सब कर पाते हैं तो जीवन निश्चित रूप से सुंदर बनेगा। यही गाँधी और नई तालीम का तत्व है। आज की परिस्थितियों के हिसाब से सबके हित का चिंतन करते हुए सत्य की खोज़ और रक्षा का क्रम जारी रखें। इससे हम एक बेहतर दिशा में बढ़ेंगे। ◆

ऋषभ कुमार मिश्र : सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा।
संपर्क : 7057392903; rishabhrkm@gmail.com

सुषमा शर्मा : आनंद निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम की संचालिका हैं। इनके पास अनौपचारिक शिक्षा व महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में वृहद् अनुभव है। इनके नेतृत्व में आनंद निकेतन विद्यालय नई तालीम के सिद्धांतों पर आधारित प्रयोगों को साकार कर रहा है।
संपर्क : sushama.anwda@gmail.com

तालाबंदी के दौरान आनंद निकेतन के शैक्षिक प्रयास

शरद एस. ताकसाडे और तृप्ति कोकाटे

नई तालीम के दर्शन पर आधारित आनंद निकेतन विद्यालय को प्रयोगवादी विद्यालय के रूप में पहचान मिली। बच्चों के सर्वांगीण विकास में किताबी ज्ञान ही उपयोगी न होकर, प्रत्यक्ष रूप से काम या कर्म के माध्यम से दैनिक जीवन के अनुभवों का भी महत्व है। यह नई तालीम की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है, यह विचार ज्ञान रचनावाद के रूप में हमारे सम्मुख है। यही उद्देश्य रखते हुए आनंद निकेतन विद्यालय पिछले 15 सालों से कार्यरत है। प्रारंभ में अभिभावक वर्ग अपने बच्चों को भेजना नहीं चाहते थे, क्योंकि यहाँ बागबानी, कताई, सिलाई, भोजन बनाना, विशेषतः सफाई कराई जाती है, जिसके उपरान्त बच्चों को अध्ययन का समय नहीं मिल पाएगा और उनका पाठ्यक्रम भी पूरा नहीं हो पाएगा ऐसी उनकी चिंता थी। तब अभिभावकों से संवाद कर के उन्हें यह समझाने का प्रयास किया गया कि दैनिक जीवन के अनुभव एवं प्रत्यक्ष काम के माध्यम से पाठ्यक्रम के अंतर्गत आने वाली क्षमता एवं संकल्पनाएं विद्यार्थी अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। इस कार्य में विद्यालय की संचालिका सुषमा शर्मा जी एवं शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही और उसमें उन्हें काफ़ी हद तक सफलता भी प्राप्त हुई है। 2005 में नई तालीम शिक्षा पद्धति की यात्रा की पुनः शुरुआत आनंद निकेतन विद्यालय के माध्यम से हुई है। आज लगभग 300 विद्यार्थी यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इस विद्यालय के विद्यार्थी ऐसे परिवारों से आते हैं जो कमजोर आर्थिक परिस्थिति के हैं और कुछ हद तक घरों में शैक्षणिक वातावरण का अभाव है। कुछ बच्चे ऐसे भी है जिनका पालन-पोषण एकल अभिभावक करते हैं। ज़्यादातर परिवार दैनिक मज़दूरी से अपना घर चलाते हैं। इस तबके के परिवार रियायती शुल्क देने में भी कई बार असमर्थ होते हैं। तभी ऐसा समय आया जब मार्च माह के अंतिम समय में कोरोना का कहर टूटा; जिसने संपूर्ण विश्व की गतिविधियों पर प्रभाव डाला। जिसमें आवागमन के साधन, विविध संस्था, महाविद्यालय और विद्यालय भी बंद हो गए।

इस आकस्मिक परिवर्तन से जूझने के प्रयास में हमने ऑनलाइन शिक्षण के विकल्प को जाँचा। तब तकनीकी ज्ञान का प्रयोग करके हमने वाट्सअप ग्रुप बनाए और संवाद रूप से शैक्षणिक प्रक्रिया को शुरू करने का प्रयास किया गया। परन्तु इस प्रयास में सिर्फ 30 प्रतिशत विद्यार्थी तक पहुँचा जा सका। बहुत से अभिभावकों के पास स्मार्ट फोन नहीं थे और जिनके पास थे तो रिचार्ज के लिए उनके पास पैसे नहीं थे। हमने यह महसूस किया कि ऐसी स्थिति में मोबाइल फोन रिचार्ज करना उनकी प्राथमिकताओं की सूची में बहुत देरी से आएगा।

अब विद्यालय के समक्ष एक चुनौती थी कि 70 प्रतिशत विद्यार्थी तक कैसे पहुँचा जाए? तब विद्यालय के शिक्षकों ने अभिभावकों के घर जाकर उनसे मुलाकात की और परिस्थितियों को जानने की कोशिश की। इस कोरोना काल में अनेक ऐसे अभिभावक थे, जिनका काम-काज बंद हो चुका था। उनकी आर्थिक

परिस्थितियाँ काफ़ी दयनीय थी। ऐसे समय में अनेक सेवाभावी संस्थाओं के माध्यम से इन लोगों तक अनाज एवं जीवनापयोगी वस्तुओं को पहुँचाने में हमारे विद्यालय के शिक्षकों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

जब जून महीने में लॉकडाउन में ढील दी गई तब इन परिवारों की स्थिति में सुधार होने लगा और दैनिक जीवन की आवश्यकताओं का तालमेल कुछ हद तक बैठने लगा। बड़ों के साथ बच्चे भी सोचने लगे कि कौनसी चीजें अत्यावश्यक हैं, कहाँ-कहाँ खर्चा घटा सकते हैं। पहले जहाँ हम लोग 30 प्रतिशत विद्यार्थी तक पहुँच रहे थे अब वह आँकड़ा घटकर 20 प्रतिशत पर आ चुका था, क्योंकि अभिभावक अब काम पर जाने लगे थे। फोन अभिभावकों के पास होने के कारण वाट्सअप के माध्यम से बच्चों तक पहुँचने में कठिनाई दिख रही थी। हमें ऑनलाइन शिक्षण की सीमाओं का भी एहसास होने लगा। हमने यह देखा कि केवल एक प्रकार के शिक्षण को प्राथमिकता देने के कारण वर्ग में निहित असमानता कैसे गहराती है।

अतः नया शैक्षणिक सत्र प्रारंभ होने के उपरांत भी कोरोना का कहर होने की वजह से सभी शैक्षणिक संस्थाओं को न खोलने का सरकार का आदेश था। मैं गणित एवं विज्ञान का शिक्षक हूँ, और इन विषयों की अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया वर्चुअल (virtual) माध्यम से कैसे की जाए, यह मेरे लिए एक बड़ी चुनौती थी। तब शिक्षक सभा में विचार विमर्श किया गया।

नई तालीम शिक्षण पद्धति यह मानती है कि प्रत्यक्ष काम के माध्यम से बच्चों को जो अनुभव एवं ज्ञान प्राप्त होता है वही सही शिक्षा है। ऐसे भी बच्चों के सर्वांगीण विकास का अर्थ ही है बालकों का मानसिक, भावनात्मक व शरीरिक विकास। इसी संवाद के बाद हमने तय किया कि इस परिस्थिति को नई तालीम के दृष्टिकोण से देखते हुए अलग व्यवस्था का निर्माण करना होगा। हमने निर्णय लिया कि चार दीवारी के अंदर ही शिक्षा न लेकर प्रकृति से भी हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। यहाँ पर मुझे मराठी लेखक गदिमा (गदी माडगुळकर जी) की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं-

''बिन भिंतीची उघडी शाळा, लाखों इथले गुरू।
झाडे वेळी, पशु, पाखरे, यांशी गोष्टी करु।
बघू बंगला या मुंग्यांचा, सुर ऐकूया या भुग्यांचा।
फुला फुलांचे रंग दाखवीत, उड़ते फुलपाखरू।''

इन पक्तियों के माध्यम से कवि हमें प्रेरित करते है कि हम प्रकृति के घटकों को भी शिक्षा का साधन बना सकते हैं, उसमें सुंदरता है, उसमें ज्ञान है।

करोना के कारण कई परिवारों में आर्थिक तंगी महसूस हो रही थी। इस परिस्थिति को बच्चे समझ रहे थे और उन्हें भी इस समस्या से बाहर निकलने के प्रयासों में सहयोग करना था। इसे ध्यान में रखते हुए शिक्षकों ने सोचा के बच्चों को घर में बागबानी करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अगर घर में उगी हुई विष मुक्त सब्जियाँ खाने लगे तो स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

उसी के साथ शिक्षकों ने समझा कि लॉक डाउन के दौरान घर की महिलाओं पर काम का भार बढ़ गया है। भले ही बाहर काम बंद हो गया हो, लेकिन परिवार को खिलाना, घर की सफाई, कपड़ों की धुलाई इत्यादि काम तो निरंतर चलते रहते हैं और घर के पुरुष सदस्य घर में रहते हुए भी इन कामों में सहयोग नहीं करते हैं। इस अन्याय का भी हमें किसी ढंग से सामना करना था। इसीलिए हमने रसोई से संबंधित प्रकल्पों का भी समावेश हमारे उपक्रम में किया।

अतः सभी शिक्षकों की सहमति से यह तय हुआ कि बागवानी और रसोई से संबंधित कार्य दिया जाए। इन प्रकल्पों का संकलन कर के प्रिंट आउट के रूप में बच्चों को दिया जाए। इन प्रकल्पों को पूर्ण करने के लिए उन्हें एक हफ़्ता देने का नियोजन किया। बच्चों को अगर कोई कठिनाई आती है तो वह फोन पर शिक्षकों से समझ सकते हैं। इसके बाद भी कुछ शिक्षक घर पर मिलकर उनका सही मार्गदर्शन करते हैं। इन कामों को एक-एक हफ़्ते की कालावधि में देने के लिए विभाजित किया गया है, परन्तु इन सब में शिक्षकों के प्रयास के साथ-साथ अभिभावकों का सहयोग आवश्यक था, जिसके लिए अभिभावकों की एक सभा बुलाई गई, जिसमें सभी बच्चे स्वयं प्रेरित होकर यह कार्य करें एवं दैनिक जीवन के माध्यम से भी हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं यह सोच उनकी होनी चाहिए।

बागबानी और रसोई ऐसे कार्य हैं, जिनसे सीखने के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। इनके माध्यम से भाषा, गणित, विज्ञान आदि विषयों की क्षमता विकसित करने का प्रयास किया जा सकता है। रसोई घर एक अनोखी प्रोयगशाला है जिसमें हमारी माताएं वैज्ञानिक हैं, जो इस लॉक डाउन के काल में बच्चों को देखने को मिला। इन प्रकल्पों में माता-पिता व बच्चों का सवांद हुआ और आपसी तालमेल के साथ घर के कामों में बच्चों की मदद होने लगी। इन प्रकल्पों के द्वारा बच्चों ने अपने ही घर में रोज़-रोज़ होने वाले कार्यों को गहराई से समझा, जैसे सब्जी में तड़का और अचार बनाने के प्रक्रिया इत्यादि। गणित के माध्यम से उन्होंने अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए लगने वाले आर्थिक ज़रूरत को समझा। एक दिन के राशन की ज़रूरतों का आलेख बनाते हुए महीने की ज़रूरतों का अनुमान

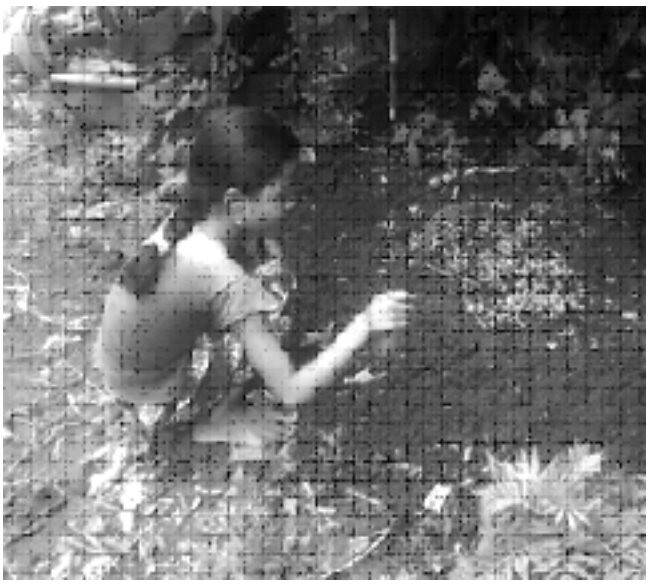

लगाना, उसके लिए लगने वाले ख़र्च का अनुमान लगाना और घर के उत्पादन से तुलना करना। इस के वज़ह से घर में कई महत्वपूर्ण संवाद होने लगे। बच्चों को अपने अभिभावकों की मेहनत का अंदाज़ा आने लगा। उनके विचार-पत्र के माध्यम से वह लिखने लगे। उनकी समझ को बढ़ावा देने के लिए भाषा शिक्षकों ने उन्हें अलग-अलग लेख दिए।

10-13 की उम्र में बच्चे साधारण रूप से अलग-अलग विषयों में जो क्षमता विकसित करते हैं, उन में से कई सारी क्षमताएँ हम इन उपक्रमों के द्वारा विकसित करने कि कोशिश कर रहे हैं। इसके अलावा हम बच्चों को उनके परिसर के सामाजिक संदर्भों से भी जोड़ते हैं। जब हमारे गाँव में रास्ते की चौड़ाई बढ़ाने के कारण पुराने वृक्षों को काटने लगे, तब हमारे शिक्षक इस विनाश के ख़िलाफ जन जागृति करने लगे। उस हफ़्ते के हमारे काम में भी इसी कार्य का प्रतिबिंब था। वृक्षों का वैज्ञानिक, भावनात्मक महत्व, चिपको आन्दोलन का इतिहास, कविताएं इत्यादि इस काम में प्रस्तुत हुए।

इस तरह काम के द्वारा शिक्षकों और बच्चों के बीच संवाद जारी है। ज़ाहिर है कि यह उपक्रम सरलता से आगे नहीं बढ़ता है। अलग-अलग बच्चों के विविध प्रकार की मुश्किलें हैं। कोई विद्यालय में काम लेने नहीं आ पाता, किसी को इन प्रकल्पों में मन नहीं लगता, किसी को इस तरह का काम कठिन लगता है। इन सब मुश्किलों को समझने के लिए शिक्षक बच्चों और अभिभावकों से नियमित तौर पर संवाद करते रहते हैं और उन्हें विविध तरीकों से सुलझाने का प्रयत्न करते हैं।

इस अनुभव से हम सब सीख रहे हैं और इस कठिन दौर में बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इस प्रकोप की उग्रता ने हमें बहुत कुछ महत्वपूर्ण अहसास दिलाए हैं। उनमें सबसे तीव्रता से हमें महसूस हुआ कि वास्तव में सीखने लायक क्या है और क्या नहीं, इस पर पुनर्विचार होना ज़रूरी है। किताबी संकल्पनाओं और क्षमताओं को प्राथमिकता देते-देते बच्चे स्वयं प्रेरित शिक्षण से हट गए हैं। सामाजिक संदर्भों को समझना, उनमें अपना स्थान खोजना और बेहतर समाज की लड़ाई में जुड़ना। क्या यह शिक्षण ज़रूरी नहीं है? ◆

शरद एस. : आनंद निकेतन विद्यालय में गणित और विज्ञान के शिक्षक हैं। वह शौक से बागवानी करते हैं।
संपर्क : sharadanandniketan@gmail.com

तृप्ति कोकाटे : विद्यालय में हिंदी की शिक्षिका हैं। उन्हें कहानी के माध्यम से भाषा पढ़ाने में ख़ास रुचि है।
संपर्क : triptikokate1976@gmail.com

शिक्षा विमर्श के चर्चित विशेषांक

उपहार में दें

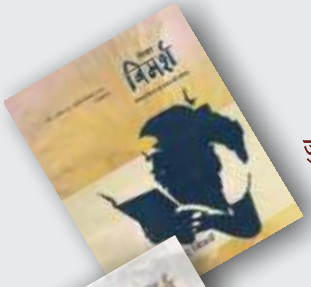

बाल साहित्य विशेषांक
जुलाई-दिसम्बर, 2005 (संयुक्तांक)
पृष्ठ-196
मूल्य : 100 रुपये

हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य की स्थिति और चुनौतियों पर साहित्य एवं शिक्षा जगत से जुड़े चिन्तकों के आलेख। प्रेमचन्द, सुभाष गाताड़े, स्वयं प्रकाश, नंदिनी चंद्रा, प्रकाश मनु, पंकज बिष्ट, क्षमा शर्मा, संध्या राव, जॉन हॉल्ट, वसीली सुखोम्लीन्स्की, गिजु भाई आदि के लेख एवं बाल साहित्य पर कृष्ण कुमार से बातचीत।

इतिहास शिक्षण विशेषांक
नवम्बर-दिसम्बर, 2008
पृष्ठ-76
मूल्य : 50 रुपये

स्कूली शिक्षा में इतिहास शिक्षण के उद्देश्य, इतिहास के प्रति नज़रिया और शिक्षण के तरीक़ों पर केन्द्रित अंक।

जॉन डिवी, पीटर एन. स्टर्न, आदित्य सरकार इत्यादि के लेख और नन्दकिशोर आचार्य एवं सी. एन. सुब्रमह्मण्यम के साक्षात्कार।

शिक्षा के अधिकार पर
केन्द्रित विशेषांक
नवम्बर-दिसम्बर, 2009
पृष्ठ-62
मूल्य : 60 रुपये

शिक्षा के अधिकार कानून के विभिन्न पहलुओं पर भारत के जाने-माने शिक्षाविदों के लेख एवं साक्षात्कार।

विनोद रैना, पद्मा एम. सारंगपाणि, ए. के. जलालुद्दीन, अनिल सद्गोपाल इत्यादि के लेख और कृष्ण कुमार एवं शान्ता सिन्हा के साक्षात्कार।

शिक्षा का समाजशास्त्र-II
शिक्षा और सामाजिक स्तरीकरण
मार्च-जून, 2010 (संयुक्तांक)
पृष्ठ-148
मूल्य : 150 रुपये

शिक्षा और समाज के संबंध पर अद्यतन समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों पर गंभीर एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री।

सुमा चिटनिस, नन्दिनी भट्टाचारजी, कृष्ण कुमार, थॉमस ई. वाइसकॉप्फ, सतीश देशपांडे और योगेन्द्र यादव, टॅलकॉट पार्सन्स, रंडॉल कॉलिन्स, जॉन यू. ऑगबू, पीयरे बोर्द्यू इत्यादि के लेख।

शैक्षिक मूल्यांकन विशेषांक
मई-जून 2015
पृष्ठ-148
इस अंक का मूल्य
व्यक्तिगत : 150 रुपये
संस्थागत : 200 रुपये

शैक्षिक मूल्यांकन पर केन्द्रित यह विशेषांक मूल्यांकन संबंधी बहस को सही परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करता है। यह अंक तीन खण्डों में बंटा हुआ है। पहला ''परिप्रेक्ष्य में रूझान'', दूसरा ''सोच की दिशा'' और तीसरा ''जमीनी अनुभव''।

राजाराम भादू, दिशा नवानी, जैकब थारू, हृदयकांत दीवान, रोहित धनकर, कमला वी. मुकुंदा, कमलानंद झा, सुशील जोशी आदि के लेख एवं कृष्ण कुमार से बातचीत।

नोट : पुराने अंक मंगवाने के लिए कुल राशि का 20 प्रतिशत पैकेजिंग व पोस्टेज व्यय (न्यूनतम 100 रुपये) अतिरिक्त लगेगा।

मंगवाने के लिए संपर्क करें

ख्यालीराम स्वामी (प्रसार व प्रकाशन प्रबंधक)
शिक्षा विमर्श, दिगन्तर, टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड,
जगतपुरा, जयपुर-302017; फोन : 0141-2750310, 9214181380
वेबसाइट : www.digantar.org, ई मेल : shikshavimarsh@digantar.org

R.N.I.No.RAJHIN/1999/0359 शिक्षा विमर्श

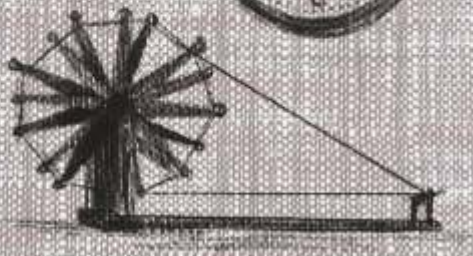

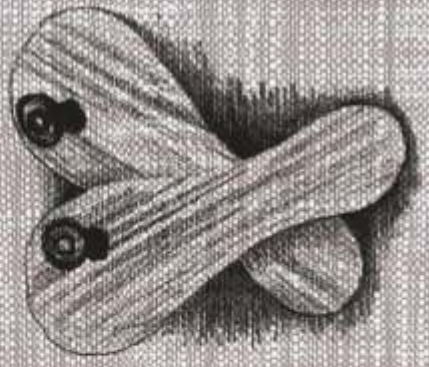

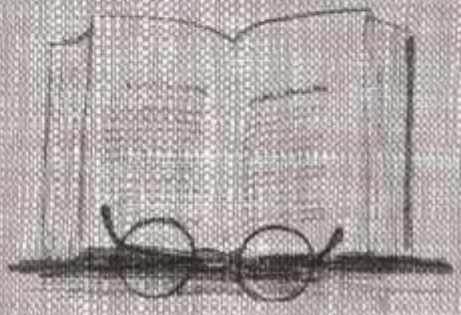

दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति, जयपुर के लिए सुश्री रीना दास द्वारा भालोटिया प्रिंटर्स, 1/398, पारीक कॉलेज रोड, जयपुर-302006 से मुद्रित एवं दिगन्तर, खो नागोरियान रोड, जगतपुरा, जयपुर-302017 से प्रकाशित